सच्चा अज़ादार

लेखक

मौहम्मद शुजाई

अनुवाद

सै0 कौसर मुजतबा नक़वी

प्रकाशक

खानए फरहंग जमूहरी इसलामी ईरान

नई दिल्ली

किताब का नाम – अज़ादारे हक़ीक़ी (फ़ारसी)

लेखक – मौहम्मद शुजाई (ईरान)

अनुवाद – सच्चा अज़ादार (हिन्दी)

अनुवादक – मौलाना कौसर मुजतबा

कम्पयूटर टाईपिंग – जाफ़री कम्पयूटर्स

प्रकाशक

खानए फरहंग जमूहरी इसलामी ईरान

नई दिल्ली

भूमिका

बेहद अहम मौजूआत में से एक ख़ास मौजू मासूमीन की पाकीज़ा क़बरों व औलयाएदीन के मज़ारों की ज़ियारत है या उनकी शहादत की तारीख़ों में सोगवारी और उनकी विलादत की तारीख़ों में ख़ुशी व महफ़िल और जो भी दिन तारीख़ उनसे मनसूब है ख़ास तौर से सय्यदुश्शुहदा इमाम हुसैन की कि जिनकी अज़मत इस्लामी दायरे में ही अज़ीम नहीं बल्कि दुनिया की तमाम क़ौमें उनको इज़्ज़त की आला मन्ज़िल पर जानती हैं। आयतों व रिवायतों से पता चलता है कि अल्लाह की नज़र में मौहम्मद व आले मौहम्मद से ज़्यादा महबूब न कोई मख़लूक थी और न होगी। वह सब एक ही नूर हैं जिनकी एक ही हक़ीकत है उसके बावजूद हज़रते इमामे हुसैन की ज़िम्मेदारी उस वक़्त के हालात के ऐतबार से कुछ अलग तरीक़े पर थी ख़ासतौर से जिस ज़िम्मेदारी को अल्लाह ने आपके सुपुर्द किया था और उसमें ख़ास उजाला व नूर रखा उसी नूर की वजह से सारे इन्सानों और ख़ासकर मोमेनीन के दिल रौशन होते हैं।

इन्ही वजहों से इमाम हुसैन (अ.स.) का ख़ास मरतबा और उनकी अज़ादारी से लोगों को सीधे रास्ते की हिदायत मिलती है। अल्लाह ने चाहा कि क़यामत तक आपकी और आपकी क़ुरबानी की याद बाक़ी रहे और दुनिया के हर कोने में हर क़ौम आपकी अज़ादारी बरपा करे। दुनिया की सारी जातियां अपनी भिन्नता के बाद भी इमाम हुसैन की शख़्सियत को सम्मानित और लोकप्रिय मानती है और इस हक़ीक़त

को बेहतर ढंग से समझने के लिए मोर्हरम व सफ़र में मजलिसों के बेशुमार प्रोग्राम को देखा जा सकता है कि देश विदेश बल्कि दुनिया के सभी देशों में अलग अलग मज़हब के लोग किस क़दर अज़ादारी करते है क्यूंकि इन्सानों में इमाम हुसैन (अ.स.) जैसी कोई दूसरी शख़्सियत नज़र नहीं आती कि जिसको तमाम क़ौमों के मानने वाले याद करते हों और उनकी अज़ादारी करते हों।

इमाम हुसैन (अ.स.) की अज़ादारी से ज़्यादा मज़हबे इस्लाम की सुरक्षा और उसको दुश्मनों के आतंक से बचाने या उसको बढ़ावा देने के लिए कोई दूसरा काम था न है या दूसरी तरह यूँ कहा जाए कि इन मजलिसों को दीन के बाक़ी रखने और रूहे दीन व दीनदारी का बहुत अहम वसीला और ज़रिया समझना चाहिए। इसीलिए आग़ा ख़ुमैनी साहब ने क्या अच्छा कहा है –

''इमाम हुसैन (अ.स.) ने इस्लाम को निजात दी और हमें चाहिए कि उस शख़्स पर रोज़ाना रोयें कि जिसने इस्लाम को निजात दी कि वह क़ुर्बान हो गया लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम रोज़ाना मिम्बर पर जाकर इस मिशन की हिफ़ाज़त करें मोहर्रम व सफ़र जो इस्लाम को ज़िन्दा रखे हुए हैं ये इमाम हुसैन (अ.स.) की फ़िदाकारी है कि जिसकी वजह से इस्लाम हमारे लिए ज़िन्दा है।'' (सहीफ़ए नूर, जिल्द 8/पेज 69)

ईरान और दूसरे मुल्कों में हर साल करोड़ों मुसलमान व गैर मुस्लिम अपने अरबों रूपये और अरबों घंटे केवल इसी अज़ादारी के लिये ख़र्च करते हैं, लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि अज़ादारी एक लम्बे अरसे से अपनी अहमियत और इस्लामी तहज़ीब के बावजूद कुछ

ख़तरों और ख़राबियों से दो चार हो रही है जिससे उसका मक़सद ख़त्म हो रहा है।

इन्ही आफ़तों की वजह से अज़ादारी की तरक़्क़ी और उसका अनोखा होना सामने नहीं आ रहा है या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाए कि मजालिस बरपा करने वालों को वह पाकीज़ा असरात नज़र नहीं आ रहे जो अल्लाह और औलियाए ख़ुदा ने इन मजलिसों से हासिल होने के लिए फ़रमाए थे। सय्यदुश्शुहदा के क़याम के ख़ास मक़सदों के मुताबिक़ सही अज़ादारी की इस्लाही कुदरत इस क़दर ज़्यादा है कि अगर अज़ादारे हुसैनी इस कुदरतमन्द वसीले से सही तरीक़े पर फ़ायदा हासिल करते और इन तमाम ख़राबियों को इसमें शामिल होने से रोकते तो इस्लामी समाज, व दुनियाए इस्लाम पूरी तरह कामयाबी पाते जबकि आज पस्ती व नाकामी से दो चार हैं।

अगर सभी शिया पैग़ामाते आशूरा पर ख़ास तवज्जो करते और उसे अच्छी तरह अपने लिये आइडियल बनाते तो आज वह दुनियावी और रूहानी एतबार से तरक्की वाले समाज में बदल गए होते और इन सभी मुश्किलों और मुख़तलिफ़ परेशानियों से इस्लामी समाज दो चार न होता।

अगर आशूरा के पैग़ाम को सही तरीक़े से हासिल किया जाता और अज़ादारी व सोगवारी का क़ाफ़ला उसी सिम्त जाता जो मासूमीन की मर्ज़ी के मुताबिक़ था तो हम इन्क़ेलाबे इस्लामी के इतने अरसे बाद भी इन ख़राबियों, फ़साद, फ़क़्र व पिछड़ेपन के शिकार न होते। अगर सोगवारी में दरसे करबला पर ध्यान दिया जाता तो हमारी हुकूमत का ख़ज़ाना मुख़तलिफ़ बुराईयों और इख़तेलाफ़ में ख़र्च न

होता और इस्लाम के दुश्मनों को अपनी तहज़ीब के राइज करने में इस तरह कामयाबी न मिलती।

दुनिया की किसी क़ौम या मज़हब के पास इन्सानी तरक़्क़ी व नेकी का इतना मज़बूत वसीला नहीं है मगर अफ़सोस कि इस्लामी समाज इतने अच्छे वसीले से बख़ूबी फ़ायदा हासिल न कर सका। अफ़सोस कि इतनी अज़ीम पूंजी से इस्लाम के नसीब और मुसलमानों व इमाम हुसैन (अ.स.) के असल मक़सदे क़याम (जंग) को बहुत कम फ़ायदा हो रहा है।

दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि एहलेबैत ने जिन अहम और अज़ादारी के असली मक़ासिद के लिये अज़ा और मजालिस की बुनियाद रखी इसके लिये ध्यान दिलाया और ताकीद की, आज अरबों घंटे और अरबों रूपये ख़र्च करने के बाद भी उन मक़ासिद का एक मामूली हिस्सा हो रहा है।

इस्लामी समाज को इस ज़माने से ज़्यादा किसी ज़माने में भी इस अज़ीम कुदरत से फ़ायदा उठाने और मजालिस बरपा करके मासूमीन के दरसे हिदायत और आशूरा के पैग़ामात से फ़ायदा हासिल करने की मौहताजी नहीं हुई लेखक ने 1990 से अज़ादारी का फ़लसफ़ा बयान करने के लिये मुख़तलिफ़ जलसों में तक़रीरें की हैं और ज़ियारते आशूरा की शरह भी बयान की इसलिये कि इस्लामी समाज अभी तक भी इस अज़ीम वसीले से दीन के मुक़द्दस मक़ासिद के हासिल करने और दुश्मनों से मुक़ाबले में काफ़ी और ज़रूरी फ़ायदा नहीं हासिल कर सका है जिससे मुझे रंज होता है।

मैं हमेशा इसी सोच में रहता था कि शायद अज़ादारी की अज़मतो मंज़िलत पर एक तफ़सीली किताब लिखी जाय तो वह इसके इसलाही, समाजी और ख़ास तौर से इरफ़ानी व तौहीदी असरात में मुफ़ीद साबित हो लेकिन मेरी बेपनाह मस्रूफ़ियत इस काम में बाधा बनी रही हांलांकि ज़ियारते आशूरा की शरह पर इस सिलसिले में बहुत ही कम लिखा गया है। और मैं इस सोच में रहा कि इस वक़्त इस बड़े और तफ़सीली काम के लिए हालात और तौफ़ीक़ात नहीं हैं। लिहाज़ा बेहतर है कि एक मामूली किताब लिखकर लोगों और ख़ानदाने वही के चाहने वालों ख़ास तौर से सैय्यदुश्शुहदा के चाहने वालों को पेश कर दूँ ताकि एक मामूली काम इस अच्छे रास्ते के लिए तैयार हो और इन नूरानी मजलिसों से बेहतर से बेहतर फ़ायदा हो और मैं मौला अली की इस नूरानी फ़रमाइश पर चल सकूं– ''जब वह न हो जिसे तुम चाहते हो तो जो हो उसी को चाहो''।

उम्मीद है कि ख़ुदा इसको भी पूरा करने की तौफ़ीक़ अता करेगा।

इस किताब में पाँच मरहले हैं एक सच्चे अज़ादार के लिए एक वसीला होने की तरह से रोना और अज़ादारी से उसका ताल्लुक़, इसी तरह अज़ादारी के लिए ख़तरे जो इस ज़माने में पैदा हुए हैं इन सब बातों पर थोड़ी थोड़ी रोशनी डाली गयी है। इसी तरह तहक़ीक़ी तौर से इमाम हुसैन (अ.स.) की अज़ादारी व मजलिस से बेहतरीन फ़ायदों को देखा गया है और इन मजालिस से अहम मक़सद के हासिल होने पर भी नजऱ रखी गई है।

और इसी तरह ऐहलेबैत की मुसीबतों की वज़ाहत और उनमें से हमारी ज़िम्मेदारियां क्या हैं, बताई गयी हैं इन्शा अल्लाह ख़ुदा की बारगाह

और ऐहलेबैत के नज़दीक ये किताब मक़बूल होगी और पढ़ने वालों के लिए भी फ़ायदेमंद।

आख़िर में ज़रूरी समझता हूँ कि अपनी जौज़ा (बीवी) कि जिन्होंने मेरी दूसरी किताबों की तरह इस किताब के तैय्यार करने में भी परेशानी उठाई और मेरे भाई जनाब रज़ा क़रीबी, मेरी बहनों में नजमा सादात मशहदी, ज़हरा बरारी व मरयम जवादियान जिन्होंने मेरी इस किताब को तैय्यार करने में मेरी मदद की मैं इन सभी का दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करता हूँ।

आशा है कि ये किताब हिन्दी अनुवाद के बाद दुनिया के तमाम मुसलमानों और मुहिब्बाने अहलेबैत विशेषतषा बर्रे सगीर से संबध रखने वाले आले रसूल (स0) के अकीदतमंदों के लिए लाभदायक हेगी। इसके लिए मैं हिंदी के अनुवादक श्री सैयद कौसर मुजतबा नकवी को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही साथ आदरणीय श्री डा0 करीम नजफी कल्चरल काउंसलर, ज–9, ईरान (नई दिल्ली) का शुक्रगुजार हूँजिनकी कोशिशों से हिंदी का संस्करण प्रकासित हुआ। अल्हमदोलिल्लाहे रब्बिल आलमीन

मौहम्मद शुजाई

कुम ईरान

भाग – 1

अज़ादारी क्या है?	10
अज़ादारी ज़रूरी होने पर क़ुरान की दलीलें	10
ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम (इज़्ज़त)	13
एहलेबैत से मौहब्बत वाजिब है	14
मासूमीन का अलग अलग अज़ादारी का तरीक़ा	16
शहादत से पहले अज़ादारी	16
शहादत के बाद अज़ादारी	16
अज़ादारी के लिये पूँजी अलग करना	17
अज़ादारी का सवाब बताकर उसको बढ़ावा देना	18
अज़ादारी का सवाब अल्लामा तबातबाई की नज़र मे	28
एक ग़लत सोच का जवाब	
(रोना गुनाहों की छूट नहीं देता)	28
(अ) रोने के नतीजे	29
(ब) पैरवी और ख़ुदा का डर मौहब्बत के लिए ज़रूरी	30
मुसीबते अज़ीम (बड़ी मुसीबत) के लिए इमामे	
ज़माना (अ.स.) का नज़रया	38

अज़ादारी क्या है ?

अज़ादारी याद करने और बताने से बनी लेकिन उसको याद करना जो किसी मुसीबत में घिरा हो या ऐसे को याद करना जो किसी दुर्घटना का जानते हुए या अनजानी का शिकार हो गया हो जैसे क़त्ल आदि और दुनिया से चला गया हो इसमें भी कोई शक नहीं कि इन्सान प्राकृतिक रुप से ही भूल चूक का शिकार होता है यहाँ तक कि जो उसके लिए फ़ायदा रखती है वह उनको भी भुला देता है ऐसे में अगर उसे उसी वक़्त में वह चीज़ याद दिला दी जाय तो वह बरबादी और मृत्यु से बच सकता है और उन फ़ायदा देने वाली चीज़ों पर ध्यान करके वह फ़ायदा उठा सकता है दुनिया बनाने वाले का एक ख़ास क़ानून यह है कि हर चीज़ जो इन्सान के दुनिया व आख़रत में नेकी के लिए फ़ायदेमन्द व ज़रुरी है उससे बेपरवाही दुनिया और आख़रत के नुक़सान का कारण बनती है इसीलिए उसको किसी भी तरह से उस ख़ास चीज़ की तरफ़ ध्यान कराना और उसकी लापरवाही को दूर करना ज़रुरी है।

अज़ादारी का ज़रूरी होना कुरआनी दलीलों से

अल्लाह के दिनों की याद और उसके मानी – कुरआने करीम ने बार बार उनचीज़ों को कहा है कि जिनको ध्यान में रखने से इन्सान कामयाब हो जाता है वह बातें यह हैं : ख़ुदा और उसके नाम और अच्छाईयां, ख़ुदा की नेमतें, पैदा होने का कारण, आख़रत और हमेशगी, मौत, बरज़ख क़यामत, अपने

कामो की जाँच, जन्नतो दोज़ख, वाजिबो हराम, नबियो और इमामों के बारे मे हमारी जो ज़िम्मेदारी है शैतान और उसके साथी उसका धोका और इसी तरह की दूसरी बातें कि जिनके बारे में कुरआने करीम ने याद दिलाया है कि इन्सान इन चीज़ो के बारे में बेख़बरी का शिकार हो सकता है इसलिए उसे याद दिलाने कि ज़रुरत है क्यूँकि यह ख़ुदा की सुन्नत है जो कभी भी बदल नहीं सकती। वह कभी तो अलग अलग घटनाओ से इन्सान को याद दिलाता है तो कभी अपने नबियों से चाहता है कि वह इन्सान को वह बातें याद दिलाए और इन्सानो ही से चाहता है कि वह उन ज़रूरी बातों को याद करें और उनसे बेख़बर न रहें बल्कि इस से भी ज़्यादा यह है कि वह एक दूसरे को यह ज़रुरी बातें याद दिलाते रहें जैसे ख़ुदा ने नबियों को एक बात के याद दिलाने का हुक्म दिया ''अल्लाह के दिन'' यानि ख़ुदा के ख़ास दिन।

''और हमने मूसा को अपनी निशानियों (मोजिज़ात) के साथ भेजा कि (ए मूसा) अपनी क़ौम को अन्धेरे से नूर की तरफ़ निकाल कर लाओ और उन्हे ख़ुदा के दिनों की याद दिलाओ कि बे शक इन सभी सब्र करने और शुक्र करने वालों के लिए बहुत सी निशानियाँ पाई जाती हैं।'' (कुरान)

ज़ाहिर है कि ख़ुदा के दिनों कि याद दिलाना भी लोगों को अन्धेरे से निकालकर नूर की तरफ़ ले जाने का एक तरीक़ा है। अल्लामा तबातबाई ख़ुदा के दिनों के बारे में इस तरह कहते हैं –''इसमें कोई शक नहीं कि ''ख़ुदा के दिनों'' से कुछ ख़ास दिन मुराद हैं और उन

दिनों को ख़ुदा की याद से जोड़ना जबकि सारे दिन बल्कि दुनिया का पैदा करने वाला वही है यह इस वजह से है कि उन दिनों में इस तरह की बातें सामने आती है जिन से ख़ुदा की याद ताज़ा होती है और दूसरे दिनों में यह बाते नहीं होतीं तो यह साबित है कि ख़ुदा के दिनों से वह दिन मुराद हैं कि जिनमें उसका एक होना या उसकी आयतें और हुकूमत का पता चला या पता चलता है जैसे मौत का दिन कि उस दिन ख़ुदा की आख़रत की हुकूमत का भी पता चलता है और दुनिया की सारी चीज़ें उस दिन बेकार हो जाती हैं या जैसे क़यामत का दिन कि उस दिन कोई भी किसी चीज़ का मालिक नहीं रह जायेगा और कोई काम किसी के बस में न होगा सारा इख़्तेयार ख़ुदा के हाथ होगा या इसी तरह जैसे नूह, आद, और समूद की क़ौम पर अज़ाब आया इसी तरह के दिन वह दिन हैं कि जब ख़ुदा का अज़ाब उसका क़हर ज़ाहिर हुआ और ख़ुदा की इज़्ज़त सब ने देखी। यह भी मुमकिन है कि ख़ुदा की रहमतो नेमत वाले दिन भी उन्हीं दिनों में शामिल हों चाहे इन दिनों में ख़ुदा की नेमतें इस तरह प्रकट हुईं कि इस तरह किसी भी दिन नहीं मिलतीं जैसे वह दिन कि जनाबे नूह और उनके साथी कश्ती से बाहर आये और ख़ुदा के सलाम और बरकतों में शामिल हुए और जिस दिन इब्राहीम को आग से बचाया। क्यूँकि इन जैसे दूसरे दिनों का सम्बन्ध ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे से नहीं है बल्कि ख़ुदा के दिनों से ही नाता है जिस तरह हर उम्मत के दिनों को उनसे सम्बन्धित किया गया था जैसे अरबो के दिन–''ज़ीविक़ार दिन'' ''नज़्ज़ार दिवस'' ''बुग़ास दिवस'' आदि।

इसके बाद उन्होंने एक हदीसे रसूल लिखी कि हज़रत ने ख़ुदा के दिनों के बारे में फ़रमाया ''ख़ुदा के दिन उसकी नेमतें और बलाऐं हैं।'' मासूमीन की पैदाईश और शहादत की तारीख़ें भी यक़ीनन ख़ुदा के दिनों में शामिल हैं कि जिसमें उनको याद करने से इन्सान की कामयाबी और अन्धेरे से निकलकर नूर तक आने में मदद मिलती है ऐसी अज़ादारी भी ख़ुदा के दिनों की याद दिलाने वाली है कि जो इन्सान को मासूमीन की याद के साथ उनके आदेश, उनके लिए हमारी ज़िम्मेदारियों और उनके मसाईब तक पहुचाऐ।

ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम (इज़्ज़त)

मासूमीन की विलादतो शहादत के बारे में एक ख़ास बात यह है कि उनको याद करना भी ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम में शामिल है जिसका हुक्म हमें कुरान ने दिया और उसको तक़वा (ख़ुदा के आदेशों का पालन करने) का नतीजा बताया है। ''जो भी ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम करेगा तो वह उसके दिल से तक़वा करने की निशानी है।''

''ख़ुदा की निशानियाँ'' यानी हर वह निशानी या चीज़ कि जिससे इन्सान को ख़ुदा याद आ जाये और वह चीज़ उसे ख़ुदा की तरफ़ बुलाये और एहलेबैत ख़ुदा की सबसे बड़ी निशानियों में से हैं और उनकी ताज़ीम ख़ुदा की ताज़ीम है जैसा कि अल्लामा तबातबाई फ़रमाते हैं।

ख़ुदा के दोस्त, जैसे पैग़म्बरे अकरम और चौदह मासूम, आलिम और दीन के बड़े लोग, कुरानो हदीस से दोस्ती और उनकी पैरवी करना यानी जो चीज़े भी इन्सान को ख़ुदा का ध्यान दिलाऐं वह हक़ीक़त में

ख़ुदा से दोस्ती और उसको ही ख़ुदा मानना है और यह किसी भी तरह शिर्क नहीं है। इसीलिए इन से क़रीब होना ख़ुदा से क़रीब होने के बराबर है और इनकी ताज़ीम करना ही तक़वा है क्यूँकि ख़ुदा की निशानियाँ वह अलामतें हैं जो ख़ुदा की इबादत की तरफ़ बुलाती है और आयत में किसी तरह की क़ैद या शर्त नहीं बल्कि वह सारी चीज़े जो ख़ुदा की निशानी और अलामत हैं और इन्सान को ख़ुदा की याद दिलाती है सब इसमें शामिल हैं कि जिनकी ताज़ीम, तक़वे की दलील है। इसीलिए क़ुरान में जो आयतें भी लोगों को तक़वे की तरफ़ बुलाती हैं उनमें यह भी शामिल हैं।

और कोई भी अक़लमंद इसका इन्कार नहीं कर सकता कि इन चीज़ों को ख़ुदा के मुक़ाबले सदैव समझने और इनको हमेशा नफ़ा व नुक़सान और ज़िन्दगी व मौत का मालिक मानने से वह ख़ुदा की निशानियों और अलामतों से बाहर निकल जाती हैं। क्यूँकि ऐसा अक़ीदा ख़ुदा के बड़े दरजे और तौहीद के ख़िलाफ़ और शिर्क है।

इसीलिए अज़ादारी ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम और तक़वा के नतीजों में शामिल है क्यूँकि इससे इन्सान को ख़ुदा की याद आती है और ख़ुदा के वली ''दोस्त'' भी इन्सान को ख़ुदा की सबसे बड़ी निशानियों की याद दिलाते हैं।

मजालिसे अज़ा से दिलो में एहलेबैत और उनके रास्ते की याद बाक़ी रहती है।

एहलेबैत से मौहब्बत वाजिब है

अब तक हमनें अज़ादारी के ज़रुरी होने पर क़ुरान से दो दलीलें लिखीं जो ख़ुदा के दिनों की याद और ख़ुदा की निशानियों की

ताज़ीम के ज़रिए थीं अब हम तीसरी दलील जो अज़ादारी के ज़रुरी होने के लिए लिखते हैं और वह है नबी के एहलेबैत से मौहब्बत करना। कुरान की जिस आयत मे एहलेबैत की मौहब्बत को रिसालत की क़ीमत बताया है इसीलिए यह मौहब्बत हर मुसलमान पर वाजिब है ''बता दो कि मैं तुम से अपनी रिसालत की क़ीमत इसके अलावा कुछ नहीं चाहता कि तुम मेरे एहलेबैत से मौहब्बत करो'' (कुरान)

ज़ाहिर है कि एहलेबैत की अज़ादारी उनसे मौहब्बत और उनके दुशमनो से नफ़रत करना मौहब्बत का सबसे पहला दरजा है लेकिन एहलेबैत, मुसलमानो की मौहब्बत या अज़ादारी के मोहताज नहीं हैं बल्कि इस मौहब्बत और अज़ादारी की ज़रुरत सारे मुसलमानो को है चाहे ये मौहब्बत का पहला दरजा ही है क्यूँकि ख़ुदा ने कुरान में उनकी मौहब्बत को मुसलमानो पर जो वाजिब किया है तो उसे सारे मुसलमानो की ज़िन्दगी की ज़रुरत और रग (नस) कहा है। ''बतादो कि मैं जो तुम से चाहता हूँ क़ीमत के रुप में (वह सिर्फ़ एहलेबैत से मौहब्बत है) जिसमे तुम्हारा ही फ़ायदा है। (कुरान)

एहलेबैत से मौहब्बत सारे मुसलमानो बल्कि पूरी दुनिया के लिए दुनिया व आख़रत की नेकियाँ हासिल करने की कुँजी है उनसे मौहब्बत यानि मासूमो माहेरीने दीन की हुकूमत और सर परस्ती को कुबूल करना जो ख़ुदा की बातो को ज़ाहिर करते हैं और उसके भेजे हुए हैं इस तरह उनकी मौहब्बत का मतलब पूरी दुनिया मे हुकूमत को बाक़ी रखने की कोशिश करना है मगर अफ़सोस कि ज़्यादा तर मुसलमानो ने पहले भी और आज भी इस आयत के बारे मे ध्यान नही दिया है और कुछ शियो ने भी ज़्यादा तर मौहब्बत के सब से कम दर्जे

यानि मौहब्बत को उसके मानी बताए है और एहलेबैत की मदद करने मे भी कमी की है और उनको दुशमनो के बीच अकेला छोड़ दिया यहा तक कि उन मे से एक एक को अकेला करके मज़लूमो परेशान करके शहीद कर दिया गया और उनकी आख़री हुज्जत (कड़ी) एक हज़ार एक सो साठ साल से ज़्यादा समय से अकेली है और उनसे मुँह मोड़ा जा रहा है सारे मुसलमान बल्कि मौला के कहने के अनुसार सारे इन्सान उनसे दूरी की वजह से बहुत ज़्यादा जुल्म और मुसीबतों में घिरे हुए हैं ज़ाहिर है कि अज़ादारी हमारी ज़िम्मेदारीयों में सबसे छोटी ज़िम्मेदारी है जो कुरआन मे मौहब्बत करने के हुक्म के मुताबिक़ अदा की जाती है इस जगह यह लिखना बहुत ज़रूरी है कुरान मजीद की यह तीनो दलीलें सिर्फ़ अज़ादारी के ज़रूरी होने के लिए ही नहीं बल्कि एहलेबैत से सम्बन्धित सभी बातें उसमे शामिल हैं चाहे पैदाइश की महफिल या इमामतो विलायत की खुशी आदि।

मासूमीन का अलग अलग अज़ादारी का तरीक़ा

इन बातों की वजह से ही मासूमीन ने अपने लिए अज़ादारी और मजलिसें करने के लिए हुक्म दिया था और ख़ुद भी एक दूसरे पर अज़ादारी करके लोगों के लिए उसकी अहमियत ज़ाहिर करते थे और मुसलमानों के लिए अज़ादारी साबित करते रहे मासूमीन के अज़ादारी करने के अलग–अलग तरीक़े थे जिनमें से कुछ यहाँ लिख रहे हैं।

1.शहादत से पहले अज़ादारी

कभी तो किसी मासूम की शहादत से पहले उनकी या अपनी शहादत की जगह या वक़्त और तरीक़े को बताकर रोए और दूसरों

को रूलाया ताकि शियों को उसकी अहमियत और अपनी ज़िम्मेदारी का पता चले।

पैग़म्बरे अकरम इमाम हुसैन (अ.स.) की विलादत के बाद अलग–अलग मौक़ों पर उनके मसाइब याद करते और दूसरों को बताकर ख़ुद भी रोते दूसरों को भी रूलाते।

अमीरुल मोमेनीन और जनाबे ज़हरा का भी यही तरीक़ा रहता था रसूले ख़ुदा ने अपनी बेटी फ़ातेमा से यह कहा था कि ''ए फ़ातेमा! क़यामत के दिन हर आँख रोएगी सिवाए उसके कि जो इमाम हुसैन (अ.स.) की मुसीबत और अज़ादारी में रोई हो कि वह आँख क़यामत के दिन ख़ुशी और जन्नत की नेमतों का इनाम पाएगी।''

2.शहादत के बाद अज़ादारी

कभी कभी मासूमीन ने मजालिसे अज़ा करके अज़ादारी का तरीक़ा समझाया है इमामे अली रज़ा (अ.स.) ने फ़रमाया ''जब मोहर्रम का महीना शुरू होता था तो मेरे वालिद (मूसा इब्ने जाफ़र) के होन्टो पर मुस्कान भी देखने को नहीं मिलती थी और दस दिन इसी तरह बीत जाते थे और दसवां दिन (आशूरा) तो आपके रोने पीटने मुसीबत व ग़म का दिन होता था।''

इमामे जाफ़रे सादिक (अ.स.) फ़रमाते हैं कि इमाम ज़ैनुल आबेदीन (आशूरा को याद करके) बीस साल रोए आपके सामने जब भी खाना रखा जाता था तो आप रोने लगते थे।

3.अज़ादारी के लिए पूँजी अलग करना

कभी कभी मासूमीन ने अज़ादारी के लिए एक ख़ास बजट अलग करके उसकी अहमीयत बताई है और इस तरह अपने चाहने वालों के

लिए बजट को अलग करने की अहमीयत का तरीक़ा और नमूना भी बताया जैसा कि इमामे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया मेरे वालिद इमामे बाक़िर ने मुझसे फ़रमाया ए जाफ़र मेरे माल में से इतना इतना माल नौहा पढ़ने वालों यानी अज़ादारों के लिए अलग रख दो ताकि वह हज के दस दिनों मिना में मुझ पर नौहा पढ़ें और अज़ादारी करें।

4.अज़ादारी का सवाब बताकर उसको बढ़ावा देना

कभी कभी मासूमीन ने अज़ादारी का सवाब बताकर लोगों में उसकी तरफ़ ख़ास तवज्जो और ध्यान दिलाया और उसको बढ़ावा दिया।

क.रोना रूलाना और दुखी होना

इमामे रज़ा (अ.स.) फ़रमाते हैं –''जिसके लिए भी आशूरा का दिन मुसीबत, तकलीफ़ और रोने का दिन होगा तो ख़ुदा क़यामत के दिन को उसके लिए ख़ुशी और अच्छाइ का दिन बनाएगा।''

इमामे सज्जाद (अ.स.) फ़रमाते हैं–''जिस मोमिन की आँख से इमामे हुसैन (अ.स.) की शहादत के ग़म में एक आसूँ निकलकर उसके चेहरे तक आजाये तो ख़ुदा उसे जन्नत के कमरों में से एक कमरा देगा।''

इमामे जाफ़रे सादिक़(अ.स.) फ़रमाते हैं–''जिसके सामने हमारे मसाइब पढ़े जायें और उसकी आँख में आँसू आ जाये तो ख़ुदा उसके चेहरे पर दोज़ख़ की आग हराम कर देता है।''

इमामे सादिक़ ही फ़रमाते हैं कि –''जिसकी आँखें भी हमारे ग़म को याद करके रोऐं चाहे हमारा खून ना हक़ बहाने या हमारा हक़ छीने जाने या हमारी और हमारे किसी शिया की तौहीन किये जाने के अफ़सोस और दुख में रोये तो ख़ुदा उसे हमेशा–हमेशा के लिए जन्नत में जगह दे देगा।''

आप ही ने यह भी फ़रमाया कि –''हर चीज़ के लिए सवाब है, लेकिन हमारे ग़म में बहने वाले आँसुओं के सवाब की कोई हद ही नहीं है।'' आप ही ने यह फ़रमाया कि–''जो आँख भी हमारे दुख में रोयेगी उसे ''कौसर'' देखने की नेमत नसीब होगी और उसे उससे सेराब किया जायगा'' और यह भी फ़रमाया कि ''कि इमाम हुसैन पर रोने के अलावा हर तरह का रोना मकरूह है।'' यह भी फ़रमाया–''अगर कोई हमारी मज़लूमियत की वजह से दुखी हो तो यह तस्बीह के बराबर है।''

इमामे रज़ा (अ.स.) ने फ़रमाया ''रोने वालों को हुसैन (अ.स.) पर इसीलिए रोना चाहिए कि उनपर रोने से बड़े बड़े गुनाह माफ़ हो जाते हैं'' आपने ही फ़रमाया कि ''ए इब्ने शबीब! अगर तू हुसैन पर इतना रोया कि तेरे आँसू तेरे चेहरे तक आजायें तो ख़ुदा तेरे सारे गुनाह माफ़ कर देगा चाहे वह छोटे हों या बड़े, कम हों या ज़्यादा।''

ख.एहलेबैत के लिए मरसिये, नौहे, क़सीदे, या मनक़बत पढ़ना

इमामे सादिक़(अ.स.) फ़रमाते हैं–''अगर कोई इमामे हुसैन (अ.स.) के बारे में कोई शेर पढ़े जिससे ख़ुद रोए और दूसरों को भी रूलाऐ तो ख़ुदा उसको माफ़ करके जन्नत उसपर वाजिब कर देगा।''

इसी तरह फ़रमाते हैं–''कि जो भी हमारे लिए शेर का एक मिसरा पढ़ता है ख़ुदा जन्नत में उसके लिए एक घर बनाता है।''

इसी तरह फिर फ़रमाते हैं ''ए देबिल, मैं चाहता हूँ कि मेरे वास्ते शेर कहो और पढ़ो क्यूँकि यह दिन वह दुख और ग़म के दिन (आशूरा के दिन) हैं जिनमें हमारे एहलेबैत को मुसीबतें पहुँची हैं।''

ग.एहलेबैत के लिए मजलिसें करने का हुक्म इमामे रज़ा(अ.स.) फ़रमाते हैं जो भी मजलिसे अज़ा में बैठा उसने हमारे मिशन को ज़िन्दा किया लिहाज़ा जिस दिन सबके दिल मुरदा होंगे तो उसका दिल नहीं मरेगा।

और अबू हारून मक़फूफ़ कहते हैं कि ''जब मैं इमामे सादिक अ.स. के पास गया तो आपने मुझसे फ़रमाया मेरे लिए कुछ शेर पढ़ो तो मैंने कुछ शेर पढ़े फ़रमाया इस तरह नहीं बल्कि जैसे तुम ख़ुद नौहा पढ़ते हो या जब इमामे हुसैन (अ.स.) की क़ब्र के पास होते हो और मरसिया पढ़ते हो'' जिस तरह आपने देखा कि इमामे सादिक़(अ.स.) को राइज तरीक़े का नौहा सुन्ना मुनासिब लगता था और यही चीज़ लोगों की रूह के मुनासिब है।

इमामे बाक़िर (अ.स.) ने उन लोगों के लिए हुक्म दिया कि जो आशूर के दिन करबला नहीं जा सकते कि वह इस तरह अज़ादारी करें ''इमामे हुसैन (अ.स) पर रोऐं अज़ादारी करें और अपने घर वालों को भी इमामे हुसैन(अ.स.) पर रोने का हुक्म दें और अपने घर में भी इमाम हुसैन (अ.स) की अज़ादारी और रोने का प्रोग्राम करे और एक दूसरे को सोग के साथ इमाम हुसैन (अ.स.) के ग़म का पुरसा दें।''

इमामे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया ''एक दूसरे से मुलाक़ात के लिए जाओ और आपस में बातचीत के लिए बैठो और हमारे मिशन यानी हुकूमतो रहबरी को ज़िन्दा करो, बढ़ावा दो।''

इमामें सादिक़ (अ.स.) ने फुजैल से पूछा क्या तुम लोगों के बीच बैठते और हमारी हदीसें बयान करते हो? मैंने कहा– जी, फ़रमाया मैं इस तरह की बैठ उठ पसन्द करता हूँ ताकि तुम हमारा इमामत का मिशन

ज़िन्दा रखो। जो भी हमारे मिशन को ज़िन्दा करे ख़ुदा उसपर रहमत नाज़िल करे।

फिर फ़रमाया कि अज़ादारी और दीन के वली (नबी व इमाम) की याद ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम करने के बराबर है कि जो कुरान के ऐतबार से भी दिलों के तक़वे की निशानी है – ''जो भी ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम करता है तो वह उसके दिल के तक़वे की निशानी है'' (कुरान)

अल्लामा तबातबाई इस आयत के बारे में कहते हैं कि ख़ुदा की निशानियों की ताज़ीम दिलों के तक़वे की निशानी किस तरह बनती है इस आयत में दिलों के तक़वे से उसकी उस असलीयत की तरफ़ इशरा है जो ख़ुदा के अज़ाब से बचने और उसकी हराम की हुई बातों से परहेज़ करने के लिए एक अन्दरूनी चीज़ को उभारती है जिस पर दिल निर्भर होते हैं और यहां दिल से मुराद नफ़्स है। लिहाज़ा तक़वा उन कामों पर निर्भर नहीं कि जिनको जिस्म की हरकत और सुकून कहते हैं क्यूंकि जिस्म का हिलना, हरकत करना और रूकना ख़ुदा की पैरवी और गुनाह दोनों में ही शामिल होते हैं जैसे हाथ लगाना और अपोज़िट सैक्स को छूना निकाह व ज़िना में, इसी तरह ज़ुल्म या क़िसास (ख़ून का बदला ख़ून से शरअन) में जान से मार डालना, या नमाज़ ख़ुदा के लिए या रिया ''दिखावे'' के लिये और बहुत सी इसी तरह की बातें हैं जो कि बिल्कुल एक सी हैं लिहाज़ा इनमें से अगर एक हलाल दूसरी हराम, एक अच्छी दूसरी ख़राब है तो वह उसी अन्दरूनी वजह और रूहानी बात की वजह से

है जो दिल का तक़वा है। नाकि हमारे काम और न वह नतीजे जो हमारे कामों से निकलते हैं जैसे एहसान व इताअत (पैरवी) वग़ैरा।

घ. एहलेबैत के रौज़ों और ख़ुदा के सारे वलियों के मज़ारों की ज़ियारत की फज़ीलत और सवाब

इमामे बाक़िर (अ.स.) फ़रमाते हैं– अगर लोग इमामे हुसैन(अ. स.) के रौज़े की ज़ियारत की फज़ीलत जानते तो ज़ियारत के शौक़ में मर (तक) जाते।

इमामे सादिक़ (अ.स.) फ़रमाते हैं–वह औक़ात (समय) जो ज़ियारत करने वाले ज़ियारते रौज़ए हुसैन में ख़र्च करते हैं उनकी उम्र के इस हिस्से का कोई हिसाब नहीं होगा।

इमामें सादिक़ (अ.स.) से उसके बारे में पूछा गया जो इमामे हुसैन (अ.स.) के रौज़े की ज़ियारत कर सकता था फिर भी नहीं की तो फ़रमाया ''बेशक ऐसे आदमी ने रसूले ख़ुदा और हम एहलेबैत का कहा नहीं माना और हमारे हुक्म को हल्का समझा जब कि वह कर सकता था।''

इमामे सादिक़ ही फ़रमाते हैं बेशक रसूल की बेटी फ़ातेमा (स. अ.) अपने बेटे हुसैन (अ.स.) के रौज़े की ज़ियारत करने वालों पर मेहरबानी करती है और उनके लिय बख़शिश की दुआ करतीं है।

आप ही फ़रमाते हैं जो भी इमामे हुसैन (अ.स.) के हक़ को पहचानते हुए उनकी ज़ियारत को जाये तो ख़ुदा उसके नाम को आला इल्लीयीन (सबसे बड़े लोगों) में शामिल कर देता है। इमामे रिज़ा (अ. स.) फ़रमाते हैं जो भी फ़ुरात के क़रीब इमाम हुसैन (अ.स.) के रौज़े

की ज़ियारत करे वह ऐसा ही है जैसे उसने आसमान पर ख़ुदा की ज़ियारत की हो।

इमामे सादिक़ (अ.स.) फ़रमाते हैं कि इमामे हुसैन (अ.स.) के रौज़े की ज़ियारत करो और जफ़ा न करना इसलिए कि वह जन्नत के जवानों और शहीदों के सरदार हैं।

आप ही फ़रमाते हैं कि इमामे हुसैन (अ.स.) की मिटट्ी (ख़ाके शिफ़ा) पर सजदा करना सात परदों को हटा देता है।

आप ही फ़रमाते हैं जो भी इमामे हुसैन (अ.स.) के रौज़े पर शबे आशूर सुबह तक रहे तो वह क़यामत के दिन ख़ुदा से इस तरह मिलेगा कि वह अपने ख़ून में आलूदा होगा जैसे वह जिसने इमामे हुसैन (अ.स.) के साथ करबला के मैदान में शहादत पाई हो।

ड. <u>उन शियों के हक़ में दुआ कि जो एहलेबैत की अज़ादारी और उनके रौज़ों की ज़ियारत को अहमीयत देते थे।</u>

इमामे सादिक़ (अ.स.) ने फ़रमाया तारीफ़ के क़ाबिल है वह ख़ुदा कि जिसने इन्सानों में ऐसे लोग भी रखे कि जो हमारी तरफ़ आते हैं और हमारे हक़ को पहचानते हुए हमारे क़सीदे या मरसिये पढ़ते हैं।

इमामे सादिक़ (अ.स.) ने एक अज़ादार जो इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोता और सोग मनाता था उससे फ़रमाया ख़ुदा तेरे आँसू को तेरे लिये रहमत की वजह बनाए। ख़बरदार तू उन लोगों में से है कि जो हमारी वजह से दिल जले (दुखी) हैं और उनमें से है कि जो हमारी ख़ुशी में ख़ुश और हमारे ग़म में दुखी रहते हैं जान ले कि तेरी मौत के वक़्त तेरे सरहाने हमारे बाबा होंगे। नमाज़ के बाद इमामे सादिक़

(अ.स.) अपनी मुनाजात में इस तरह फ़रमाते थे ए वह ख़ुदा कि जिसने हमें अपनी ख़ास करामत दी और शफ़ाअत का वादा किया मुझे मेरे बरादरान और उन ज़ाइरों को जो मेरे बाबा इमाम हुसैन (अ.स.) की क़ब्र पर जाते हैं उन्हें बख़्श दे। ए ख़ुदा हमारे दुश्मन इनका ज़ियारत के लिए जाने पर मज़ाक़ उड़ाते हैं और इस मज़ाक उड़ाने के बाद भी दुश्मनों की मर्ज़ी के ख़िलाफ उन्होंने हमारे पास आना जाना उठना बैठना नहीं छोड़ा लिहाज़ा सूरज से झुलसे हुए इन चेहरों और जो हमारे बाबा की क़ब्र की मिटट्ी में अटे हुए और वह आंखे जिनसे हमारे दुख में आँसू बहे और वह दिल जो हमारी मुसीबत सुनकर बेचैन व बेक़रार हुए और वह रोना पीटना जो हमारी वजह से हुआ इन सब को तू अपनी ख़ास रहमत में शामिल फ़रमा। ए ख़ुदा मैं इन जिस्मों और जानों को तेरे सुपुर्द करता हूँ ताकि उस प्यास के दिन इन लोगों को हौज़े कौसर से सेराब करे।

अज़ादारी के बारे में अब तक जो कुछ कहा गया उससे जो नतीजे सामने आये उनकी थोड़ी–थोड़ी वज़ाहत करेंगे।

1.जज़बातों एहसासात और मारेफ़तो जानकारी जो बड़ी मुसीबत का नतीजा हैं उसे मजलिसे अज़ा और मासूमीन की विलादतो शहादत के प्रोग्रामों से ज़्यादा और किसी चीज़ से मज़बूती व फैलाओ नहीं मिलता।

दीने हक़ की निगरानी और लोगों का ख़ुदा के रहबरों से सम्बन्ध बाक़ी रखने के लिए अज़ादारी ही सबसे अच्छा, ज़रुरी और मज़बूत वसीला है और वह भी ऐसा कि कोई भी चीज़ चाहे ख़ुदा की नज़र में

कितनी ही अच्छी क्यूँ न हो फिर भी वह इसकी जगह नहीं ले सकती।

इसीलिए मासूमीन अपनी शहादत से पहले उन घटनाओं को बताते जो आने वाले समय में घटने वाली थीं या उन मसाइब को बताते थे जो बाद में उनपर होते इस तरह अज़ादारी को क़ायम करते ताकि इन घटनाओं के बाद लोग अज़ादारी में कमी न करें और उनके नतीजे में जज़बातो एहसासात और मारेफ़तो जानकारी होती बल्कि बढ़ावा होता। इमामे हुसैन (अ.स.) से पहले के मासूमीन का इमामे हुसैन (अ.स.) के मसाईब को याद करना, अज़ादारी के लिए पूंजी का अलग करना और उनकी शहादत के बाद रोना, और मदीना छोड़ते वक़्त इरान जाने के लिए इमामे रिज़ा (अ.स.) का अपने ऊपर रोने के लिए ताकीद करना यह सब इसी मक़सद से हुआ था।

2.मासूमीन का अपने बाप दादा की मज़लूमियत और शहादत पर अज़ादारी करना हमारे लिए सबक़ भी है और अज़ादारी को ज़िन्दा रखने का तरीक़ा भी, और उसके बहुत अहम नतीजे भी हैं।

3.मजलिस या मासूमीन की विलादत शहादत पर प्रोग्राम करने के लिए बजट अलग करना बेहतरीन और बाक़ी रहने वाले कामों में से है।

4.अज़ादारी की अज़मत का राज़ और उसके अनोखे होने की वजह कि जिसने इसे दीन को ज़िन्दा करने का एक बे नज़ीर वसीला बना दिया है इसी में जज़बातो एहसासात के होने का असर पाया जाता है और मासूमीन की हदीसें चाहे रोने, मुसीबत, रंज, मज़लूमियत, ग़म या अज़ादारी के लिए हों वह इन्सान की बुलन्दी और उसके निखार के लिए हैं।

जैसा कि इमामे सादिक़ (अ.स.) ने अबू हारून से फ़रमाया कि उसी तरह से शेर पढ़ो यह इस बात की निशानी है कि दुखी आवाज़, धुन और राग में ऐसा असर होता है कि जो सिर्फ़ सीधे सीधे शेर पढ़ने में नहीं होता यानी सिर्फ़ शेर काफ़ी नहीं हैं बल्कि उसके साथ धुन और दुखी आवाज़ भी ज़रुरी है और वह धुन और दुखी आवाज़ ऐसी हो जो जज़बातो एहसासात को उभारे ताकि इन्सान के दिल पर उसका असर हो।

5.और शेर के मिसरे वह भी ख़ास धुन और राग के साथ होने पर ही अज़ादारी निर्भर नहीं है बल्कि हर वह मुनासिब और अच्छा तरीक़ा अज़ादारी में शामिल है कि जो अज़ादारी को लोगों के दिलों तक पहुंचाए और एहलेबैत की मज़लूमियत और उनकी अज़मत को अच्छे ढंग से पहचनवाऐ।

6.क्यूँकि अज़ादारी दीन को ज़िन्दा रखने और उसको बढ़ावा देने में बुनियादी मदद करती है और इस जैसी कोई और चीज़ भी नहीं है जो इसकी जगह लेले और इसका बदला (सिला) सोच और हिसाब लगाने से कहीं ज़्यादा होगा इसीलिए उसके बेहद सवाब का ज़िक्र किया गया है और इस अज़ादारी के ज़रिये इतना ज़्यादा सवाब और बदला हैरत की बात नहीं है बल्कि बहुत मुनासिब, माकूल और सामने की बात है। इस बात की वज़ाहत भी ज़रुरी है कि एक इन्सान के काम (इबादत) कभी तो रुह और अपने बदन के इन्तेज़ाम के सही असरात की वहज से होते हैं जिसपर सवाब भी है ज़ाहिर है कि काम (इबादत) के सवाब का मेयार असरात के मेयार से जुड़ा होता है जो किसी आदमी से दो चार होते हैं और यह मेयार भी ऐसी तबदीली है जो आदमी के अन्दर

पैदा होती है और कभी सामाजिक या सारे इन्सानों के इन्तेज़ाम में जो असरात होते हैं उनकी वजह से भी जिसपर भी सवाब मिलता है।

अज़ादारी एक इन्सान की इन्सानियत के एतबार से भी सवाब की वजह है और सामाजिक तौर पर भी जो असरात पैदा होते हैं उसपर भी सवाब की वजह है। इसी वजह से अगर एक ग़ैर शिया या एक ग़ैर मुस्लिम भी अज़ादारिये हुसैन (अ.स.) में शरीक होता है या मौला की मज़लूमितयत पर आँसू बहाता है तो ये आँसू बहाना और मजलिस में शरीक होना क्यूँकि दीने हक़ को जिन्दगी देने वाले (इमाम हुसैन अ.स.) की मदद करना है इसलिए इस पर भी सवाबहै और इसका बदला दुनिया में उनकी ज़रूरतों को पूरा करके दिया जाता है और ज़्यादातर रोने वालों को तौबा और ईमान की हिदायत मिलती है। क्यूँकि यह रोना और इस तरह का लगाओ हक़ीक़त में इमामे हुसैन (अ.स.) की अज़मत को न जानने की वजह से है लेकिन दिल का झुकाओ होता है फिर भी यह तौबा करके कुफ़्र से निजात और ईमान की हिदायत की वजह बन जाता है और इसकी खुली हुई निशानियां दुनिया भर में ईसाई और यहूदी हैं कि जो अज़ादारी करते हैं और उनके ऐसे मरीज़ ठीक हो जाते हैं कि जो ला इलाज हो जाते थे जिसकी वजह से वह शिया हो जाते हैं और हम ईरान में सैकड़ों अपने मोहतरम यहूदियों और ईसाईयों के ख़ानदानों को इसी रविश पर देखते हैं जो आज भी हमारे बीच मौजूद हैं।

इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना, इन्सानियत की हक़ीक़त पर रोना, ख़ुदा के खलीफ़ा पर रोना और ख़ुदा के सारे नाम और सिफ़तों को ज़ाहिर करने के बराबर है यह हक़ीक़त में अपने ख़ुदा और अपनी असलियत

की तरफ़ पलटना है इस लिहाज़ से यह एक बड़ी तौबा के बराबर है कि जिसके आँसुओं का एक क़तरा जहन्नम की आग के सैलाब को ख़ामोश कर देगा और वह इन्सान की निजात की वजह भी बनेगा।

अज़ादारी का सवाब अल्लामा तबातबाई की नज़र मे

अल्लामा तबातबाई जो कि ख़ुद एक बड़े अज़ादार और बहुत रोने वालों में से थे वह इस सवाल के जवाब में कि किस तरह इमामे सादिक़ के फ़रमान के मुताबिक़ अज़ादारों के आँसुओं का एक क़तरा जहन्नम की आग को बुझा देगा? इस तरह फ़रमाते हैं –''इसमें क्या हरज है कि ख़ुदा की मर्ज़ी और इजाज़त से आँसुओं का एक क़तरा जहन्नम की आग को बुझा देगा क्यूँकि आँसू का क़तरा तौबा के जैसा है जो गुनाहों के बख़्शे जाने और अज़ाब के ख़त्म होने की वजह बनती है और इसी के मुक़ाबिले में कुफ़्र का वह नुकता होता है कि जो नेकियों और जन्नत की नेमतों को ख़त्म करके जहन्नम की आग को भड़काने का काम करता है।

एक ग़लत सोच का जवाब (रोना गुनाहों की छूट नहीं देता)

इस वज़ाहत से इस ग़लत सोच का जवाब भी साबित हो गया कि इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना गुनाहों की इजाज़त या सहारा नही है कुछ लोग यह सोचते हैं कि इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोने वालों को किसी भी नेक काम या इबादतो तक़वा की ज़रूरत नहीं चाहे वह कोई भी ग़लत काम और बुराई क्यूँ न करें फिर भी कोई हरज नहीं। बस वह इमामे हुसैन (अ.स.) को रेाने वाले होने चाहियें उनकी निजात हो जायेगी।हमें इस मौज़ू पर दलील देने के लिए इस बारे में दो बातें सबसे पहले बताना ज़रुरी हैं

अ–रोने के नतीजे– इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोने के कुछ नतीजे हैं कि इस सवाब का राज़ उन्हीं नतीजों में ढूंढा जाये और यह नतीजे इस तरह हैं।

1.इमामें हुसैन (अ.स.) पर इस एतबार से रोना कि वह इमाम हुसैन (अ.स.) से मौहब्बत की निशानी और उनपर होने वाले ज़ुल्म से नफ़रत और इसी तरह आपके दुश्मनों से नफ़रत, इन सब बातों की वजह से अज़दार के अन्दर एक तरह इमामे हुसैन (अ.स.) से दिली लगाव पैदा हो जाता है और यह लगाव उनकी मौहब्बत को बढ़ावा देता रहता है।

2.इसके बाद वाले और बुलन्द दर्जे में इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना ज़ुल्म की बुनियाद, इमाम के दुश्मन और ज़ालिमों से नफ़रत करने को बढ़ावा देता है और अज़ादार को उनकी बुरी बातों व आदतों और उनके मानने वालों के ग़लत कामों से दूरी बनाये रखने की वजह बनता है। वह ख़ुद बख़ुद अन्दरुनी तौर से समझता है कि भटके हुओं की आदतें और बातें मासूमीन की मर्ज़ी और हुक्म से बिल्कुल अलग हैं और जब वह इस बात को जान लेता है कि ज़ुल्म और बुरी बातों और ख़राब आदतों को ख़त्म करने की वजह से शहीद कर दिये गये तो वह अपने आपको भटके हुए लोगों से दूर करके एहलेबैत के अख़्लाक़ो अहादीस से क़रीब हो जाता है।

3.इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना एहलेबैत के अख़लाक़ और उनके जैसे अज़ादार होने की वजह बनता है और यह अज़ादार ख़ुदा व एहलेबैत की नज़र में अच्छा बन जाता है क्यूँकि यह उनकी ज़िन्दगी को नमूना बनाता है और इस मशअले राह के साये में वह अपने आपको सुधारता और अपनी ज़िन्दगी को कामयाब बनाता है।

इसलिए मासूमीन पर रोना सिर्फ़ एक मौहब्बत या जज़बाती काम नहीं है बल्कि जज़बातों एहसासात और जानकारी व मारेफ़त का एक ऐसा ढंग है जो एक मरहले से दूसरे मरहले और एक क़दम से दूसरे क़दम तक अज़ादार को एक दर्जे के बाद उससे आगे के दर्जे तक पहुंचता है या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि अज़ादारी इन्सान को सुधारने का इंस्टिट्यूट है।

(ब) पैरवी और ख़ुदा का डर मौहब्बत के लिए ज़रूरी एहलेबैत पर रोना वक़्त को कारामद करता है और उसका नतीजा यह होता है कि इन्सान को निजात मिल जाती है मगर वह कि जो अच्छा होने और पाक रहने का इरादा रखता हो और दूसरे ये कि बार बार गुनाह न करता हो और ख़ुदा के हुक्म की मुख़ालफ़त न करता हो लेकिन अगर वह अच्छा होने पाको पाकीज़ा रहने का इरादा न रखता हो, और इसी तरह गुनाहों से भी न बचता हो, ख़ुदा का कहा न मानता हो तो सिर्फ़ रोना या सारी इबादतें भी मिलकर उसको निजात नहीं दिलाएंगी बल्कि वह पत्थर दिल हो जायेगा और ख़ुदा व एहलेबैत से दूर हो जायेगा लिहाज़ा रसूले खुदा(स.अ.) ने नमाज़ के लिए इस तरह फ़रमाया है जो कि कुराने करीम के एतबार से इन्सान को बेहयाई और बुराई से रोकती है ''जिस किसी को भी उसकी नमाज़ बेहयाई और बुराई से न रोक सके तो ख़ुदा से दूरी के सिवा उसकी किसी चीज़ में बढ़ावा नहीं होता।''

कुरान के एतबार से खुदा ऐसे लोगों की तौबा को कुबूल करता है जो अनजाने में कोई गुनाह कर बैठें न वह कि जो जान बूझकर गुनाह करें और बार बार करते रहें या जानते हुए करें और फ़ौरन एहसासे

गुनाह करके कभी भी न करने के लिए तौबा कर लें। ''तौबा उनके लिए नहीं है जो पहले बुराईयां करते हैं फिर जब मौत सामने आ जाती है तो कहते हैं कि अब हमने तौबा कर ली और नाही उनके लिए है जो कुफ़्र की हालत में मर जाते हैं कि उनके लिए तो हमने बड़ा दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है''(कुरान)। कुराने करीम ख़ुदा की बख़शिश में ऐसे लोगों को शामिल करता है कि जिनसे जब भी कोई ग़लती और ख़ता हो या ज़ुल्म हो तो वह खुदा को याद करें और उससे माफ़ी मांगे तौबा करें और फिर कभी न करने का इरादा रखें।

''वह ऐसे नेक लोग हैं कि जब कोई खुला हुआ गुनाह करते हैं या अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं तो ख़ुदा को याद करके अपने गुनाहों से तौबा करते हैं खुदा के अलावा और कौन गुनाहों को माफ़ करने वाला है और वह अपने किये को जानबूझकर बार बार नहीं करते'' कुरान।

इमामे बाक़िर (अ.स.) कुरान की इस फ़रमाईश और गुनाह के बार बार करने के बारे में फ़रमाते हैं– ''बार बार गुनाह का मतलब यह है कि कोई आदमी गुनाह करे फिर न माफ़ी मांगे न तौबा करने के लिये सोचे'' इमामे सादिक़ (अ.स.) इस बारे में फ़रमाते हैं कि ''गुनाह पर मुसिर होना (बार–बार करना) अमन के मानी में आता है यानी अपने आप को ख़ुदा के अज़ाब से बचा हुआ जानना और नुक़सान उठाने वालों के सिवा कोई भी अपने को अमान में नहीं समझता'' इमामे अली (अ.स.) भी इसी तरह फ़रमाते हैं–'' ख़ुदा के नज़दीक सबसे बड़ा गुनाह वह है कि जिसका करने वाला उस पर मुसिर हो'' (यानी बार बार करे)।

लिहाज़ा ये एहलेबैत पर रोना हरगिज़ गुनाहों की या उनको बार बार करने की इजाज़त नहीं देता। आख़िर ये कैसे हो सकता है क्यूँकि इमामे हुसैन ने तो ख़ुद गुनाहों और बुराईयों को ख़त्म करने के लिए जंग की थी।

इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना अपने सारे सवाबों के साथ और हर नेक काम व इबादतें, यह सब अगर इन्सान के घमंडी होने या गुनाहों के लिए सहारे की वजह बनें तो उन सब का फ़ायदा और नतीजा ख़त्म हो जायेगा। इसलिए कि रोना, इबादत, नेक काम यह सब इन्सान को पाको पाकीज़ा बनाकर ख़ुदा के क़रीब करने के लिए हैं गुनाहों या ख़ुदा के आदेशों की मुख़ालेफ़त करने का ज़रिया नहीं।

रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं ए मसऊद के बेटे ख़ुदा से घमंड न कर और ना ही अपनी पाकीज़गी, इल्म, अमल (काम) नेकी व इबादत पर गर्व या घमंड कर।

अमीरुल मोमेनीन फ़रमाते हैं कि ख़ुदा से घमंड करने का मतलब यह है कि बन्दा गुनाह पर मुसिर हो (यानी बार बार करे) फिर भी ख़ुदा से बख़्शे जाने की तमन्ना करे।

अब जो भी सिर्फ़ अज़ादारी में शामिल होने की वजह से इमामे हुसैन (अ.स.) की शफ़ाअत पर घमंड करे और उनकी मौहब्बत व शफ़ाअत पर तक़या करते हुए ख़ुदा के वाजिबात में सुस्ती या उनकी तरफ़ ध्यान न दे और इसी ख़्याली मौहब्बत व शफ़ाअत को सहारा बनाकर नाजाइज़ काम करे तो न उसने इमामे हुसैन (अ.स.) को पहचाना है और न मौहब्बत व शफ़ाअत की असलियतों हक़ीक़त को। क्यूँकि आख़रत की शफ़ाअत दुनिया के कामों और शफ़ाअत से अलग या

बेरब्त नहीं है इसलिए कि जिसके लिए दुनिया में उनकी मौहब्बत उसकी शफ़ाअत की वजह नहीं बनी और उसको जहन्नम, गुनाह और ग़लत बातों से न बचा सकी तो वह हक़ीक़त में सच्ची मौहब्बत नहीं थी। वह मौहब्बत जो दुनिया में इन्सान को गुनाहों से दूर रखने की ताक़त नहीं रखती वह आख़रत में भी इन्सान को जहन्नम से निजात नहीं दिला सकती। वह मौहब्बत जो इन्सान को उसके माशूक़ के सामने लाती है फिर वह उस माशूक़ की मुख़ालेफ़त और कहना न मानने पर भी मजबूर करे तो वह मौहब्ब्त झूठी है।

इमामे हुसैन(अ.स.) अपनी अज़मतो अहमियत सिर्फ़ ख़ुदा की बन्दगी और उसके आदेशों के प्रचार ही में समझते हैं और उनकी जंग का मक़सद भी नेक बातों की हिदायत और बुराइयों को रोकने के लिये था।

इस तरह की ग़लत बातें और प्रोपैगन्डे कम पढ़े लिखे मुबल्लेग़ीन की तरफ़ से होते हैं जो अज़ादारी और उसके सवाब को बेजा बताकर अवाम को बहकाने की कोशिश करते हैं यह ऐसे मुबल्लिग़ हैं कि जो अवाम के अधीन होते हैं उनकी वाहवाही के लिए इस तरह की बातें करते हैं और एहलेबैत ने ऐसे लोगों की मज़म्मत की है एहलेबैत ने हमेशा ऐसे लोगों को कुछ चीज़ों से रोका है उनमें से कुछ यह हैंः– इबादत का उससे ज़्यादा सवाब बताना, एहलेबैत की शफ़ाअत का ग़लत ढंग व तरीक़ा बताना, लोगों का एहलेबैत पर गर्व व घमंड करना, एहलेबैत की मौहब्बत व शफ़ाअत के सहारे गुनाह पर दिलेर करना। इमामे सज्जाद(अ.स.) इस बारे में फ़रमाते हैं – लोगों से उनकी समझ व जानकारी के अनुसार बात चीत करो और जिसको वह

ना समझ सके वह उनपर मत मंढो कि फिर वह हम पर गर्व व घमंड करने लगेगें।

इमामे बाक़िर(अ.स.) फ़रमाते हैं– ख़ुदा की क़सम हमें ख़ुदा की तरफ़ से कोई छूट नहीं और हमारे और ख़ुदा के बीच कोई नज़दीकी भी नहीं है और ख़ुदा पर हमारी कोई हुज्जत कोई हक़ भी नहीं हम उसकी पैरवी व इताअत के सिवा उसके क़रीब नहीं हो सकते लिहाज़ा तुममे से जो भी उसकी पैरवी करने वाला होगा उसको हमारे मौला होने का फ़ायदा मिलेगा और तुममे से जो भी ख़ुदा की पैरवी नहीं करेगा उसको हमारे मौला होने का कोई फ़ायदा नहीं पहुंचेगा, अफ़सोस है तुम पर, धोका मत खाओ अफ़सोस है तुम पर धोका मत खाओ।

इमामे ज़माना(अ.स.) अपने शियों को गुनाहों से बचने के लिए इस तरह फ़रमाते हैं –''तुममें से हर एक को ऐसे काम करने चाहियें कि जिससे हमारी मौहब्बत व दोस्ती में और नज़दीकी हो और उन बातों से दूर रहो जिनसे हम ख़ुश नहीं होते या जो हमारे लिए तकलीफ़ और गुस्से की वजह बने क्यूँकि हमारा हुक्म उस जगह पहुंचता है कि जहाँ तौबा उसे कोई फ़ायदा नहीं पहुंचाती और उसका गुनाह पर शर्मिन्दा होना हमारे ऐतबार से निजात दिलाने वाला नहीं होता।

ख़ुद इमामे हुसैन (अ.स.) पैरवी किये बग़ैर मौहब्बत को क़ुबूल नहीं फ़रमाते और अपने नूरानी बयानों में फ़रमाते हैं कि जो भी हमें दोस्त रखता है वह हम एहलेबैत में गिना जाएगा जिन्होंने सुना उन्होंने हैरत से पूछा आप में गिना जायेगा? फ़रमाया हाँ हम एहलेबैत में उसका शुमार होगा। और तीन बार इसी जुमले को फ़रमाते रहे। उसके बाद

फ़रमाया क्या तुमने कुरान में जनाबे इब्राहीम के यह लफ़्ज़ नहीं सुने –''जो भी मेरी पैरवी करेगा तो वह मुझसे होगा'' इसलिए इमामे हुसैन (अ.स.) के ऐतबार से मौहब्बत वही पैरवी है।

दुनिया में सच्ची मौहब्बत करने वाला एहलेबैत का पैरो और गुलाम है और आख़रत में भी वही एहलेबैत के पीछे उनकी पैरवी में जन्नत में जायेगा उसी तरह कि जैसे इमामुल मुत्तक़ीन फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा (स.अ.) ने मुझसे फ़रमाया कि– ''सबसे पहले जन्नत में जाने वालों में मैं, फ़ातेमा (स.अ.), तुम, हसन(अ.स.) और हुसैन(अ.स.) होंगे, मैंने कहा या रसूले ख़ुदा हमारे चाहने वालों का क्या होगा? फ़रमाया वह तुम्हारे बाद यानी तुम्हारे पीछे जन्नत में जायेंगे।''

आपने यह भी फ़रमाया मैं रसूले ख़ुदा(स.अ.) के साथ हूँगा और मेरे एहलेबैत ''ख़ानदान'' मेरे साथ हौज़े कौसर पर होंगे लिहाज़ा जो मुझे चाहता है उसे चाहिए कि मेरे हुक्म को माने और हमारे जैसे काम यानी इबादत करे।

इस ऐतबार से छोटे बड़े गुनाहों का बख़्शा जाना और आँसू के एक क़तरे से जहन्नम का बुझ जाना उस गुनहगार के लिए नहीं है कि जो गुनाहों को बार बार करता हो और पाक रहने व तौबा करने का इरादा भी न करता हो। इसीलिए रिवायत के हिस्सों में ऐसे सवाब और नतीजे सिर्फ़ मोमिनों के लिए बताये गये हैं।

जैसा कि इमामे सज्जाद (अ.स.) की हदीस में यह बात बताई गई आपने फ़रमाया कि – ''हर वह मोमिन कि जिसकी आँख इमामे हुसैन(अ.स.) की शहादत में रोए और उसके आँसू चेहरे पर जारी हो जायें तो ख़ुदा उसको जन्नती कमरों में जगह देगा।

स–मुमकिन है कि कभी कभी सवाब और नतीजे आने वाले वक़्त के किसी आदमी के एतबार से बताए जाते हैं यानी जिस तरह मरहूम अल्लामा तबातबाई ने फ़रमाया – हक़ीक़त में यह आँसू का क़तरा तौबा जैसा है कि जो गुनाहों के माफ़ और अज़ाब के टलने की वजह है।

दूसरी तरह यूँ कहा जाए कि यह रोना सही ढंग से तौबा करने के बराबर है जिसका नतीजा गुनाहों को छोड़ने और पिछली कमियों को पूरा करने और इन्सान को गुनाहों से दूर रखने की वजह बनता है।

इसको यूँ समझा जाये कि कभी कभी कुछ नेक कामों के असर ज़ाहिर हो जाते हैं तो अगर एक गुनाहगार उस नेक काम को करे तो हिदायत का नूर उसके दिल को रौशन कर देगा जिसकी वजह से वह धीरे धीरे हिदायत पा जायेगा और सच्ची तौबा करने के क़ाबिल हो जायेगा और सारे गुनाहों को छोड़कर अपनी पिछली कमियां दूर करेगा।

उन्हीं नेक कामों में से एक काम नमाज़ है कि अगर गुनाहगार नमाज़ पढ़ता रहे तो यही नमाज़ पढ़ना उसके दिल पर धीरे धीरे असर करके उसके लिए ख़ुदा की पहचान और जागरूकता के रास्ते खोल सकती है। हममे से हर एक ने इस तरह के बहुत से लोग देखे हैं। रसूले ख़ुदा ने ऐसे आदमी के बारे में फ़रमाया कि जो आपके साथ नमाज़ पढ़ता था मगर बुराइयाँ भी करता था –''उसकी नमाज़ उसे एक ना एक दिन बुराईयों से रोक देगी'' कुछ दिन बाद उसने तौबा कर ली।

इसी तरह ऐसे आदमी के बारे में जो दिन में तो नमाज़ पढ़ता और रातों को चोरी करता था फ़रमाया –''उसकी नमाज़ उसे इस काम से रोक देगी (यानी चोरी से)।

इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोना उन्हीं नेक कामों में से है कि अगर कोई गुनाहगार भी आप पर रोये तो यह रोना उसको निजात दिला देगा। इमामे हुसैन(अ.स.) की अज़ादारी की तारीख़ इस तरह के लोगों से भरी पड़ी है जिसकी खुली हुई मिसाल और बड़ा नमूना तुरक का भेजा हुआ आदमी है कि जिसकी जीवनी को पढ़ने के लिए मैं सबको वसीयत करता हूँ।

हमने बहुत ज़्यादा देखा और सुना है कि वह लोग जो मासूमीन से मौहब्बत करते थे और गुनाहगार भी थे बल्कि बुराइयों और बेहयाइयों में मशहूर भी थे उसी दौर में इमामे हुसैन (अ.स.) की मजलिस का भी इन्तेज़ाम करते थे और मजलिस के लिए परेशानियां भी सहन करते वह कुछ दिन के बाद ऐसे बदले कि सच्ची तौबा करके सही हो गये। इसी तरह हमने बहुत ज़्यादा देखा और सुना है कि ग़ैर मुसलमान तक चाहे वह हमारे देश में हो या विदेश में वह इमामे हुसैन (अ.स.) पर रोने या वसीला बनाने या किसी भी तरह उनकी ख़िदमत करने से हिदायत पा गए और एहलेबैत के मज़हब पर आ गये। हाँ मासूमीन ख़ास तौर से इमाम हुसैन (अ.स.) पर रोने या अपनी अक़ीदत को ज़ाहिर करने की तौफ़ीक़ हर ग़ैर मुस्लिम को नहीं होती जोकि इन्सान को ख़ुद ब ख़ुद तौबा व हिदायत तक पहुँचाती है। यह तौफ़ीक़ सिर्फ़ उन लोगों को होती है कि जो ग़ैर मुस्लिम होने के वक़्त भी अपने दिल को ग़लत बातों से साफ़ और इमामे हुसैन (अ.स.) के रास्ते को

बुनियाद और अपना मक़सद जानते हों। इसलिए ज़्यादा तर ग़ैर मुसलमानों को यह तौफ़ीक़ नहीं मिलती यह इमामे हुसैन (अ.स.) की अज़मत तक पहुँचाती है कि इस कम से कम ख़िदमत का बहुत ज़्यादा और बड़ा सिला (बदला) दिया जाता है। हाँ–हाँ अगर ख़ुदा उसपर रोने का बहुत बड़ा (सिला) बदला दे कि जिसका पाक ख़ून दीन के बाक़ी रहने का ज़िम्मेदार बना तो इसमें कोई हैरत की बात नहीं है। अमान सामानी ने इस राज़ को एक नज़म में बयान किया है जिसका मफ़हूम यह है कि – ''जिबरील आये और कहा कि ए सुलताने इश्क़ मैदाने इश्क़े ख़ुदा में आपने बड़ी क़ुरबानी दी लिहाज़ा ए इमामे आली मरतबा मैं आपके लिए दुरूदो सलाम और ख़ुदा का पैग़ाम लाया हूँ उसने (ख़ुदा ने) कहा कि मैं आपके जिस्मों जान को शाबाशी देता हूँ कि आप मुझसे अपने वादे में पूरे उतरे हो। आप नूरानी चेहरे वाले हो जिनसे मुझे इश्क़ है हमारे दो होने पर सवालात खड़े होते हैं जबकि मैं तुम हूँ और तुम मैं हो चूँकि तुमने मेरे लिए अपने आपको फ़िदा कर दिया तो तुम मेरा ख़ून हो तो मैं तुम्हारा ख़ून बहा हूँ जो कुछ तुम्हारे पास था सब मेरी ख़ातिर मेरे लिये लुटा दिया तो मैं भी तुम्हारे लिये जो कुछ मेरे पास है वह सब दे रहा हूँ।

मुसीबते अज़ीम (बड़ी मुसीबत) के लिए इमामे ज़माना (अ.स.) का नज़रिया

अब आले मौहम्मद के उस अकेले रह जाने वाले इमाम को देखें जो ख़ातमुल वसीय्यीन हज़रत हुज्जत इब्निल हसनिल असकरी हैं जो अपने दादा हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेने वाले हैं कि यह अपने दादा और ख़ानदान, उनके मदद करने वाले, उन सब की

शहादत पर क्या एहसास व जज़बात रखते हैं इस मौजू (विषय) (इमामे हुसैन (अ.स.) की कुर्बानी पर इमामे ज़माना के नज़रये) पर एक बड़ी किताब लिखी जा सकती है हम यहां सिर्फ़ उसमें से ख़ास ख़ास बातें लिखेंगे। हम कहते हैं कि सिर्फ़ ज़ियारते नाहिया ही से समझा जा सकता है कि उसकी शरह और ज़ियारते आशूरा की तफ़सीर वाले हिस्से कि जिसके लिए इमामे ज़माना ने बहुत ज़ोर दिया है। इस ज़ियारत को ध्यान से पढ़ें तो पता चलता है कि इमामे ज़माना (अ.स.) से ज़्यादा कोई भी इमामे हुसैन (अ.स.) का अज़ादार नहीं है और आपसे ज़्यादा किसी ने भी इमामे हुसैन (अ.स.) की अज़ादारी न की है न कर सकता है।

वह जो ख़ुद ख़ुदा का मज़हर, ख़ुदा की हुज्जत और इमामे हुसैन (अ.स.) की औलाद हैं वह इमामे हुसैन (अ.स.) और करबला को हर किसी से ज़्यादा पहचानते हैं उनके जैसा तो इमामे हुसैन (अ.स.) पर कोई भी मरसिया नहीं पढ़ता वह ख़ुदा के इल्म का ख़जाना हैं और उनके लिए वक़्त या जगह रुकावट नहीं है। उनके लिए बीता हुआ, वर्तमान और भविष्य सब एक समान है। उनकी जानकारी प्राचीन और भविष्य के बारे में वर्तमान के समान है उन्हें करबला के बारे में एक एक बात पता है और हर जगह को उन्होंने देखा, मरसिया पढ़ा और अज़ादारी की है उन्होंने अपनी माँ और अपने बाप दादाओं, ख़ानदान, उनकी मदद करने वालों, ख़ास तौर से अपने दादा इमामे हुसैन (अ.स.) पर होने वाली मुसीबतों को अपने गोश्त, ख़ून, जिस्मों जान के हर हिस्से से महसूस किया हैं। क्यूँकि वह एक ही नूर और एक ही रूह है। उन्होंने एक बार तो रसूले ख़ुदा के बदन के साथ जान दी, एक बार

अपनी माँ के साथ दरवाज़े और दीवार के बीच पिसे और बनी हाशिम की तन्ग गलियों में तमांचे खाये और दूसरी बार हाथ बन्धे गले में रस्सी, बैअत के लिये मस्जिद तक खेंचे गये। उसके बाद अपनी माँ के साथ बेदर्दी और मज़लूमियत से शहीद हुए और अपने दादा अली (अ. स.) के साथ पच्चीस साल इस तरह गुज़ारे कि तन्हाई व मज़लूमियत, जैसे आँख में कांटा या हलक़ की हडडी हो यहाँ तक कि इमामे हसने मुजतबा (अ.स.) को बार बार ज़हर दिया गया और उनके जनाज़े पर तीर बरसाये गये और इमामे हुसैन (अ.स.) जनाबे अब्बास व जनाबे ज़ैनब के साथ दुश्मनों के हसद को इस्लाम और मुसलमानों की ख़ातिर अपने सीने में दफ़न रखा और इन तीनों महान बुज़ुर्गों के साथ करबला आ गये और करबला में एक के बाद एक मुजाहिद के साथ तीर, नेज़े और तलवार के ज़ख़्म खाये और प्यासे रहे और क़ैदो बंद के साथ ताज़याने और तमाचे खाये, कूफ़ियों व शामियों के ज़बान व पत्थर के ज़ख़्म और इब्ने ज़्याद व यज़ीद की ना मुनासिब बातों को बरदाश्त किया। इमामे ज़माना (अ.स.) का मरसिया ऐसा है कि कोई भी इस तरह का मरसिया जब तक नहीं कह सकता जब तक कि सारे वाक़ऐ करबला के एक एक हिस्से को उसने ख़ुद से न देखा हो।

लेकिन वह आपसे दुश्मनी और जंग के लिए उठ खड़े हुए इसलिए आपने भी उनको ख़ुदा के अज़ाब से डराने और ख़ुदा की हुज्जत की ताकीद के बाद उनसे जंग की उन्होने आप से वादे और बैअत को तोड़कर ख़ुदा और आपके नाना को नाराज़ किया आप नेज़े व तलवार की चोट मारने के लिए उठे और बदकार लशकर वालों को हलाक कर दिया और मौला अली की तरह आपने भी ज़ुल्फ़ेक़ार से

मैदान की गर्दो गुबार को साफ़ कर दिया जब उन्होंने आप को नेक और मज़बूत दिल निडर व बे ख़ौफ देखा तो अपनी मक्कारियों के जाल आपके रास्ते मे बिछा दिये और अपनी चाल बाज़ियों के साथ आपसे जंग के लिए खड़े हो गये और उस मलऊन ने अपने लशकर वालों को हुक्म दिया कि आप को पानी तक पहुंचने न दें और आप से जंग के लिए जल्दी करें और जंग मे उँटों से उतरकर घोड़ों पर सवार रहें और आप से आमने सामने की जंग के लिए जल्दी करें उन्होने आप पर तीर और पत्थर तक बरसाये और आपकी तरफ़ लरज़ा पैदा करने वाले बुरी बला की तरह उनके हाथ बढ़े और आपके दोस्त व जानिसारों को क़त्ल करने और लूटने मे न तो आपकी इज़्ज़त और एहतेराम का ख़्याल रखा और न आप पर जुल्म के हराम या गुनाह होने से डरे और आप मैदान के गर्दो गुबार मे इसी तरह बढ़ते रहे और मुशकिलों को सहन करते रहे यहाँ तक कि आसमानों के फ़रिशतों ने आपके सब्र पर हैरत की फिर दुशमनों ने आप को चारो तरफ़ से घेर लिया और बहुत ज़्यादा ज़ख्मी किया अमान के रास्ते बन्द कर दिये कि अब आपका कोई मदद करने वाला भी नही बचा था आप हर बात को ख़ुदा के सुपुर्द करके सब्र कर रहे थे और अपने और अपने एहलेबैत और औरतों बेटों की तरफ़ से उनको रोक रहे थे यहाँ तक कि आपको घोड़े से गिरा दिया गया वह भी ऐसे कि आप के जिस्म को सर से पैर तक ज़ख्मी करके ज़मीन पर गिराया और घोड़ों से पामाल किया और ज़ालिमो ने तलवार से हमला किया जब आप का दम घुटने लगा तो आप ने ख़ेमों की तरफ़ देखा जो कुछ आप पर बीता उसे आपने अपने एहलेबैत से छुपाना चाहा मगर

आपका होशियार घोड़ा (दुलदुल) आप से दूर होकर ग़म की हालत में दुखी ख़ेमो की तरफ़ गया जैसे ही बीबियों ने उसे दुखी और ज़ीन ढला पाया ख़ेमों में कोहराम मच गया बाल बिखेर कर चेहरे को पीटने लगीं और उधर शिम्र मलऊन आपके सरे अक़दस को बदन से अलग कर रहा था तब ही आपका सर नोके नेज़ा पर चढ़ाया गया और आपके ख़ानदान को क़ैदी बना लिया गया सूरज की गरमी से चेहरे झुलस रहे थे मगर उनको जंगलो बयाबानों मे फिराया गया उनके हाथों को उनकी गरदनों से बाँध रखा था और इसी तरह बाज़ारो मे फिराया गया जी हाँ वह यानि इमामे ज़माना अपने शहीद दादा उनके ख़ानदान और मदद करने वालों की मज़लूमियत और मुसीबत के हरहर पल को जानते हैं और उसके गवाह है इसीलिए उन लोगों को इस तरह सलाम कहा करते हैं उन पर सलाम कि जिन के ख़ेमो की ताज़ीम ख़त्म कर दी गयी ग़रीबुल ग़ुरबा यानि परदेसियों को सलाम, शहीदुश्शुहदा को सलाम, उन पर सलाम जो नाजायज़ नस्लो के ज़रिए शहीद हुए उन पर सलाम कि जिन को आसमान के फ़रिशते रोते हैं उन पर सलाम कि जिनका गिरेबान फटा हुआ था सूखे होंठों को सलाम, उस मुसीबत को बरदाशत करने वालों को सलाम बे लिबास रह जाने वाले जिस्म को सलाम उस बह जाने वाले ख़ून को भी सलाम, टुकड़े टुकड़े होने वाले बदन के टुकड़ो को सलाम नोके नेज़ा पर चढ़ाये जाने वाले सरों को सलाम और उन दूध पीते बच्चों को भी सलाम।

लुटे हुए बदन को सलाम जंगलों की ख़ाक पर गिरने वालों को सलाम वतन से दूर रहने वालों को सलाम बे कफ़न दफ़न होने वालों

को सलाम ऐसे सरों को सलाम जो बदन से अलग कर दिये गये उन मज़लूमों पर सलाम जो बे यारो मददगार थे उन पर सलाम कि जिन पर जिबरील भी गर्व (फ़ख़्र) करते थे उन पर सलाम कि मीकाईल जिनसे उनके झूले में बातें करते थे उन पर सलाम कि जिन से वादा करके तोड़ दिया गया उन पर सलाम कि जिन की ताज़ीम नहीं की गई उन पर सलाम कि जिनका ख़ून बेदर्दी से बहाया गया उन पर सलाम के जिनके ज़ख़्मों के ख़ून से उनका गुस्ल हुआ उन पर सलाम कि जिनकी प्यास नेज़ो से बुझाई गयी उन पर सलाम कि जिनका ख़ून मुबॉह कर दिया गया उन पर सलाम की जिन के सर को पीछे से काटा गया उन पर सलाम कि जो दीन की हिमायत मे अकेले रह गये उन पर सलाम के जिन के बदन को ख़ाना बदोशों ने दफ़न किया उन पर सलाम की जिन की दाढ़ी ख़ून से ख़िज़ाब की गई उन पर सलाम की जिनकी शहरग को काट दिया गया उन पर सलाम कि जो मिटटी मे आलूदा हो गये उस बदन पर भी सलाम की जिस के कपड़े लूट लिए गये उन दाँतों को सलाम जिन की बेहुरमती की गई उसको सलाम जिसका दिल आपकी मुसीबत की वजह से दुखी है और आपकी याद मे उसकी ऑखों मे आँसू हैं दुखों मुसीबत और परेशानी मे घिरे हुए का भी सलाम जी हॉ इस मैदान के एक एक जानलेवा मन्ज़र को इमामे ज़माना ने देखा जिस इमाम का दिल ज़ख्मी हो गया यहॉ तक कि अपने को दुखी और मुसीबतों मे घिरा हुआ कहने लगे इससे इमाम हुसैन की सख़्त और बेहद मुसीबतों का पता चलता है।

और अगर उनकी एक मुसीबत पर ज़िन्दगी भर भी रोऐं और इमाम ज़माना की तरह से दुखी और मुसीबतों मे घिरे रहें और इसी

हालत में एक ही मुसीबत पर रोते रोते मर जायें तब भी हक़ अदा नहीं होगा और इतनी सख़्त और बड़ी मुसीबतों में मर जाना सही कैसे न होगा जब कि इमामे ज़माना मज़लूम दादा से मुख़ातिब होकर इस तरह फ़रमाते हैं –''मै आप को सुबह शाम रोता हूँ और आँसुओं के बदले ख़ून के आँसू बहाता हूँ आप की मुसीबतों पर बहुत ज़्यादा अफ़सोस और उन पर भी अफ़सोस कि जिन्हाने आपको इन मुसीबतों में घेरा मैं आपकी मुसीबतों से बहुत दुखी हूँ और इन मुसीबतों और तकलीफ़ो ही की वजह से मैं इस दुनिया से भी चला जाऊँगा इसीलिए मुसीबते अज़ीम ''बड़ी मुसीबत'' और मौहम्मदो आले मौहम्मद पर किये जाने वाले जुल्म को याद करते वक़्त हमारी ज़िम्मेदारी वही है जो हमारे इमामे ज़माना (अ.स.) ने बताई है यानि रोना रूलाना मुसीबतों में समझना दुखी होना परेशान और इसी हालत में मर जाना, लेकिन क्या इमामे हुसैन (अ.स.) की सख़्त और जान लेवा मुसीबत में मर जाना सही है? तो जनाबे ज़ैनब जो बेहद दुखी थीं और इमामे ज़ैनुल आबेदीन इमामे बाक़िर और हर वह कि जो इनके ख़ानदान से करबला मे मौजूद थे और उन्होंने मुसीबतों को देखा तो वह क्यों नहीं मरे और इमामे ज़माना (अ.स.) का रोना बल्कि ख़ून के आँसू रोना यहाँ तक कि इसी हालत मे दुनिया से चले जाने को सही मानते हैं आख़िर वह दुनिया से क्यों नहीं चले गये हम इस पर (सबसे बड़ी मुसीबत) की बहस मे लिखेंगे और इस बड़े राज़ को खोलेंगे और अज़ादारी के बारीक नुक़तों को समझेंगे ताकि सच्चे अज़ादारों मे हम भी मानें जायें।

भाग – 2

अज़ा और अज़ादारों के मरतबे 46

अज़ादारी का पहला मरतबा 46

अज़ादारी का दूसरा मरतबा 49

अज़ादारी का तीसरा मरतबा 50

अज़ादारी और उसके लिये ख़तरे (मुसीबतें) 51

एक अच्छे और सुधारक काम की शर्तें 53

तमाम ख़राबियों (आफ़तों) की माँ (जड़) 54

काम में आने वालों की कमज़ोरियाँ 56

जब कोई अमल (नेक काम) आदत में बदल जाए 56

ख़राबियों की मौजूदगी किसी काम को
छोड़ने का सबब नहीं होती 59

तीसरे मरतबे में अज़ादारी को आफतें (ख़तरे) 60

दुश्मन का मजालिसे अज़ा की मुख़ालफ़त को
मानना 64

इमाम हुसैन (अ.स.) की नज़र में अव्वले वक़्त नमाज
पढ़ने की अहमियत और अज़ादारों की उससे लापरवाही 71

इस्लाम में हर वह मुस्तहब जिससे वाजिब को
नुक़सान पहुंचे वह हराम है 73

इमाम हुसैन (अ.स.) का पैग़ाम अपने तमाम चाहने
वालों के लिये 74

अज़ा और अज़ादारों के मरतबे

अज़ादारों के भी अलग–अलग दर्जे हैं जो इन्सानियत के नाते अज़ादार के मरतबे, मक़ाम और मंजिल और अल्लाह के नजदीक अहमियत व इमाम हुसैन (अ.स.) से क़रीबी होने का पता देते हैं।

जबकि अज़ादारी के सभी दरजे इलाही सवाब के हक़दार हैं और अज़ादार चाहे जिस मरतबे पर क्यों न हों उसको सवाब जरूर मिलेगा। आमतौर से अज़ादारों की 6 क़िस्में हैं जिनमें से इस किताब में पाँच ही को लिख रहा हूँ और छठी क़िस्म को किसी दूसरी किताब में लिखूँगा जोकि इरफ़ान व अख़लाक़ के सबंन्ध में है।

अज़ादारी का पहला मरतबा

इस मरतबे में अज़ादार इमाम हुसैन (अ.स.) पर बीती मुसीबतों पर अपने दिल में दुखी और नाख़ुश रहता है और अपने ग़म व ग़ुस्से को थोड़ा सा भी ज़ाहिर नहीं करता यह मरतबा अज़ादारी का सबसे कम दरजा है क्यूंकि इसके बाद वाला दरजा इमाम के दुश्मनों का दरजा है यानी ऐसा मरतबा कि कोई आदमी मसाईबे हुसैनी को जानने के बाद भी दुखी न हो बल्कि इस पर राज़ी रहे। हम इसी गिरोह के लिये ज़ियारते वारिसा में इस तरह पढ़ते हैं :–

ख़ुदा उस कौम पर लानत करे कि जिसने आपको क़त्ल किया और ख़ुदा उस क़ौम पर भी लानत करे कि जिसने इस हादसे को सुना फिर भी इससे राज़ी हो गई।

वह लोग जो की अज़ादारी के पहले मरतबे पर हैं चाहे वह किसी भी दीन व मज़हब पर क्यों न हों मगर अल्लाह के नज़दीक

मुसीबते इमाम हुसैन (अ.स.) पर दिली रंजीदगी के सबब उनके अक़ीदे की मुनासिबत से सवाब और बदला मिलेगा ।

हम इस बारे में आयतुल्ला बैहजत का एक वाक़ेआ नक़्ल करते हैं।

''नजफ़े अशरफ़ के क़रीब जहां दो दरया, फुरात व दजला मिलते हैं एक आबादी बनाम ''मुसय्यब'' है वहाँ का एक शिया मर्द हर शबे जुमा ज़ियारते मौलाए मुत्तक़ियान (अ.स.) को नजफ़ जाता था। उसके रास्ते में एक सुन्नी का मकान था चूंकि वह जानता था कि यह ज़ियारत के लिए नजफ़ जाता है लिहाज़ा वह उसको रास्ता गुज़रते छेड़ता और मज़ाक उड़ाता यहां तक कि एक मरतबा उसने हज़रत अली (अ.स.) की शान में गुस्ताखी करने की जसारत की जिस पर शिया बहुत नाराज़ हुआ जब वह आक़ा की ख़िदमत में पहुंचा तो बड़ी बेताबी के साथ फ़रियाद की कि आप तो जानते ही हैं कि वह दुश्मन क्या करता है ?

फिर उसी रात को उसने आक़ा को ख़्वाब में देखा और शिकायत की तब आक़ा ने फ़रमाया हमारे ऊपर उसका एक हक़ है इसलिए वह जो कुछ भी करेगा हम उसकी सज़ा उसे दुनिया में नहीं दे सकते। शिया ने कहा हॉ वह इतनी जसारते करता है क्या इसी का आप पर हक़ बनता है? तो हज़रत ने फ़रमाया नहीं बल्कि वह एकदिन फुरात व दजला के मिलने की जगह बैठा हुआ फुरात को देख रहा था कि अचानक उसे करबला और इमाम हुसैन (अ.स.) पर पानी बन्द होने का ख़याल आ गया तो उसने अपने आपसे कहा कि ''उमरे साद ने ये काम अच्छा नहीं किया कि उन सब को प्यासा क़त्ल किया

कितना अच्छा होता कि उनको क़त्ल करने से पहले पानी दे देता'' फिर उसे रंज हुआ और उसकी आँख से एक आँसू निकला इस वजह से उसका हम पर एक हक़ है कि हम उसे सज़ा नहीं दे सकते। तो उस शिया ने कहा कि मैं ख़्वाब से बेदार हुआ और घर की तरफ़ चला वापसी पर फिर उसी सुन्नी से मुलाक़ात हुई तो उसने छेड़ने के अन्दाज़ में कहा कि ज़ियारत कर ली अपने आक़ा की और मेरा पैग़ाम भी पहुंचा दिया अपने आक़ा तक या नहीं? उसने कहा क्यूँ नहीं बल्कि उनका पैग़ाम भी लाया हूँ वह हंसा और कहा कि कहो क्या पैग़ाम है? तो शिया ने आप बीती सुनाई जब वह इमाम का वह फ़रमान बता रहा था कि उसने पानी को देखा तो करबला को याद करके दुखी हुआ तो उस सुन्नी ने सुना और सर झुका कर कुछ सोच में पड़ गया फिर बोला कि ए खुदा उस वक़्त तो वहाँ कोई भी नहीं था और ना ही मैंने यह बात किसी को बताई आक़ा को कैसे मालूम हुआ। फिर फ़ौरन उसने कहा ''अशहदो अनलाइलाहा इल्लल्लाह व अन्ना मुहम्मदररसूलुल्ला व अन्ना अलियन अमीरूल मोमेनीन वलीयुल्लाह व वसीयो रसूलिल्लाह (स0अ0) और वह शिया हो गया''

ऐहलेबैत की मन्ज़िलत इतनी अज़ीम है कि अगर उनके लिए कोई छोटे से छोटा काम भी किया जाये तो उनकी तरफ़ से उसका बहुत ज़्यादा बदला मिलता है लिहाज़ा अगर कोई काफ़िर भी उनकी कोई ख़िदमत करे या उनकी शान के मुताबिक़ अदब से पेश आए तो दुनिया ही में उसको बदला मिल जाता है। क्यूँकि काफ़िर की आख़रत में निजात नहीं होगी और अगर किसी में थोड़ी सी भी पायदारी और आमादगी हो तो अकसर एहलेबैत की तरफ से बदला उसकी हिदायत

की वजह बन जाती है। चाहे काफ़िरों के कुछ नेक काम या ख़िदमात जो दीन या एहलेबैत के लिए होते हैं तो अगर वह काफ़िर हिदायत पाने के क़ाबिल नहीं होते तो आख़रत में उनके अज़ाब में कमी ही उनकी नेकियों की जज़ा(बदला) हो जाती है।

अज़ादारी का दूसरा मरतबा

इस मरतबे में अज़ादार अपने दुख और नाराज़गी को मुख़तलिफ़ शक्लों से जाहिर करता है जैसे चेहरे से दुखी होना, रोना, रूलाना, अज़ा के कपड़े पहनना, मातम करना और इन कामों को कभी वह अकेले तो कभी दूसरों के साथ मिलकर अज़ादारी करता है। इस मरतबे में अज़ादार को अपने अन्दर एक अजीब सा एहसास होता है जो उसके और इमाम हुसैन(अ.स.) के बीच एक ख़ास नाता पैदा करता है और अज़ादार इस मरतबे में उन्सियतों मोहब्बत के साथ लगाव और इमामे हुसैन (अ.स.) से वास्ता नाता भी पैदा करता है और यही अन्दरूनी निस्बतों मोहब्बत उसको इमाम हुसैन(अ.स.) पर रोने और उनकी अज़ादारी में शिरकत करने के लिए तैयार करती है।

अज़ादारी में यहूदी व ईसाइ बल्कि हर मज़हब का आदमी जो इमाम हुसैन (अ.स.)को रोता है और इमाम हुसैन(अ.स.) से अक़ीदत भी रखता है यह सब इस हक़ीक़त की निशानी है कि इमाम हुसैन (अ.स.) उन सबके लिए एक ''जाने पहचाने मुसाफिर'' हैं और हक़ीक़त भी यही है कि तमाम मासूमीन ख़ास तौर से सैय्यदुश्शुहदा सभी इन्सानों के अन्दर एक ख़ास असर रखतेहै जिसके बारे में हमने अज़ादारी के चौथे मरतबे में काफ़ी वज़ाहत की है।

आम तौर से जब अज़ादार के दिल में इमाम हुसैन (अ.स.) की मौहब्बत और उसकी अज़मत जोश मारती है तो वह धीरे धीरे अज़ादारी के तीसरे मरतबे की तरफ खिंच आता है।

अज़ादारी का तीसरा मरतबा

इस मरतबे में शिया हज़रात आते हैं कि वो ऐसे अज़ादार हैं कि जो उन ज़ालिमों से नफ़रत के साथ उनको बुरा कहते हैं कि जिन्होंने सैय्यदुश्शुहदा और उनके साथियों बल्कि तमाम एहलेबैत पर जुल्म किये और मुसीबतों में मुब्तला किया और यही वजह है कि जब अज़ादार दूसरे से तीसरे मरतबे पर पहुंचता है तो उसे इमाम हुसैन (अ.स.) की शख़्सियत की जानकारी व मारेफत हासिल हो जाती है और आप और आपके उसूल पर पूरा एतक़ाद हो जाता है।

इमाम हुसैन(अ.स.) के लिये अच्छी जानकारी पक्का एतक़ाद और आपके बुलन्द दरजे की जानकारी, आपके नसब के साथ यज़ीद व यज़ीदियों से जंग के लिये उठना वग़ैरा के मालूम होने पर अज़ादार अज़ादारी के दूसरे मरतबे से तीसरे मरतबे पर पहुंचता है इसी तरह जिन बातों को बताया जा चुका उनके अलावा जब अज़ादार को इमाम हुसैन (अ.स.) से ख़ास लगाव और मौहब्बत हो जाती है तो उसकी भावना और एहसास की वजह से उसकी आंखों में आंसू भर आते हैं यहां तक कि वह अज़ादार अपने अन्दर एक तरह से इमाम हुसैन (अ. स.) के करम और दूसरे एतबार से रोने व दुखी होने के साथ इस बात पर मजबूर हो जाता है कि वह क़ातिलों पर लानत करे और इस बात को ज़ाहिर करने का मोहताज हो जाता है।

इस मरतबे में अज़ादारी, सवाब हासिल करने, अपनी दुआ के कुबूल होने या आदाब बजा लाने की नियत से की जाती है इन तीनों मरतबों को लिखने से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि इन तीनों मरतबों में से असल सिर्फ़ मोहब्बत और एहसास ही की मंज़िल है फन्न व तहक़ीक़ के रूप से भी इन नौहों और आशूर से सम्बन्धित शेरों से यही पता चलता है कि अज़ादारी इन तीनों मरहलों में सिर्फ़ मौहब्बत व एहसास का नाम है और अज़ादार को इससे बुलन्द मरतबा हासिल नहीं हो सका है।

अज़ादारी और उसके लिए ख़तरे (मुसीबतें)

इस मौक़े पर यह मानना होगा कि अज़ादारी की जानकारी का हिस्सा ख़त्म हो गया और भावनाओं को ही सर का ताज बना दिया और ज़ाहिरदारी पर तकया करते हुए अज़ादारी और उसकी अहमियत की हिक़मत और फ़लसफ़े को छोड़ दिया है और रोने व सोगवारी करने को बदल दिया एक अच्छे व कारामद वसीले से एक असली मक़सद को। जिसकी वजह से इस तरह की मजलिसों की ख़ासियत और उसका बाक़ाएदा असर ख़त्म हो गया लिहाज़ा यह एक, बार–बार की जाने वाली सुन्नत और एक मज़हबी आदत में बदल गई और जब कोई भी नेक काम और मज़हब को जिन्दा रखने वाली इबादत अगर आदत बन जाए चाहे अजादारी हो नमाज़ो रोज़ा, तिलावते कुरान या हज वग़ैरा और उनके असली मक़सद से लापरवाही बरती जाए तो यह एक इन्सान से लेकर पूरे समाज के लिए ख़तरनाक है।

बेशक ख़ुदा और मासूमीन के हमारे लिये जितने भी हुक्म हैं वह सब हमारे ही फ़ायदे के लिये हैं और वह भी इसलिए हैं कि अगर हम उन

अहकाम का लिहाज़ रखते हुए उन पर अमल करें तो ख़ुद हमारे अन्दर निखार पैदा होगा और हम हिदायत पाने वाले बन जाऐंगे मगर इस तरफ़ से भी हमें बिल्कुल बेध्यान नहीं होना चाहिए कि हर अच्छे काम को करने में कुछ ऐसी मुसीबतें और परेशानियां ज़रूर आती हैं कि जो अगर इस अच्छे काम में शामिल व दाखिल हो जाऐं तो सिर्फ अच्छे काम ही को नहीं बिगाड़तीं बल्कि परेशान करने और नुक़सान देने वाली चीज़ों में बदल जाती हैं।

अमीरूल मोमेनीन ने इस अहम और ख़ास नुकते से सबको ख़बरदार किया है कि हर चीज़ के लिए एक न एक परेशानी है। बेशक हमें अच्छाइयों और नेक कामों का इरादा रखना चाहिये लेकिन इस अहम चेतावनी से भी हमें बेख़बर नहीं होना चाहिए कि अगर हम किसी भी अच्छी, फ़ायदेमंद या क़ीमती चीज़ को हासिल करें तो हमें उसको मुसीबतों और परेशानियों से बचाने के लिये तैयार रहना चाहिए वरना हम अपने मक़सद में कामयाबी हासिल नहीं कर सकेंगे और उसका नतीजा उल्टा होगा।

एक अच्छे और सुधारक काम की शर्तें :–

1. हर काम को करने के लिए कुछ खास और ज़रूरी शर्तें होती हैं ज़ाहिर है कि सिर्फ़ ख़ुदा (ख़ालिक व मालिक होने के एतबार से) और मासूमीन, अल्लाह के नुमाइन्दे और ख़ास लोग होने के एतबार से ये ही हज़रात किसी नेक और फ़ायदेमंद काम को आख़िर तक पहुंचाने की पूरी पूरी शर्तें जानते और बयान कर सकते हैं।

ख़ास उसूल और शर्तों से मुराद सारे क़ानून और वह बातें हैं जो उस काम के असर करने और मज़बूत होने के ज़िम्मेदार हों।

2. यह उसूल और शर्तें इस तरह की हों जो उस अच्छे काम से पहले या उसके बीच आने वाली परेशानियों और ख़राबियों को दूर कर सकें इस्लाम की नज़र में एक काम को अच्छी तरह से करना ही काफ़ी नहीं है क्योंकि एक अच्छा काम अपने सभी क़ायदे क़ानून के मुताबिक़ हो जाये और उसका एक अच्छा असर भी ज़ाहिर हो लेकिन सबसे ज़रूरी बात यह है कि यह अच्छा असर हमेशा के लिय मज़बूत और बाक़ी रहने वाला हो। मुमकिन है कि हम एक अच्छे काम के ज़रिये एक अच्छा और फ़ायेदमंद नतीजा हासिल कर लें लेकिन कुछ समय बाद कुछ ख़राबियाँ और दुश्वारियाँ उस अच्छे और फ़ायदेमंद असर को ख़त्म कर दें और उसे एक क़ीमती चीज़ के मुख़ालिफ़ या ख़राब करने वाली चीज़ों में से बना दें इसलिए सिर्फ़ एक अच्छाई को हासिल करना या नेक होना, एक अच्छे काम का करना, एक रूहानी क़ुदरत या नेमत वाला होना ही काफ़ी नहीं है बल्कि सबसे ज़्यादा ज़रूरी यह है कि हम उसकी हिफ़ाज़त उन ख़राबियों और मुसीबतों से करें कि जो उसको अपने से उल्टा असर दिखाने के लिए मजबूर कर रही हैं।

इस बात से हमें यह नतीजा मिलता है कि हर अच्छी व फ़ायदेमंद चीज़ों को तीन तरह की ख़राबियां ख़त्म कर सकती हैं।

1. शुरू में खराबी 2. साथ में ख़राबी 3. और बाद में हो जाने वाली ख़राबी।

ख़राबी पहचानने की बहस बड़ी और लम्बी है जिसकी इस छोटी सी किताब में समाई नहीं है। लेकिन जो ज़रूरी है वह यह कि हमें यह मालूम होना चाहिए कि सारे वाजिबात और मुस्तहब्बात की तरह अज़ादारी को भी ख़राब करने वाली कुछ ख़राबियां ज़रूर मौजूद हैं कि अगर वह इसमें दाख़िल हो गईं तो सिर्फ़ उसके अच्छे और फ़ायदेमंद नतीजे ही हम तक नहीं पहुंचेगें बल्कि उसके उल्टे नतीजे होंगे जिनकी उम्मीद हम अज़ादारी के बाद करते हैं तो फिर हमें एक ख़राबी और ख़तरनाक हालत से दो चार होना पड़ेगा या कम से कम हम उस रहमत से तो महरूम हो ही जाऐंगे जो मासूमीन की नज़र में अज़ादारी से समाज या किसी एक के लिए हो फिर हमारी अज़ादारी अपनी ऊँची सीमा तक नहीं पहुंच पायेगी।

इस जगह अज़ादारी या तमाम इबादतों को ख़राब करने वाली ख़राबियों को तफ़सील से लिखने का इरादा नहीं रखते लेकिन एक ऐसी बुनियादी ख़राबी को मुख़तसर इशारे की शक्ल में बयान करेंगे कि जो सारी ख़राबियों और परेशानियों की जड़ है।

<u>तमाम ख़राबियों (आफ़तों) की माँ (जड़)</u>

किसी भी काम के फ़ायदेमंद होने की ख़ास शर्त यह है कि उस काम के तमाम उसूल और क़ानून का लिहाज़ रखा जाय जो उसके अच्छे

और फ़ायदेमंद नतीजों के ज़िम्मेदार हैं। इसी बिना पर सबसे बड़ी ग़लती और असली ख़राबी जो तमाम ख़राबियों की जड़ है वह यह कि हम किसी भी काम को शुरू करने से पहले उसके आदाब और उसूलो कवानीन पर ग़ौर नहीं करते और उस काम को काफ़ी समय तक करते रहते हैं। हमें इस बात पर तवज्जो रखनी होगी कि अज़ादारी या तमाम वाजिबातो मुस्तहब्बात ही हमारा असली मक़सद नहीं हैं बल्कि यह सब तो इन्सानी हिदायत और तरक़्क़ी के लिये एक वसीला है और यह ज़ाहिर है कि सिर्फ़ हर वसीला अपनी शर्तों और उसूलो क़ानून के साथ हमें मक़सद तक पहुंचा सकता है कि जिसके अच्छे और फ़ायदेमंद नतीजे हों।

और यह भी नहीं है कि हर अच्छा व नेक काम हर एतबार से हमारी हिदायत का सबब बने चाहे वह वाजिब या मुस्तहब ही में से क्यों न हो। मुक़ददस शरीअत और कोई अक़लमंद भी इस तरह का फ़ैसला नहीं करेगा और ऐसे किसी दावे को क़बूल भी नहीं करेगा। अपने मतलब को और ज़्यादा रौशन करने और इस बात को वाज़ेह करने के लिये कि कोई काम भी उसके उसूलो क़ानून को पहचाने बग़ैर फ़ायदेमंद नहीं हो सकता। हम इस रिवायत को पेश करते हैं।

इमामे सादिक़ (अ0स0) ने फ़रमाया– ''ख़ुदा मारेफ़त (जानकारी) के बग़ैर अन्जाम पाने वाले अमल को क़बूल नहीं करता'' इसी तरह हमने भी कहा है कि किसी भी काम को उसके नतीजे या सही उसूल को पहचाने बग़ैर अन्जाम देना उसमें मुख़तलिफ़ ख़राबियों के शामिल करने का सबब बन जायेगा।

काम में आने वालों की कमज़ोरियाँ अज़ादारी क्योंकि दीन की बक़ा और एहलेबैत के पैग़ाम का मज़बूत व बेहतरीन वसीला और ज़रिया है लिहाज़ा इससे वह फ़ायदे जिनका एहलेबैत को इन्तेज़ार है उस वक़्त मिल सकते हैं कि जब वो अपने तमाम उसूलो शराईत के साथ अन्जाम पाये और अगर अज़ादार या इन कामों को अन्जाम देने वाले, उन खास शर्तों से अनजान होंगे तो फिर वह अज़ादारी से अपना सही नतीजा नहीं ले सकते और अगर उसका नतीजा ना मतलूब या खतरनाक ना भी हो तब भी कम से कम वह अज़ादारी को एक कमज़ोर या बेनतीजा काम में तबदील कर लेंगे, इमाम अली (अ0स0) ने किसी काम के करने वालों की कमज़ोरियों को उस काम की ख़राबी और बरबादी के बराबर माना है। जैसा कि आप का फ़रमान है –''किसी काम की ख़राबी उस काम के ज़िम्मेदारों की ना लाइकी का सबब है।''

जब कोई अमल (नेक काम) आदत में बदल जाए

किसी काम के करने वालों की कमज़ोरियों के अलावा जो कि उनकी जिहालत और क़ायदे से अन्जान होने की वजह से ख़राबी वजूद में आई और एक अच्छे काम के उमदा नतीजे और अहम फ़ायदे ख़त्म हो गए, एक दूसरी और बड़ी ख़राबी यह पैदा हुई कि वह काम आदत में बदल जाए और जब तक वह ज़िम्मेदारान उस काम के उसूल और खास शर्तों से बख़ूबी वाक़िफ़ न होंगे उस वक्त तक वह ना एहल और बेकार ही रहेंगे और उनकी यह ना एहली और बेकारी उस काम को बग़ैर इस बात पर तवज्जो किये अन्जाम देने का सबब बनेगी कि उसके लिए क्या होना चाहिए और क्या नहीं होना चाहिए और यह

सिर्फ एक रसम, आदत या सुन्नत (कम फ़ायेदा या बे फ़ायेदा) या ख़ुदा ना ख़ास्ता एक ख़तरनाक और नुक़सान देने वाली आदत में तबदील न हो जाये ।

अमीरूल मोमेनीन की नज़र में किसी काम की ख़ास ख़राबियों में से एक ख़राबी जो जिहालत की वजह से पैदा होती है वह किसी काम को आदत के ग़ालिब आने की वजह से अन्जाम देना है।अगर अज़ादारी अज़ादारों या उसमें किसी भी तरह शिरकत करने वालों के लिये एक आदत में बदल गई तो फिर किसी को भी यह फ़िक्र न होगी कि वह अज़ादारी के मक़ासिद तक पहुँचे या यह समझे कि एहलेबैत ने किस तरह अज़ादारी करने का हुक्म दिया है और अज़ादारी की क्या ख़ास बातें या फ़ायदे हैं।

इस बात से यह नतीजा निकलता है कि अज़ादारी से अच्छी तहरीक और हिदायत याफ़ता शर्तों के बजाय और काहिली पैदा होती है और वसीला होने के बदले मक़सद में तबदील हो जाती है और जब अज़ादारी असल मक़सद बन जाए तो मासूमीन के मुताबिक नतीजों और फ़ायदों से दूर हो जाएगी और खुद एक मुस्तक़िल चीज़ में बग़ैर उन ख़ासियतों और नतीजों के तबदील हो जायगी ऐसे मौके पर अज़ादार यह ख़्याल करते हैं कि सिर्फ अज़ादारी भी तमाम आमाल के मुकाबिल नमाज़ जैसी एक मुसतक़िल इबादत है अब अगर नमाज़ या किसी भी वाजिब इबादत को इसकी वजह से नुक़सान पहुंचे तो कोई हरज नहीं है और अगर यह मुख़तलिफ ख़राबियों से भी दो चार हो जाये लेकिन अज़ादारी की शक्ल बाक़ी रह जाये तब भी काफ़ी है और ऐसी सूरत में अज़ादारी को एक सवाबो इबादत और एक अहम

मक़सद समझा जाता है चाहे उसमें झूठ, तहरीफात, गुनाह और इख़्तेलाफ़ात भी क्यूं न शामिल हों।

इस तरह की अज़ादारी से अज़ादार अल्लाह और एहलेबैत से सवाब के तालिब बल्कि बहुत ज़्यादा उम्मीदवार बन जाते हैं यानी बजाय इसके कि ख़ुदा व एहलेबैत के शुक्रगुज़ार हों कि उन्होंने इनको ऐसी मजलिसे अज़ा करने और उसमें शरीक होने की तौफीक दी है बल्कि खुदा व एहलेबैत पर एहसान जताने लगते हैं इस तरह के लोग यह भी सोचते हैं कि अगर तमाम वाजिब काम चाहे अल्लाह के हुकूक़ हों या बन्दों के उन्हें अदा ना भी करें तो भी कोई हरज इसलिए नहीं कि वह इमाम हुसैन (अ.स.)की अज़ादारी में मशगूल हैं बस यही उनके लिये काफ़ी है और एहलेबैत की बारगाह में काम करना चाहे उनके मक़ासिद से मेल न खाता हो फिर भी तमाम वाजिबात में कमीं करने की इन्सान को इजाजत देते हैं और उसको तमाम वाजिबात में कोताही करने पर डांट फटकार या सजा से माफ,समझते हैं।

हालांकि किसी काम का आदत में बदल जाना या मकसद व नतीजे से ख़ाली होना यह सिर्फ अज़ादारी ही से मख़सूस नहीं है बल्कि हर वाजिब व मुस्तहब काम कि जो उसके असली मक़ासिद की तरफ तवज्जो किये बिना या उसके ख़ुसूसी कानून और शर्तों का पालन किये बग़ैर अन्जाम दिया जाय तो न सिर्फ उसके वजूदी फलसफ़े को खो देंगे और न कोई फ़ायदा ही हासिल होगा बल्कि उसके खराब और नुकसान देने वाले नतीजे पैदा होंगे जैसा कि पैग़म्बरे अकरम ने भी फ़रमाया है– ''जिसकी नमाज उसे बुरे और ना पसंद कामों से नहीं रोकती उसको अल्लाह से दूरी के सिवा कुछ नहीं मिलता।''

ख़राबियों की मौजूदगी किसी काम को छोड़ने का सबब नहीं होती

इस तरह का ख़्याल हरगिज़ नहीं होना चाहिय कि अज़ादारी या किसी भी नेक काम में कोई बुराई या ख़राबी का शामिल या दाखिल होना मुमकिन है या हम उस बुराई व ख़राबी को नहीं जानते लिहाज़ा उस काम को छोड़ दें ये फैसला एक शैतानी सोच और बेहद ख़तरनाक है मुमकिन है कि शैतान या वह लोग अज़ादारी या दूसरी इबादतों के मुख़ालिफ़ हैं वह इस बात को बहाने के तौर पर इस्तेमाल करें और कहें कि (माज़ल्ला) अज़ादारी बेकार है।

बुनियादी तौर से किसी काम की ख़राबियों, रूकावटों और उनके अलग करने के तरीक़ों की पहचान उसी वक़्त मुमकिन है कि जब वह काम अन्जाम दिया जाए या उसको अन्जाम देते हुए कुछ वक़्त बीत गया हो। जैसा कि हम इसी किताब में लिखेगे कि अज़ादार की तरक़्क़ी व अज़ादारी की बुलन्दी का सफर धीरे धीरे चन्द मरहलों में होता है। जब तक कोई काम शुरू न हो उस वक़्त तक न तो उसकी ख़राबियों को पहचाना जा सकता है न ही उन्हें दूर किया जा सकता है। इस्लामी समाज को बच्चों, छोटों, गलियों, सड़कों, मुस्लिम व गैर मुस्लिमों यहां तक कि अज़ादारी के पांचवे मरतबे या उससे भी आगे तक यानी हर किस्म की अज़ादारी की ज़रूरत है।

अज़ादारी के बुलन्द मरतबे भी इसी तरह वजूद में आते हैं कि जैसे हर अच्छे काम या हर इबादत अपने निचले मरतबों पर मुन्हसिर होती है दूसरे लफ़्ज़ों में इस तरह कहा जाये कि निचले मरतबों से गुज़रे बग़ैर बुलन्द और ऊंचे मरतबे हासिल नहीं हो सकते।

तीसरे मरतबे में अज़ादारी को आफतें (ख़तरे) अफ़सोस कि तीसरे मरतबे में वह तहरीफ़ें, ग़लत रस्में और ख़तरनाक बिदअतें पैदा हो गईं कि जो अज़ादारी के फ़लसफे और ज़िहादे हुसैनी की रूह के बिल्कुल ख़िलाफ़ है जैसे मनघड़त या ग़लत वाक़ेआत को पढ़ना, ऐसे काफ़िराना शेर व नौहे पढ़ना कि जिनको आयतुल्ला या ओलमा ने रोका हो या ऐसे शेर व नौहे जों इमाम हुसैन (अ.स.) की शख़्सियत व जिहाद के लिये ना मुनासिब हों या ऐसी गिरी हुई हरकतें करना जिनसे तबलीग़ के बदले इस्लाम को नुक़सान पहुँचे और शीयत या इस्लाम के दुश्मनों को ग़लत फ़ायदा उठाने का मौका मिले इस तरह की तमाम रस्में और बाते ख़तरनाक हैं।

सबसे ज़्यादा अफ़सोस तो इस बात पर है कि ग़लत और रूहे दीन के मुख़ालिफ़ बातों को इमाम हुसैन (अ.स.) के नाम से अन्जाम दिया जाता है वह भी इस दलील के साथ कि यह इमाम हुसैन (अ.स.) की राह या उन्ही के लिये है इसलिए उसमें सवाब भी है और उनकी खुशनूदी का सबब भी, इस तरह की ख़राब बातें हर जगह देखी जा सकती हैं जैसे भारी–भारी मुख़तलिफ़ क़िस्म के अलम उठाना और फिर फ़र्ख़ करना कि किसका अलम ऊंचा, अच्छा या ज़्यादा हार फूल वाला था या दूसरी रसमों में फ़र्ख़ करना जंजीर व क़मा के बाद एक दूसरे पर बरतरी हासिल करने की कोशिश करना वग़ैरा।

सबसे अहम सवाल यह है कि शहीदे राहे हक की सोगवारी में इन ख़राबियों और बुराईयों को शामिल करने वाला कौन है? (लेखक) को यक़ीन है कि इस बात के जवाब में उमदा और सही दलीलों में से एक दलील यह है कि अज़ादारी में ग़लत रसमें ,बिदअतें और तहरीफ़ें

सिर्फ़ इसलिए दाख़िल हो गईं कि हमने अज़ादारी को सिर्फ एहसासात, मौहब्बत और रोने रूलाने तक महदूद कर दिया है।

इस मरतबे में रोने रूलाने के अलावा किसी दूसरी चीज़ को असली हैसियत हासिल नहीं और वही अज़ादारी का असली जज़्बा भी है और इसके जिहादी और मारेफ़ती पहलू या तो बिल्कुल हैसियत नहीं रखते या बहुत कम से कम रखते है क्योंकि इस मरतबे में ज़्यादातर वाक़ेआए करबला के तजज़िये को अहमियत दी जाती है उसके सबक़ और पैग़ामात को नहीं, और यह ज़ाहिर है कि जब अज़ादारी का अस्ल मक़सद रोना और रूलाना ही होगा तो शैतान और बहकाने वाला नफ़स, झूठ और तहरीफ, नई इजादात ना पसन्द रस्मों, अश्आर, जो हक़ीक़ते दीन और मक़सदे इमामे हुसैन (अ.स.) से गैर मरबूत हो उन पर उकसाएगा और जब रोना एक अच्छे और कारामद वसीले के बजाए ''मक़सद में तबदील हो जायगा तो अज़ादारी में तबदीली और उसके असली मक़सद से दूरी के असबाब फराहम हो जाऐंगे।

इस मरतबे में अज़ादारों और सभी बानियान व मुन्तज़ेमीने मज़लिसे अज़ा के नज़दीक इस बात की कोई अहमियत नहीं होती कि मासूमीन ने अज़ादारी करने या इन रस्मो को अदा करने, या सभी मुक़ददस मुनासिबतों पर ज़िक्रे करबला की ताक़ीद क्यूं फरमाई है।

दूसरे लफ्ज़ों में यूं कहा जाये कि इस क़िस्म की मजालिस में इमाम हुसैन(अ.स.) के क़याम के अस्ल मक़सद, उनके लिये अज़ादारी के मक़सद, बल्कि तमाम एहलेबैत से मुताल्लिक़ ग़फ़लत की जा रही है।

इस मरतबे के अज़ादार इमाम हुसैन (अ.स.) पर रोने और उनकी अज़ादारी की अहमियत के बारे में जारी व सारी हदीसों पर तकया

करते हुए अज़ादारी को एक मुस्तक़िल काम समझते हैं कि जो सिर्फ़, अज़ादारी का मक़सद हासिल किये बग़ैर और हराम से परहेज़ व वाजेबात को अन्जाम दिये बग़ैर ही इन्सान को जो निजात दिलाने वाली है अकसरो बेश्तर इस तरह की मजलिसों के लिये हर तरह के वसीले यहां तक कि हराम वसीलों से फ़ायदा हासिल किया जाता है बल्कि अगर वाजिबात को भी छोड़ दें तो कोई बड़ी बात नहीं।

मुफ़क्किरे शिया आयतुल्ला शहीद मुतहहरी (र0अ0) इस बारे में इस तरह फ़रमाते हैं कि ''इमाम हुसैन (अ.स.) पर रोना एक नेक काम है और हमें चाहिये कि ख़ूब रोऐं, लेकिन किस वसीले से रूलाऐं? चाहे कोई भी ज़रिया हो? मक़सद तो बड़ा पाकीज़ा है तो क्या वसीला कुछ भी हो सकता है? अगर एक मूर्ती टाईप स्टेचू बनाऐं वह भी तौहीन आमेज़ स्टेचू? क्या किसी भी तरह आँसू का बहाना काफी है? ख़ुशी के बाजे या ढोल बजाऐं? मर्दों को औरतों के कपड़े पहनाए जाऐं, जनाबे क़ासिम की शादी और बारात की रसम अदा की जाये और जो दिल चाहे वह करें? तहरीफ़ करें. इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ लोग अपनी बनाई हुई तहरीफ़ो में इतना आगे बढ़ गए कि इन्सान ताअज्जुब में पड़ जाए।'' इस मरतबे में एहसासो मोहब्बत, गिरया व सोगवारी ने जिहाद, अमल और मारेफ़त की जगह ले ली है इसलिए इस तरह की मजलिसों से इमाम हुसैन(अ.स.)और इमामे ज़माना (अ.स.)के दुश्मनों को भी किसी ख़तरे का डर नहीं है यही वजह है कि तारीख़ में नहीं मिलता कि कभी भी शैतान व सितम्गर लोग इन मजलिसों से घबराए हों बल्कि इन मजलिसों को बरपा करते हैं ताकि इससे अवाम को धोके में रखा जाए और अपने घिनौने बातिन और

मज़ालिम पर मुकददस अज़ादारीय सालारे शुहदा की पुश्त पनाही हो जाये। दुनिया की तारीख़ भरी हुई है कि जहां दुश्मनें दीन व इस्लाम बड़ी–बड़ी मजलिसें करते और उसमें मोटी रकम ख़र्च करते हैं और ख़ुद को शिया और एहलेबैत का चाहने वाला भी बताते हैं।

इन दो क़िस्म के अज़ादारों, एक भोले–भाले शिया दूसरे ज़ालिमो–जाबिर हाकिम जो मोहब्बते एहलेबैत का दावा करते हैं इनके अलावा एक क़िस्म और भी है और वह तीसरी क़िस्म इस तरह की कम फ़ायदा और बदली हुई मजलिसों से फ़ायदा उठाती है और वह काफ़िरों, घमण्ड़ी लोगों का गिरोह है जो सिर्फ़ दीने हक़ या शीयत के ही दुश्मन नहीं बल्कि इस हुकूमत के भी दुश्मन हैं।

यही तो भोलापन है कि अगर हम यह सोचें कि उनको अज़ादारी और एहलेबैत की रस्मों की सही कुदरत मालूम नहीं है क्यूंकि तारीख़ में कहीं–कहीं ऐसे वाक़ेआत भी देखे गऐ हैं कि हक़ीक़ी मजालिसे अज़ा और सच्चे अज़ादारों से उन लोगों को जानी व माली चोटें खानी पड़ी हैं जिन मजलिसों को बरपा करने वाले सैय्यदुश्शुहदा के फ़लसफए क़याम और अज़ादारीये इमाम के फ़लसफे को जानते थे और उन्होंने अपनी मजलिसों को सही और ख़ास पहचान व मारेफ़त के बाद बरपा किया तो वह मजलिसों की पूरी कुदरत व नतीजों के साथ कुफ़रो शिरको जुल्म से लड़ने को तैयार रहते हैं।

हाँ हाँ दुश्मनाने अज़ा की हक़ीक़ी मजलिसे अज़ा के बरपा होने के बहुत तल्ख़ तजरबे हैं और इन मजलिसों का बेहतरीन और मज़बूत नमूना 1977–78 के 9–10 मोहर्रम में देखने को मिला कि इन दो दिनों में लाखों अज़ादार अज़ादारी करने के लिये सड़कों पर बिखर

गए और ज़माने के यज़ीदों और ख़ूख़ांर पहलवी हुकूमत से नफ़रत और लानत का इज़हार और नाइबे इमामे ज़माना (अ.स.) की हिमायत का ऐलान कर रहे थे इस हक़ीक़ी अज़ादारी का नक़श इरान से शैतानी हुकूमत के ख़ात्मे और पहलवी हुकूमत के सर झुकाने का सबब बना जो किसी भी शख़्स से छुपा हुआ नहीं है।

इन मजलिसों का दूसरा मगर अच्छा और कामिल नमूना इरान में उस वक़्त नज़र आया कि जब इराक से करबला के दिफाआ में जंग की जा रही थी एक तरफ तो ग़म, रोना सोग़वारी और दूसरी तरफ़ कुरबानी, ईरान व इस्लाम दुश्मनों से जिहाद हो रहा था गोया कि रोना और ग़मज़दा होना ये हर एतबार से कुर्बानी और जिहाद को मज़बूत बना रहा था और वक़्त के यज़ीदियों को हुसैनी रूह से चोट पहुँचा रहा था।

ज़ाहिर है कि जिस दुश्मन ने भी हक़ीक़ी मजलिसे इमाम से इस क़दर नुक़सान उठाया होगा वह हरगिज़ ख़ामोश नहीं बैठेगा बल्कि वह तो इसके फ़ायदेमंद नतीजों को ख़त्म करने की नाकाम कोशिश करता रहेगा इस तरह के दुश्मनों ने अज़ादारी के एहसासात और ज़ाहिरी पहलुओं को अहम और बड़ा दिखाने और इसके इनक़ेलाबी रूख़ और मारेफ़त के जज़बे को ख़त्म करने की कोशिश की है और कर रहे हैं।

<u>दुश्मन का मजालिसे अज़ा की मुख़ालफ़त को मानना</u>

डा0 माईकल ब्रांट – जो कि सी0आई0ए0 का मिमबर है उसने अपनी एक किताब ''खुदाई मज़हबों में जुदाई डालने का नक़्शा'' में शियत के खिलाफ़ दुनिया की बड़ी ताक़तों की साज़िशों से परदा उठाया है। उसने लिखा है कि ''सी0आई0ए0 के ख़ास मिम्बरों की एक मीटिंग हुई

और उसमें इंग्लैंड की इन्टेलीजेन्स का एक नुमाईन्दा इस्लाम के बारे में बहुत ज़्यादा तज़रबेकार होने की वजह से शरीक था उसमें नतीजा यह निकला कि इस्लाम के दूसरे मज़हबों के मुक़ाबले में शिया मज़हब ज़्यादा होशियार और खोज बीन करने वाला है।''

उसने इसी किताब में यह भी लिखा '' कि उसी मीटिंग में यह भी तय हुआ कि इस मज़हब के बारे में ज़्यादा तहक़ीक़ात की जायें और उनके मुताबिक़ प्लान बनाया जाये जिसके ख़र्चे के लिये 40 मिलयन डालर का एलान किया। उसने उन ही तहक़ीक़ात पर त़कया करते हुए एक तरीक़ा (हल) लिखा कि इन तहक़ीक़ात से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि हम मज़हबे शिया के साथ आमने सामने होकर उनपर कामयाबी हासिल नहीं कर सकते उनपर कामयाबी हासिल करना बहुत सख़्त है लिहाज़ा किसी आड़ और पर्दे के पीछे से उनपर कामयाबी हासिल हो सकती है।

इसी जगह सी0आई0ए0 के उसी मिम्बर ने लिखा कि हम ने एक लम्बे समय वाले प्रोग्राम के तहत उसके लिये एक रास्ता बनाया है, कि लोगों में मराजेकिराम की मक़बूलियत को ख़त्म करने के लिये बड़े पैमाने पर प्रोपेगन्डे, मफ़ाद परस्त और पेशेवर ज़ाकिरों और ख़तीबों की हिमायतो ताईद, शियत को खुराफ़ाती मज़हब मशहूर करना और आख़िर में हमारे इस प्लान का हिस्सा यह कि इस मज़हब को जड़ से उखाड़ फेकें।

इसी किताब में उसने यह भी लिखा कि हमें एक और बहुत ख़ास मौ़जू पर कार्य करना चाहिए और वह है आशूरा और शहादत का जज़्बा, जिसे शिया हर साल अज़ा की रसमें अदा करके ज़िंदा और

बाक़ी रखते हैं। हमने पुख़्ता इरादा किया है कि कुछ पेशेवर और मफ़ाद परस्त ज़ाकिरों या इन रसमों को बरपा कराने वाले ऐसे लोगों की माली मदद की जाए कि जो मफ़ाद परस्त और शोहरत तलब हैं और शियत के बुनियादी अक़ाइद के साथ जज़बऐ शहादत को कमज़ोर और उसमें इन्हेराफ़ व तबदीलियां पैदा की जाऐं।

एक अमरीकी मुफ़क्किर सामोइल हानतीनगतून ने फ्रांस के अख़बार लूपवान के इन्टरवियो में कहा–

''आज के दौर में इस्लाम सबसे अहम नज़रयाती ब्लाक (गिरोह) है जो मग़रिबी तहज़ीब के लिये रूकावट बना हुआ है और इस ने मग़रिबी तमददुन को दुनिया पर क़ब्ज़ा करने के प्लान को छोड़ने के लिये मजबूर कर दिया है।

आख़िरी दो गिरोह यानी ज़ालिमों जाबिर हाकिम जो बज़ाहिर मुसलमान है और काफ़िर जो दुश्मनें इस्लाम हैं इनका मक़सदे अज़ादारी का तो पता चल गया लेकिन पहले गिरोह यानी जो मुहिब्बे एहलेबैत हैं उनका मक़सद क्या है?

इस गिरोह के बारे में यह कहा जा सकता है कि उनमें भी सबका एक मक़सद नहीं है मुख़तसर तौर पर उनकी भी दो क़िस्में हैं। पहली क़िस्म ऐसे सीधे साधे और भोले व नादान शियों कि है जो ख़ुलूसो मौहब्बत की वजह से इमाम हुसैन (अ.स.) की शहादत पर रोने और उन से मौहब्बत करने के सिवा किसी दूसरे पहलू से वाक़िफ़ नहीं जिसकी वजह से वह भी इसी तरह की ख़राबियों से दो चार हो जाते हैं इस गिरोह को तारीख़े इस्लाम और जिहादे हुसैनी की तफ़सीली जानकारी नहीं होती इनको मक़सदे क़यामे हुसैनी और फ़लसफए

अज़ादारी का भी पता नहीं होता या तो अजा़दारी को एक रसम समझकर अदा करते हैं या अपने बाप दादा का तरीक़ा और रविश समझकर।

दूसरी क़िस्म ऐसे लोग जो पहली क़िस्म के सीधे और बेख़बर लोगों से नाजाइज़ फ़ायदा उठाते हैं और ये वह लोग हैं कि जो इन मजलिसों को अपनी आमदनी का बेहतरीन ज़रिया मानते हैं।

पहली क़िस्म के लोगों का सीधापन और जिहालत और दूसरी क़िस्म के लोगों की शैतानियत व चालाकी इस बात का सबब बनी कि यह लोग अज़ादारों को ज़्यादा से ज़्यादा रूलाने और इमाम की मज़लूमियत के एहसास व करबला के ग़मनाक वाक़ये बल्कि एहलेबैत से मुताल्लिक तमाम रसमों में मशगूल करने की कोशिश करते हैं और ये ज़ाहिर है कि इस तरह से इमाम हुसैन (अ.स.) के क़याम का असली मक़सद और सही अज़ादारी का फ़लसफ़ा अज़ादारों की निगाहों से छुपा रहेगा और सभी ग़फ़लत का शिकार बन जाएगें।

अज़ादारों की यह क़िस्म ख़ूब जानती है कि जो भी लोगों को जितना ज़्यादा रूला सकेगा उसकी इतनी ही मक़बूलियत और नज़राना बढ़ जाएगा इस बिना पर आईन्दा भी शोहरत व दौलत कमाने के दूसरे मौक़े मयस्सर होंगे।

उनमें से कुछ तो ऐसे भी हैं कि जो दौलत को न चाहते हुए सिर्फ़ शोहरत और मक़बूलियत को मक़सद बनाते हैं यहां तक कि वह इस बात के लिए अपने पास से ख़र्चा भी करते हैं ताकि लोगों की ज़बान पर उनका नाम आये। बाज़ जगह के कुछ ज़ाकेरीन या इससे बेहतर यूँ कहूँ कि अपने फ़न से कमाने वाले एक–एक मजलिस के एक–एक

लाख (तूमान) रूपये लेते हैं और मैंने ख़ुद भी देखा है कि कुछ ज़ाकिर व शाईर जिन्होंने क़ाफ़िराना या तौहीन वाले अश्आर पढ़े और उन्होंने ही अज़ादारी में ख़तरनाक रसमें शामिल कीं वह काफ़ी पैसे ख़र्च करके अपनी मजलिसों की आडियो व वीडियो कैसेट और सीडी बनवाकर लोगों में मुफ़्त तक़सीम करते हैं।और हक़ीक़त यह है कि इस तरह के लोग सही मजालिसे अज़ा के लिये ही मुसीबत व ख़राबी नहीं हैं बल्कि इमाम हुसैन (अ.स.)और उनकी मजलिसों को मज़लूम करने का बहुत बड़ा ज़रिया भी हैं।

ये मुसीबत उस वक़्त और ज़्यादा हो जाती है कि जब इस तरह के लोग ज़्यादा से ज्यादा दौलत या शोहरत के लिए आपस में एक दूसरे से दुश्मनी पर उतारू हो जाते हैं और हर एक दूसरे से ग़लत वाक़ेआतो रिवायत या जिहादे हुसैनी के ख़िलाफ़ सबक़त करता नज़र आता है ए काश ये मुसीबत यहीं ख़त्म हो जाती लेकिन इससे बड़ी मुसीबत ये है कि उनमें से हर एक अपने मुक़ाबिल को मैदान से बाहर करने की कोशिश में लगा रहता है और सीधे साधे व अक़ीदतमंद अज़ादारों के ज़ज़बों से आसानी के साथ ख़िलवाड़ करता है और सबसे बुरी बात यह है कि ये लोग अपने को मुतवल्ली (दीन का ज़िम्मेदार और लोगों का दीनी सरपरस्त) भी समझते हैं और बड़ी नादानी की बात यह है कि आसानी से अपने आप को उन मसलों के हल करने वाला समझते हैं कि जो आलिमों से हल होते हैं और लोगों को बग़ैर जानकारी के ग़लत मसले बताते हैं यह गिरोह इस्लाम के सच्चे आलिमों और रहबरों को कोई एहमियत नहीं देता और आलिमों व मराजे के नज़रियात को सिर्फ़ उसी हद तक क़ुबूल करते हैं कि

जिस हद तक उनके मफ़ाद और मतलब जुड़े रहते हैं। अज़ादारी की तारीख़ इस तरह के वाक़ेआत याद दिलाती है कि जब इस क़िस्म के लोगों ने मराजे व दीन के रहबरों से नाकाम मुक़ाबला करने की कोशिश की है। उन लोगों के लिए कोई अहम बात नहीं है कि जिसे वह पढ़ते या जिसको वह बढ़ावा देते हैं उसका हक़ीक़त से कोई ताल्लुक़ है या नहीं बल्कि अगर वह लोगों की आंखों से आंसू निकालने में कामयाब और लोगों के दिलों और बानियाने मजलिस और पैसे ख़र्च करने वालों को अपने हाथ में ले लें तो यही काफ़ी है कि किसी भी झूठे मतलब या ज़ईफ़ व तहरीफ़ शुदा रिवायत को ज़बान पर ले आऐं और उसको मासूमीन या उनके चाहने वालों से मन्सूब करें अब ये निस्बत कभी तो बराहे रास्त होती है कभी किसी हीले और बहाने के ज़रिये होती है।

ऐसे लोग न तो इस्लाम की मस्लेहतों या मुसलमानों की मस्लेहतों को कोई अहमियत देते हैं और न ही मराज़े व दीनी रहबरों से कोई काम रखते हैं उनके लिये यह बात भी अहम नहीं होती कि उनकी गुफ़्तुगू या काम इस्लाम या मुसलमानों के हक़ में फ़ायदेमंद है या नहीं उनके लिये इसकी भी कोई अहमियत नहीं होती कि उनकी बातें या काम इमाम हुसैन (अ.स.) की शख़्सियत और उनके क़याम के मुताबिक़ भी है कि नही उनको अज़ादारी और उसके मरासिम के असल पैग़ाम पहुंचाने से कोई सरोकार नहीं। उनको एहलेबैत की मजलिसों की अच्छाई या अपनी ज़िम्मेदारी और इन मजलिसों के नतीजे से इस्लामी हुकूमत और दिफ़ाए इस्लाम के फ़ायदे से कोई सरोकार नहीं वह एहलेबैत की मजालिस को एक पैग़ाम या फ़रीजे से ज़्यादा न समझे

और न समझने की कोशिश करते हैं और वह लोगों को रूलाना और इमाम हुसैन (अ.स.) के जिहाद के मक़सद को नज़र में रखे बग़ैर कि आज इन्सानों के लिये करबला का क्या पैग़ाम है।सिर्फ़ उस जिहाद की मुसीबतों और तकलीफों को ब्यान करना ही काफ़ी जानते है

आयतुल्ला शहीद मुतहहरी की एक और फ़रयाद है जो तहरीफ़ के ख़िलाफ जिहाद करते हुए शहीद कर दिये गये ''अगर हम अज़ादारीय हुसैनी को अहमियत देना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि अगर इमाम हुसैन (अ.स.) आज होते और ख़ुद ये फ़रमाते कि मेरे लिये अज़ादारी करो तो वह यह भी फ़रमाते कि तुम ने कौनसा तरीक़ा इख़्तियार किया है? क्या वह फ़रमाते कि मेरे नौजवान अकबर, या मेरी परीशान ज़ैनब अलविदा अलविदा का नौहा पढ़ो ? इमाम हुसैन (अ.स.) ने हरिगज़ अपनी ज़िन्दगी में वह बातें नहीं कीं जो पस्त, ग़लत और तौहीन आमेज़ हैं। क्या इमाम हुसैन (अ.स.) ज़िन्दा होते तो वह यह कहते कि शिम्र चौदह सौ साल पहले मर गया तुम आज के शिम्र को पहचानो''।

इस मरतबे में अज़ादार अलग–अलग अन्दाज़ और मुख़्तलिफ ओहदेदार सिर्फ़ इस बात की कोशिश में रहते हैं कि इमाम हुसैन (अ.स.) उनके रिश्तेदार व अन्सार की मज़लूमियत को उजागर किया जाये। लेकिन नादानी से उनकी मुसीबत व मज़लूमियत में और इज़ाफा कर देते हैं। क्योंकि वह अज़ादारी के सीधे और असली रास्ते को बदल के लोगों को अज़ादारी के असली मक़सद से दूर कर देते हैं ऐसे मौक़े पर तो सिर्फ़ वही ज़ाकिर व ख़तीब कामयाब है कि जो लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा रूला सके और आँसू बहाने पर मजबूर कर सकें। इसी तरह

वह अन्जुमनें और अज़ाखानें कामयाब है कि जहां ज़्यादा से ज़्यादा आँसू बहाए जाऐं। लिहाज़ा अज़ादारी के इस मरतबे की दूसरी ख़राबियों (आफ़तों) में से जिनके ज़ाहिरी पहलुओं पर तकया कर रखा है यह है अज़ादारों की तादाद, मातमी अन्जुमनों की लम्बाई, नज़्र (हाज़री) खानों में देगों की तादाद, अलमों की तादाद और उनकी अलामत व कैफ़ियत, लाडस्पीकर, मूवी, बाजों की तादाद, खाने की क़िस्में व ज़ाएके, अज़ादारी में वक़्त की मिक़दार (यानी हमारा मातम या मजलिस या शब्बेदारी कितने वक़्त तक चली) गलियों और बाज़ारों में जुलूस का जाना और जुलूस या मातम को देखनें वालों की तादाद, अन्जुमन के साथ चलने वालों की तादाद।

यह ऐसी खराबियां (आफतें) हैं कि जो अज़ादार या अन्जुमनों को हराम कामों या गुनाहाने कबीरा में भी मुबतला कर देती हैं।

इमाम हुसैन (अ.स.) की नज़र में अव्वले वक़्त नमाज पढ़ने की अहमियत और अज़ादारों की उससे लापरवाही

अबू समामए सैदावी ने आशूर के दिन जब इमाम हुसैन(अ.स.) से यह कहा ''मैं चाहता हूँ कि परवरदिगार से इस तरह मुलाक़ात करूँ कि यह नमाज़ जिसका वक़्त हो चुका है उसे पढ़ लूँ'' तो इमाम ने फ़रमाया ''तुमने नमाज़ को याद रखा तो खुदा तुम्हें ऐसे नमाज़ियों में क़रार दे जो उसे याद रखते हैं यज़ीदियों से कहो कि ज़रा जंग से रूक जाऐं कि हम नमाज़ पढ़ लें जब दुश्मन जंग पर तुले रहे तो आप ने फ़रमाया ''ए उमरे साद लानत हो तुझपर क्या तूने इस्लाम के क़ानून को भुला दिया? अरे जंग क्यूँ नहीं रोकता कि हम और तू व तेरे साथी नमाज़ पढ़ लें उसके बाद फिर जंग हो?''

जी हाँ इमाम ने नमाज़ के लिए जंग को रोक दिया क्यूँकि नमाज़ दीन का सुतून है और अव्वले वक़्त उसको अदा किया जबकि बहुत से अज़ादार नमाज़ के लिए ज़रा सी देर को भी अज़ादारी को नहीं रोकते बल्कि कभी तो ऐसा भी देखने को मिलता है कि आज़ान के बावजूद घन्टों अज़ादारी का सिलसिला चलता रहता है और इससे भी बड़ी बात यह कि अगर नमाज़ पढ़ने वाले अज़ादार जो हर चीज़ की हैसियत और अहमियत उसके मक़ाम पर समझते हैं वह अगर इनको नसीहत करते हैं तो वह उनकी नसीहत पर कोई तवज्जो नहीं देते बल्कि इस नसीहत से नाराज होते हैं क्यूंकि उनके नज़दीक एक वक़्त तेय है कि इतनी देर मातम या गिरया और इतने नौहे व अश्आर या इतना वावैला करना वाजिब है और वाजिब भी ऐसा कि उसमें ज़रा भी देर करना मुमकिन न हो जिसकी वजह से मजलिस में कोई रख़ना पड़े नेक लोगों की नसीहत न सुनने के लिये अपनी आंख और कान बन्द कर लेते हैं और अल्लाह के इस अहम वाजिब को किसी न किसी बेबुनियाद बहाने से हल्का समझते हैं अगर हम इस ज़लील काम की पस्ती का अन्दाज़ा करना चाहें तो उसके लिये पैग़म्बर की दो हदीसें मुलाहेज़ा करें :–

1. मेरी शफ़ाअत गुनाहे कबीरा करने वालों के लिये है मगर मुशरिक और ज़ालिमों के लिय नहीं।
2. जो भी नमाज़ को हल्का समझेगा वह मेरी शफ़ाअत नहीं पा सकता और ख़ुदा की क़सम वह मेरे पास हौज़े कौसर पर नहीं पहुंच सकता।

पैग़म्बर के इस तरीक़े से कि वह गुनाहे कबीरा करने वाले की तो शफ़ाअत करेंगे मगर नमाज़ को हल्का और हक़ीर समझने वाले की नहीं इससे पता चलता है कि नमाज़ को हल्का समझना तमाम गुनाहाने कबीरा कि जिनकी शिफ़ाअत मौहम्मदो आले मौहम्मद करेंगे उनसे भी बदतर गुनाह है और उसके असरात इन्सान की रूह पर बुरे और ख़तरनाक होंगे।

इस्लाम में हर वह मुस्तहब जिससे वाजिब को नुक़सान पहुंचे हराम है

इस दलील से अज़ादारी उस वक़्त तक पसन्दीदा है जब तक उससे नमाज़ को नुक़सान न पहुंचे और इमाम हुसैन हरगिज़ इस बात पर राज़ी नहीं होंगे कि उनकी अज़ादारी के लिये किसी भी ऐसे अहम वाजिब को छोड़ा जाये जो दीन का सुतून हो। ऐसी अज़ादारी व मजलिस कि जिससे नमाज़ या ख़ुदा के तमाम वाजेबात को नुक़सान पहुंचे वह ऐसी इबादत है जो शैतान के इशारों और अपनी मनमानी से की जाती है हुक्मे ख़ुदा से नहीं।

जैसा कि हमने पैग़म्बरे अकरम के फ़रमान के मुताबिक कहा जो कि रहमतुल आलमीन हैं कि नमाज़ को हल्का समझने वाला इन्सान मौहम्मदो आले मौहम्मद की शफ़ाअत से महरूम रहेगा, हांलाकि गुनाहे कबीरा करने वाले को उनकी शफ़ाअत नसीब होगी इसका मतलब यह हुआ कि नमाज़ को हल्का समझना सबसे बड़ा गुनाह हुआ कि जिससे हमे रोका गया है।

अब हम कहते हैं कि अज़ादारी में एहसास और मौहब्बत के पहलू पर तकया करना और अपनी असली ज़िम्मेदारियों और फ़रीजों से गफ़लत ''कि जो अज़ादारी का सही फ़लसफ़ा है'' इस बात का

सबब बनती है कि इन्सान बहुत से गुनाहों का शिकार हो जाय यानी बिल्कुल वही चीज़ें कि जिनको रोकने और मना करने की वजह से इमाम हुसैन (अ.स.) को शहीद कर दिया उन्होंने खुद अपने क़याम का मक़सद नेकी की हिदायत, बुराई से रोकना, अहकामे दीन को बाक़ी रखना और सच पर अमल और गलत पर रोक लगाने को ही बताया है इस क़िस्म की अज़ादारी मौहम्मदो आले मौहम्मद के हक़ में खुला हुआ और सख़्त जुल्म है जो उनके लिये मुसीबत व अज़ीयत का सबब है।

इमाम हुसैन (अ.स.) के क़याम का असल मक़सद दीने खुदा को बाक़ी रखना, और दीनीं इस्लामी मुआशरे में जो बिदअत और कजरवी पैदा हो गई है उनके ख़िलाफ जंग करना था तमाम अम्बियाए खुदा और चौदह मासूमीन के नज़दीक सबसे बड़ी मुसीबत मुआशरे में दीनी कमज़ोरी और दीन को समझने से लोगों की महरूमियत है। क्या अज़ादारों को इमाम हुसैन (अ.स.) ने कि जिन्होंने हक़ को बाक़ी रखने और बातिल से लड़ने को क़ायम किया था इस बात की इजाज़त दे रखी है कि वह अज़ादारी में हक़ और एहकामें दीन को पामाल कर दें और ग़लत बातों को राइज़ करें इमाम हुसैन (अ.स.) की मजलिस में कि जो हक़ के लिये शहीद हुए गलत अशआर व नौहे बेहूदा बाजे और ग़लत रस्में किस लिये होती हैं?

इमाम हुसैन (अ.स.) का पैग़ाम अपने तमाम चाहने वालों के लिये

इमाम ने उस तकलीफ़ देने वाली परेशानी से परदा हटाया है कि जिससे आप को रूहानी अज़ीयत थी और वही तकलीफ़ आपके क़याम का सबब हुई आपने फ़रमाया ''क्या तुम नहीं देखते हो कि हक़ पर

अमल नहीं हो रहा बल्कि गुनाहों से भी कोई परहेज़ नहीं है?'' ऐसे हालात में इन्साने मोमिन को मौत और ख़ुदा से मुलाक़ात की आरजू करनी चाहिय, ''इसीलिए मैं ऐसे अफ़सोसनाक हालात में'' मौत को नेकी के सिवा और ज़ालिमों के साथ ज़िन्दगी को मलाल व पछतावे के सिवा कुछ नहीं समझता।

हमें यहां इस बात पर भी ध्यान देना ज़रूरी है कि क्या इमाम हुसैन (अ.स.) का यह फ़रमान सिर्फ़ उनके ज़माने के लोगों के लिये था और क्या आपने यह दर्दे दिल उन्हीं लोगों के लिये बयान किया था और उनसे कहा था कि तेज़ी से आगे बढ़ें और हक़ पर अमल करते हुए गुनाहों से बचें? या यह हुक्म हमारे लिये भी है ऐसा लगता है कि वह अभी भी हमारे सामने बहुत ज़्यादा दुखी और परेशान हाल ख़ड़े हुए कह रहे हैं ऐ मुझसे मौहब्बत करने वालों अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो और हक़ीक़त में मुझसे मौहब्बत करते हो तो मेरे दर्दे दिल को पहचानों और उसकी आवाज़ पर लब्बैक कहो ''क्या तुम नहीं देखते हो कि हक़ पर तो अमल नहीं हो रहा बल्कि गुनाहों से भी नहीं बचा जा रहा?'' मेरा दर्दे दिल यही तो है कि आख़िर तुम लोगों का क्या हाल है? और हक़ व बातिल पर किस तरह अमल करते हो? ऐसा न हो कि तुम इस हाल में मुझ पर मातम करो कि अपनी ज़िन्दगी के तमाम हक़ीक़ी कानून पैरों के नीचे हों और बातिल तुम्हारे सर पर सवार हो जिसकी वजह से तुम ख़ुदा की हरामो हलाल की हुई बातों का भी ख़्याल न रखो।

हक़ीक़त में हमें चाहिये कि हम अपनी रफ़तारं गुफ़तार के निगेहबान बनें.... और कम से कम अपनी नेकियों को बुराईयों में बदलने से बचाऐं

हमें होशियार रहना है कि इमाम हुसैन (अ.स.) की अज़ादारी जो कि हमारी एक अज़ीम इबादत है उसे गुनाहों से पाक साफ़ रखें। हमें जानना चाहिए कि हर इबादत के लिये एक ख़राबी (आफ़त) है जो उसको बे असर कर देती है। नमाज़, रोज़ा और हज की भी आफ़तें हैं कि अगर रियाकारी (दिखावे) के साथ की जायें तो न सिर्फ बातिल या बे असर रहें बल्कि उनको अन्जाम देने वाला शिरक और गुनाह से दो चार हो जायगा। इसी तरह मातम, मजलिस और ज़ाकरी वग़ैरा के लिये भी बहुत सी ख़राबियां (आफ़तें) हैं अगर हम उसके उसूल का लिहाज़ न रखें तो उसके रूहानी फ़ायदों और नतीजों से महरूम हो जायेंगे और रोज़े महशर अफसोस व शर्मिंदगी की आग के साथ अल्लाह के ग़ज़ब की आग में जलेंगे। जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है –''और उन लोगों को उस हसरत (क़यामत) के दिन से डराइये जब हतमी फ़ैसला हो जायेगा हालांकि यह लोग ग़फ़लत के आलम में हैं और ईमान नहीं ला रहे हैं।''

वह बुज़ुरगान कि जो लोगों की हिदायत व नेकी के लिये मज़हबी तक़रीरों या एहलेबैत की मदहा करते हैं उनके लिये ज़रूरी है कि वह अपने इस नेक काम की अज़मत को पहचानें और इस अज़ीम इबादत की आफ़तों (ख़राबियों) को पहचानते हुए उसके सख़्त निगेहबान बनें ताकि किसी भी तरह एहलेबैत की शान में कोई ग़लती या बे अदबी न होने पाये।

भाग – 3

मासूमीन की (मारेफ़त) पहचान और उनकी मुसीबतों की क़िस्में 78
तीसरे मरतबे से आगे बढ़ने के लिये अज़ादार को किस तरह अज़ादारी करनी होगी 78
मासूमीन की (मारेफ़त) पहचान के सबसे अहम ज़रिये 80
मुसीबत की दो क़िस्म 83
इन्सानी ज़िन्दगी में दीन की अहमियत 85
फ़ितरी ज़िन्दगी के (चार मरतबे) 85
इन्सानी या फ़ितरी ज़िन्दगी 86
मासूम व मख़सूस रहबर की अहमियत इन्सानी ज़िन्दगी में 89
(माहिर) मख़सूस की असली हैसियत 89
माहिर (विशेषज्ञ) कौन 92
हमें एहलेबैत को पहचानना क्यूँ ज़रूरी है? 95
मासूमीन इल्म में रासिख और किताबे ख़ुदा की तावील के भी आलिम हैं 102
मासूमीन का सीना ही क़ुरान की असली जगह है 102
मासूमीन ख़ुदा की ज़ाहिरी व छुपी हुई नेमत हैं 103
हमारा एहलेबैत से ख़ास नाता 105
दीन और शीयत की रूह का फ़ितरी (स्वभाविक) होना 106
हमारे हक़ीकी बाप तो एहलेबैत ही हैं 108
एहलेबैत हमारे सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं 110
सबसे बड़ा ज़ुल्म बहुत बड़ी ख़्यानत 110
दोनों मुसीबतों में हमारी ज़िम्मेदारियाँ 114

चौथा मरतबा मासूमीन की (मारेफ़त) पहचान और उनकी मुसीबतों की क़िस्में

बुनियादी तौर पर वह चीज़ जो अज़ादार को उस तीसरे मरतबे से कि जिसमें मुसलमान और ग़ैर मुसलमान सब शामिल हैं उससे बुलन्द करके ऐसे अज़ादारों में शामिल करती हैं जो मासूमीन के हक़ीक़ी चाहने वाले (शिया) हैं वह सिर्फ़ बातिन की पाकीज़गी और दुनिया की तमाम हक़ीक़तों से ज़्यादा उसकी मौहब्बत और मारेफ़त की मंजिल है।

तीसरे मरतबे से आगे बढ़ने के लिये अज़ादार को किस तरह अज़ादारी करनी होगी :–

तीसरे मरतबे में अज़ादार को इमाम हुसैन (अ.स.) उनके एहलेबैत और असहाब की अज़मत की जानकारी अलग–अलग अन्दाज़ से हो जाती है इसी हालत में उसे यह एहसास होता है कि तीसरे मरतबे में उसका रहना काफ़ी नहीं है इसी वजह से वह इस मरतबे में मौहम्मदो आले मौहम्मद खास़कर इमाम हुसैन(अ.स.) की अज़मत को पहचानने के लिये बेताबी से अपने अन्दर एहसास करता है। जिसकी वजह से ज़ाकेरीन व मुकर्रिर और कुछ मुसन्नेफीन की तक़रीरो तहरीर से वह मुतमईन नहीं होता क्यूंकि वह ख़ुद भी तीसरे मरतबे में ही होता हैं और अपनी समझ के मुताबिक़ इमाम हुसैन (अ.स.) बल्कि तमाम मासूमीन के बारे में पढ़ता और तक़रीर करता हैं लेकिन अज़ादार को अच्छी तरह हक़ीक़ी एहसास हो जाता है कि हक़ीक़त उससे भी कहीं ज्यादा और बुलन्द है जो यह बयान कर रहे हैं ऐसे में

वह सही जानकारी और गहरी मालूमात के लिये कोशिश शुरू कर देता है और मारेफ़त के ज़रिये अपनी जिहालत को दूर करने और हक़ीक़ी अज़ादारी से सेराब होने के लिये आमादा हो जाता है।

फिर वह अपनी सोचो फ़िक्र और दूसरों की मदद से इस नतीजे पर पहुँच जाता है कि किसी ने भी मौहम्मदो आले मौहम्मद ख़ासकर इमाम हुसैन (अ.स).और उनके जिहाद के बारे में कुछ भी कहा हो या वह कहता हो तो वह खुद उसी की सोच और समझ का नतीजा है और ज़ाकिरों, खतीबों और मुसन्निफों की सोच व समझ महदूद ही होती है तो फिर वह इन अन्वारे पाकीज़ा की अज़मत और उनकी शान के मुताबिक किस तरह कुछ पढ़ या लिख सकते हैं यह काम तो खुदा के सिवा कोई शख़्स भी नहीं कर सकता कि मासूमीन की अज़मत के मुताबिक उनकी तारीफ़ और फ़ज़ीलत बयान कर सके। इसी बिना पर अज़ादार उस मुददत के बाद जिससे तीसरे मरतबे में दो चार रहा और कुछ पूछगछ और सवालात जब ज्यादा हुए तो उनके दबाव में आकर वह खुदा की मारेफ़त ;कि जो मौहम्मदो आले मौहम्मद का ख़ालिक हैः खुद मौहम्मदो आले मौहम्मद की भी मारेफ़त की कोशिश करने लगता है और उनसे मदद चाहता है कि वह उनकी सही मारेफ़त हासिल कर सके और उनके हक़ से सैराब हो सके ताकि हक़ीक़ी तलाश यानी बग़ैर काहिली और कोताही के वह उन रूहानी उलेमा से मारेफ़त के तरीके और ख़ास निशानियां मालूम करसके कि जो अल्लाह के नेक बन्दों, दीने खुदा और मासूमीन की अज़मत की जानकारी रखते हैं।

मासूमीन की (मारेफ़त) पहचान के सबसे अहम ज़रिये

1.कुराने करीम :– कुराने करीम वह आसमानी किताब है कि जो खुदा की तरफ से नाजिल हुई है कि जिसने मासूमीन के नूर और दुनिया व आख़रत को पैदा किया है वही खुदा कि जिसने तमाम आसमानों जमीन को पैदा किया और इन्सान को तो अपनी ख़ास रहमत और ज़िन्दगी के अहम मक़सद के लिय पैदा किया ताकि वह ख़ुदा के नाम और खूबियों को ज़ाहिर करने वाला या अल्लाह की ख़िलाफ़त और उसकी विलायत का हक़दार बन सके।

हॉ–हॉ कुरान उसी खुदा का कलाम है और इसी अज़ीम मक़सद के लिये नाज़िल हुआ है और वह ऐसी किताब है कि जिसके मुक़ाबिल कोई किताब नहीं आ सकती। रसूले अकरम ने उसके बारे में फ़रमाया है कि जिनको हर इन्सान एक पाको पाकीज़ा दिल और कुरान के उतरने की सही जगह, और खुदा की अज़मत के साथ इस किताब को हासिल करने और कुरान को हर शख़्स से बेहतर पहचानने वाला मानता है।

''कुरान को तमाम किताबों पर इसी तरह बरतरी और फज़ीलत हासिल है कि जिस तरह खुदा को अपनी मख़लूक पर'' इस किताब (कुरान) में कई बार खुदा के इल्म का ज़िक्र इस तरह से किया है कि कोई शख़्स भी ख़िलक़त और इन्सान के उसूलो क़वानीन को खुदा से बेहतर नहीं जानता क्योंकि इस किताब में इन्सान व दुनिया के पैदा होने के उसूल के साथ उसकी खुदा से नज़दीकी और कमाल के मरतबे पर पहुंचने के तरीक़े भी बयान किये हैं।

वह सूरऐ असरा में फ़रमाता है –''तुम्हारा खुदा तुम्हारे ही बारे में तुमसे ज़्यादा जानकार है'' दूसरी जगह फ़रमाता है – ''कि खुदा बेहतर जानता है कि अपनी रिसालत के ओहदे को किसे दे'' इस बिना पर अगर कोई चाहे कि मासूमीन की अज़मत को पहचाने तो बेशक वह कुरान और खुदा की मदद के बग़ैर उस मुराद को नहीं पा सकता।

इमाम मौहम्मद बाक़िर (अ.स.) ने इस बारे में फ़रमाया कि ''कुरान चार क़िस्मों में नाज़िल हुआ है एक हिस्सा उसका हमारे बारे में है एक हमारे दुश्मनों के बारे में और एक सुन्नतो और मिसालों में और एक वाजिबात और एहकामात के बारे में है।

2.ज़ियारते आशूरा :– औलियाए खुदा और उलमा के दरमियान ज़ियारते आशूरा के लिये यह मशहूर है कि यह हदीसे कुदसी है और इमामे हुसैन (अ.स.) व करबला के वाक़ऐ की अज़मत की सही पहचान और इस बारे में अल्लाह के बन्दों को उनके फ़रीज़ों से जानकार बनाने के बारे में खुदा की तरफ से रसूले खुदा पर नाज़िल हुई थी जिबरील वही के ज़रिये लाये थे फिर करबला के बाद इमामे मौहम्मदे (अ.स.) बाकिर के ज़रिये उनके चाहने वालों तक पहुंची।

एक सच्चे शिया व अज़ादार और मोमिन के लिये ज़ियारते आशूरा ज़िन्दगी गुज़ारने का उसूल और क़ायदा है। इस ज़ियारत में मारेफ़ते खुदा, मासूमीन ख़ासतौर से इमामे हुसैन (अ.स.) की अज़मत को पहचानने के बेहतरीन ज़रिये हैं इसी तरह मासूमीन से लोगों के राबते का तरीक़ा, इन्सान को पहचानने, इमामे हुसैन (अ.स.) और करबला के बारे में एक सही अज़ादार और सच्चे शिया की ज़िम्मेदारियों का भी

पता मिलता है। इस ज़ियारत की जो ख़ुसूसियत है वह उसके अहम होने का पता देती है और उसके मज़मून की बुनियाद बताती है कि हर इन्सान का इमामे हुसैन (अ.स.) और आपकी औलाद (इमामे ज़माना(अ.स.) और आपके जिहाद से कैसा राबेता होना चाहिये इस ज़ियारत की इस क़दर ज़्यादा अहमियत है कि मासूमीन के ज़माने से इस वक़्त तक न सिर्फ़ ये कि मासूमीन और उलमा पाबन्दी से इसको पढ़ते हैं बल्कि उसकी अहमियत और पाबन्दी में रोज़ाना बढ़ोतरी हो रही है।

3.ज़ियारते जामेआ :– यह ज़ियारत भी बड़ी मोतबर ज़ियारतों में से एक है। इसमें इमाम की अज़मत को पहचानने के उम्दा और अच्छे ज़रिये है कि जो दसवें इमाम के ज़रिये शियों तक पहुंची है।

शेख़ अब्बास कुम्मी ने अपनी किताब मफ़ातीहुल जिनान में ज़ियारते जामेआ के बाद एक नसीहत व सबक़ हासिल करने वाला क़िस्सा ''सैय्यद रिश्ती के वाकअे'' के नाम से लिखा है जिससे ज़ियारते आशूरा और ज़ियारते जामेआ की अहमियत इमामे ज़माना (अ.स.) के एतबार से मालूम हो जाती है।

4.ज़ियारते नाहिया :– यह ज़ियारत सिर्फ़ वारिसे आले मौहम्मद और उनके ख़ून का बदला लेने वाले यानी इमामे ज़माना (अ.स.) का सोग और मरसिया है जो उन्होंने अपने मज़लूम जद और करबला के शहीदों के लिये कहा था। इस ज़ियारत से हमें एहलेबैत के मुख़तलिफ मसाइब का पता चलता है हक़ीक़त में यह ज़ियारत करबला की जंग की एक बड़ी किताब है और एक तरह से इसे ज़ियारते आशूरा की

शरहा भी कहा जा सकता है क्योंकि इससे हमें करबला की ख़ास और अहम बाते मालूम होती हैं।

इन चारों गुज़रे हुए अहम ज़रियों और मासूमीन की सारी हदीसों से फ़ायदा हासिल करें तो अपने मरतबे से बढ़कर उस जगह पहुंच सकते हैं कि जहां मासूमीन से उनका मुनासिब और सही राबेता हो सकता है और इसी मालूमात के सहारे मौहम्मद व आले मौहम्मद की मुसीबतों और उनपर सही ढंग से अज़ादारी करने का तरीक़ा भी मालूम होता है।

मुसीबत की दो क़िस्में

एक सच्चे अज़ादार को इस्लाम के असल ज़रियों और हक़ीकी आलिमों की हिदायत से जो सही जानकारी मिलती है उसके ज़रिये वह मासूमीन ख़ासतौर से इमाम हुसैन (अ.स.) पर होने वाली दोनो तरह की मुसीबतों को भी जान लेता है हालांकि दोनों मुसीबतें ही बड़ी हैं। लेकिन एक के मुक़ाबिल दूसरी और ज़्यादा बड़ी लगती है एक मुसीबत यानी क़रीब करने वाली दूसरी यानी दूर करने वाली हम इस जगह इन दोनों मुसीबतों की तफ़सील को मुसीबते अज़ीम व मुसीबते आज़म के नाम से लिख रहे हैं।

(अ)मुसीबते अज़ीम (बड़ी मुसीबत) ये वह मसाइब हैं जो उन हज़रात के नूरानी और पाकीज़ा वजूद को पहुंचे यानी ज़ुल्म और वह भी ऐसा कि जिसने उनको और उनके एहलेबैत को शहीद कर दिया। वह मसाइब जो रसूले अकरम पर उनकी ज़िन्दगी या वफ़ात के वक़्त हुए वह दर्दनाक मसाइब जो अमीरूल मोमेनीन और हज़रते फ़ातेमा पर

रसूल की ज़िन्दगी और उनकी वफ़ात के बाद या उन हज़रात की शहादत के वक़्त हुए।

इमाम हसन (अ.स.) को कई बार ज़हर देने की मुसीबत और उनकी शहादत के बाद उनके जनाज़े पर तीरों की बारिश और इनमें से सभी हज़रात के साथ जुल्म ख़ास तौर से इमाम हुसैन (अ.स.) की सबसे बड़ी मुसीबत कि उनके साथ उनके ख़ानदान और चाहने वालों को करबला में शहीद किया गया और उनके बाद मासूमीन को जुल्मो जौर का निशाना बनाया जाता रहा यह सबकी सब बड़ी मुसीबतों में से ही हैं।

लेकिन इन बड़ी मुसीबतों के बाद एक सच्चे शिया और अज़ादार का क्या तरीक़ा होना चाहिये? क्या तीसरे मरतबे वाले अज़ादार की तरह कि जो सिर्फ़ एहसासो मौहब्बत में रोता रहता है और वह भी इन तमाम आफ़तों और फ़रसूदा रसमों रिवाज के साथ? या हमें किसी और तरीक़े से कुछ करना होगा?

हम मुनासिब समझते हैं कि इसका जवाब ''सबसे बड़ी मुसीबत'' की बहस के बाद दें।

(ब)मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) वह मुसीबत जो हर ज़माने के इन्सानों पर हक़ीक़ते दीन से महरूम करके या अल्लाह के ख़ास बन्दों से महरूम करके ख़ास तौर से आइम्माए मासूमीन से उन्हें दूर करके पहुंचाई गई यह मुसीबत इसलिये भी बड़ी है कि मासूमीन को खुदा ने जो ख़ास मरतबा इन्सानों की हिदायत व रहबरी का दिया था वह छीन लिया गया। इन मसाएब के बीच में राबेता और उसकी तफ़सील

और इसी तरह एक अज़ादार और पक्के शिया के फ़रीज़े को कुछ बातों के साथ पेश करेंगे।

इन्सानी ज़िन्दगी में दीन की अहमियत

वह ख़ुदा कि जो इन्सान व जहान का पैदा करने वाला है और आलमीन का पालने वाला व मालिक और दुनिया को ढंग से चलाने वाला भी है और हर एक से ज़्यादा जानने वाला और इन्सान को इन्सानों से ज़्यादा पहचानता है वह कुरान में इन्सानी ज़िन्दगी की दो किस्में बयान करता है।

(अ)फ़ितरी ज़िन्दगी :– नीचे दिये गये चार मरहलों को शामिल है :–

1. कुछ इन्सानों की ज़िन्दगी ईंट पत्थर के जैसी है ''फिर तुम्हारे दिल इसके बाद सख़्त हो गए जैसे वह पत्थर हो गऐ।''
2. और कुछ इन्सानों की ज़िन्दगी तो ईंट पत्थर से भी गिरी हुई है ''तुम्हारे दिल पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो गये हैं।''
3. कुछ इन्सानों की जिन्दगी जानवरों की तरह है ''वह चौपाायों जैसे हैं।''
4. कुछ इन्सान चौपायों और जानवरों से भी बदतर हैं ''बल्कि वह तो चौपायों से भी पस्त और बदतर हैं।''

इनको अगर दूसरे एतबार से तक़सीम किया जाय तो इन चारों मरहलों को पत्थरों से पस्त ज़िन्दगी, पत्थरों की ज़िन्दगी, घास फूस की और जानवरों की ज़िन्दगी में तक़सीम किया जा सकता है।

(ब)इन्सानी या फ़ितरी ज़िन्दगी :– इन्सान के अन्दर जानवरों की ख़ूबियों के अलावा रूहानी व इलाही पैहलू भी पाया जाता है। जैसा कि ख़ुदा ने इन्सान के अन्दर रूह फूँकते वक़्त इसका ज़िक्र किया था और उस वक़्त फ़रिश्तों से कहा था कि ''जब मैं इसको (जिसमानी एतबार से बराबर यानी) सही कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम सबके सब उसको सजदा करना'' दीन की ज़बान में इस रूहे इलाही को ''फ़ितरत'' के एतबार से याद किया है और इन्सान का इसी ख़ुसूसियत की वजह से इन्सान नाम रखा गया और फ़रिश्तों से बेहतर बना कर उनके लिये इसे लाएक़े सजदा भी बनाया इन्सान के वजूद में इस बात की उसी वक़्त बढ़ोत्री होती है कि जब उसे ख़ुदाई तरबियत व हिदायत हासिल हो जाये ख़ुदा ने भी अपने दीन को इन्सान की फ़ितरत और उसकी ज़िन्दगी के मुताबिक़ ही बनाया है उसने क़ुरान में कहा कि ''(ए रसूल) आप अपने रूख़ को दीन की तरफ़ रखें और बातिल से बचें रहें क्योंकि यह दीन वह इलाही फ़ितरत है जिसपर उसने इन्सानों को पैदा किया और अल्लाह की ख़िल्क़त में कोई तबदीली नहीं हो सकती है यक़ीनन यही सीधा और मज़बूत दीन है मगर ज़्यादातर लोग इससे बे ख़बर हैं।''

अमबिया जोकि इन्साने कामिल हैं वह दीने ख़ुदा की तबलीग़ और इन्सानों को कमाल की मंज़िल की हिदायत करने के लिये आये थे। नबियों और ख़ुदा के दीन के सिवा किसी में भी इन्सानों की फ़ितरी सलाहियतों की इलाही तरबियत और उसकी फ़ितरत को बुलन्दी देने की ताक़त नहीं है और उसकी वजह सिर्फ़ यह है कि ख़ुदा ही उसका पैदा करने वाला है तो उसको इन्सानी ज़िन्दगी सिर्फ़ और सिर्फ़ उसके

सामने सर झुकाने और नबियों के हुक्म पर अमल करने से ही हासिल हो सकती है। जैसा कि उसने कहा ''अल्लाह व रसूल की आवाज़ पर लब्बैक कहो जब वह तुम्हे किसी बात के लिए बुलाऐं जिसमें तुम्हारी ज़िन्दगी है।''

दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कहा जाये कि ''दीने हक़'' ही इन्सान को ज़िन्दगी देने वाली उन ख़ास चीज़ों में है कि जिसे खुदा व रसूल इन्सान को बताते हैं लिहाज़ा इन्सान खुदा के बनाये हुए कानून पर चल कर ही पाको पाकीज़ा ज़िन्दगी गुज़ार सकता है और दीन की पाबन्दी किये बग़ैर इस पाकीज़ा ज़िन्दगी को हासिल नहीं किया जा सकता जैसा कि हज़रत अली ने फरमाया कि ''इन्सान के लिये बग़ैर दीन के ज़िन्दगी बेकार है।''

ज़ाहिर है कि इस ज़िन्दगी से इन्सानी ज़िन्दगी ही मुराद है।

दीने ख़ुदा के भी कुछ उसूल और कुछ फुरूअ हैं कि जिन उसूल पर वह दिल से यक़ीन रखता है और उनके मुताबिक़ अमल भी करता है और दीन के तमाम अख़लाक़ी और अमली हुक्म को मानता है जिससे उसे हमेशा के लिये पाको पाकीज़ा ज़िन्दगी मिल जाती है।

इसीलिए इन्सानी ज़िन्दगी के लिये सबसे ज़्यादा ज़रूरत अपने खुदा व पैदा करने वाले से राबेता है और उसूलो फुरूए दीन से हासिल होने वाली हिदायत से फ़ायदा हासिल करना है।

हम अब तक की बातों से इस नतीजे को पहुंचे कि इन्सानों के लिये सबसे बड़ी मुसीबत खुदा के दीन से महरूम होना है क्योंकि खुदा के दीन के बग़ैर कोई इन्सान भी इन्सानी ज़िन्दगी के मामूली मरहले से फ़ितरी और इन्सानी मरहले तक नहीं पहुँच सकता। इन्सान खुदा के

दीन की पाबन्दी और अल्लाह की हिदायत से फ़ायदा उठाकर ही दुनिया व आख़रत की नेकी को हासिल कर सकता है। सीधे रास्ते और अल्लाह के ज़िन्दगी बख़्शने वाले कानून के अलावा कोई रास्ता इन्सान को उसकी पैदाइश के मक़सद या उसको कमाल तक नहीं पहुंचा सकता।

इसीलिए नबियों और आसमानी किताबों के आने का मक़सद दीने खुदा और सीधे रास्ते की तरफ़ लोगों की हिदायत करना और तमाम दीनों पर अल्लाह के दीन का हाकिम हो जाना था। रसूले अकरम भी लोगों की हिदायत के साथ तमाम इन्सानों पर दीने ख़ुदा की हाकमियत के सिवा कुछ नहीं चाहते थे वह मक़सद जिसके लिए सारे इन्सान, दुनिया की तमाम चीज़ें, ज़मीनो आसमान उसीके लिए पैदा हुए हैं वह मक़सद इतना बड़ा है कि हज़ारों नबी, चौदा मासूमीन उसके लिये शहीद होने को तैयार रहे।

लाखों नेक इंसान, शरीफ़ मर्द व औरते, जवान यहां तक कि बच्चे भी दीने खुदा की हाकमियत के लिय शहीद या असीर हुए और क़ैद की सख़्ती जिला वतन, भूके प्यासे, व फ़ाक़ों की मुसीबतें झेलीं।

इसी वजह से इंसानों की हिदायत, ख़ुदा के दीन की हाकमियत, और उसका सीधा रास्ता जो इंसानी मुआशरे पर हक़ीकी इंसानों के पालन पोषण की वजह बना वह ज़िन्दगी के मक़सद के बुलन्द, अल्लाह के रहबरों और उसकी अताअत करने वालों की तलाशो कोशिश है और उस बुलन्दी के लिए मुसीबते अज़ीम एक तरह से शुरूआती मंजिलें हैं। इसी वजह से हम यह कह सकते हैं मुसीबते आजम (सबसे बड़ी मुसीबत) यह है कि अल्लाह के रहबरों की दुनिया पर हुकूमत करने में

नाकामी या दुनिया का खुदा के दीन की हाकमीयत से महरूम होना है।

मासूम व मख़सूस रहबर की अहमियत इन्सानी ज़िन्दगी में

बग़ैर किसी मख़सूसो मासूम रहबर के दीनदारी, हिदायत व निजात एक सोच है क्योंकि बग़ैर मासूम के दीनदारी ऐसी ही है कि जैसे बग़ैर टीचर के पढ़ाई और तन्दरूस्ती व इलाज बग़ैर डाक्टर के हो। मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) को अच्छी तरह समझने के लिये दीन से मासूम रहबर और मासूम रहबर से तमाम इन्सानों के राबते और ताल्लुक़ को बताना ज़रूरी है।

(माहिर) मख़सूस की असली हैसियत यह एक फ़ितरी व अकली क़ायदा है कि जो हमें यह बताता है कि इन्सान किसी भी चीज़ या निज़ाम में चार मरहलों से गुज़रता है। रास्ता बनाना, फ़ायदा हासिल करना, उसकी इस्लाह और ख़राबी के बाद उसको ठीक करना, पहले मरतबे में तो ठीक और सही करने वाले हादी और दूसरे मरहले में एक मख़सूस (माहिर) की ज़रूरत होती है ज़ाहिर है कि जो चीज़ या निज़ाम जितना उलझा हुआ या नाजुक होगा उसे तैयार करने और बनाने के लिए ऐसे ही माहिर और मख़सूस इंसान की ज़रूरत होगी। बुनियादी तौर पर सारे इंसानों में हर काम के माहिर को बग़ैर किसी हील हुज्जत के अहमियत हासिल है अल्लाह के इस कानून पर तमाम इंसान पाबन्द हैं कि जिस काम में वो खुद माहिर नहीं होते उसके लिय उस काम के माहिर को ढूंढते हैं बीमारी के इलाज के लिए अच्छा डाक्टर बल्कि उस मरज़ का विशेषज्ञ, कारखाना बनाने या उसकी मरतम्मत के लिए ऐसे अच्छे मिस्त्री को ढूंढते हैं कि जो अच्छा

जानकार हो मकान को बनाने के लिए नई नई खोज के लिए इन्जीनियरों को तलाश करते हैं वग़ैरा, क्योंकि इन्सान बग़ैर माहिर (विशेषज्ञ) के किसी भी काम को नहीं कर सकता और अगर किसी वजह से या किसी गलती से या किसी के बहकाने में आकर किसी माहिर के बदले अनाड़ी को बुला भी लें और बाद में पता चलें कि ग़लती से इसे बुला लिया है तो फ़ौरन उसे वापस करते हैं और किसी सही माहिर की तलाश की जाती है। अब अगर कोई इस अक़्ली क़ानून को छोड़कर जब कि वो किसी माहिर को जानता भी हो और बुला भी सकता हो लेकिन फिर भी किसी अनाड़ी को बुलाए तो सभी लोग उसके इस काम को बुरा कहेंगे और उसकी निन्दा करेंगे। इसलिए कि इस तरह के काम से इन्सान ने अपने को सही और सीधे रास्ते से भटका लिया है और ऐसे ग़लत रास्ते को चुना है कि जो ना तो खुद मक़सद तक पहुंचता है और न किसी को पहुंचा सकता है इस तरह का आदमी अपने आप के लिये भी अपराधी है और अगर उससे पूछा जाये कि तू ने माहिर और फ़नकार को छोड़कर अनाड़ी को क्यूँ बुलाया तो उसके पास न पूछने वालों के लिए कोई जवाब है न अपने लिए।

इसी तरह इंसानी ज़िन्दगी में नेकी और अच्छाईयां आख़रत में कामयाबी हासिल करने के लिए एक ख़ास माहिर से मदद लेने की ज़रूरत है क्योंकि दुनिया में ज़िन्दगी को अक़्ल और बुनियादी उसूलों पर गुज़ारा जाये इसी का सवाल आख़रत में भी होगा कि इस दुनिया में ऐसे रहना कि दोनों जहान के लिए कामयाबी की वजह बन जाये इसकी जानकारी किसी एक इंसान को भी नहीं है सिवाए अल्लाह के

ख़ास बन्दों के, कोई भी दुनिया की कामयाब ज़िन्दगी के राज़ को नहीं जानता और ना ही उसका माहिर है जिससे वह दुनिया और आख़रत की नेकियां हासिल कर सके।

लिहाज़ा सीधे रास्ते और सही माहिर को ना पहचानना इंसान के लिए मरने और बुरे होने का सबब है तो फिर हर रास्ते पर चलना ग़लत और जिहालत का सबब बनेगा सिवाए उन रास्तों और बातों के कि जो ख़ुदा ने अपने ख़ास मासूम हादियों के ज़रिये हमें बताये हैं लिहाज़ा वह बेवकूफ़ी और ग़लती का रास्ता और जिहालत का क़ानून होगा।

यही तो वजह है कि कुरान ने उन क़ानूनों के अलावा कि जो अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए बनाए हैं सबको ग़लत और जिहालत का मज़हब व कानून कहा है– ''क्या यह लोग जाहेलिय्यत का हुक्म (क़ानून) चाहते हैं जबकि अल्लाह से बेहतर किसका हुक्म हो सकता है।''

लिहाज़ा सीधे रास्ते और सही माहिर को ना पहचान्ना इन्सान के लिए मरने और बुरे होने का सबब है तो फिर हर रास्ते पर चलना ग़लत और जिहालत का सबब बनेगा सिवाए उन रास्तों और बातों के कि जो ख़ुदा ने अपने ख़ास मासूम हादियों के ज़रिये हमें बताये हैं लिहाज़ा वह बेवकूफ़ी और ग़लती का रास्ता और जिहालत का क़ानून होगा। यही तो वजह है कि कुरान ने उन क़ानूनों के अलावा कि जो अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए बनाए हैं सबको ग़लत और जिहालत का मज़हब व क़ानून कहा है– ''क्या यह लोग जाहेलियत का हुक्म (क़ानून) चाहते हैं जबकि अल्लाह से बेहतर किसका हुक्म हो सकता है।''

इसी तरह सिर्फ़ अल्लाह की हिदायत और क़ानून ही इन्सान की कामयाबी और बुलन्दी के लिए मुनासिब है – ''कह दो कि सही हिदायत तो सिर्फ़ अल्लाह की ही है।''

इस वजह से अल्लाह के सिवा कोई भी इन्सान को उसकी कामयाबी की तरफ़ हिदायत नहीं कर सकता।

माहिर (विशेषज्ञ) कौन हैं?

अब हमें देखना चाहिए कि खुदा ने इन्सान को किस तरह हिदायत की और दुनिया से आख़रत का सफ़र तय करने के लिए क्या जानकारी उसे दी है? ख़ुदा ने ऐसे महान इन्सानों को हादी बनाया कि जिनको ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत करने का तरीक़ा और मासूम होने का शरफ़ दिया गया है और इल्म व इस्मत (मासूम होना) ये वही दो चीज़ें हैं कि जिनकी ज़रूरत ख़ुदा के हर ख़ास बन्दे (वली) को रही और अक़्ल भी इन्हीं दोनों की ज़रूरत का हुक्म देती है क्यूँकि इन्सान बहुत उल्झा हुआ, एहसास करने वाला और महान है कि जिसके पास जाने के लिए या उसको सही ढंग देने और उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ख़ुदा के इल्म और माहिर व तजरबेकार की ज़रूरत होती है और दूसरी तरफ़ इस इल्म को तमाम इन्सानों तक पहुंचाने और लोगों को हिदायत करने में थोड़ी सी भी ग़लती नहीं होनी चाहिए नहीं तो हिदायत का नतीजा बेकार रहेगा। लिहाज़ा इन्सानों की हिदायत तो सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा के हाथ है और मासूमीन इस हिदायत के पहुंचाने वाले हैं क्यूँकि ख़ुदाई हिदायत ही सही हिदायत है लिहाज़ा इस हिदायत की ज़िम्मेदारी ख़ुदाई रहबरों को दी जाये ताकि वह ख़ुदा के नुमाईंदा बनकर लोगों से सीधा सम्पर्क करें तो उन रहबरों का

इल्म व इबादत इस क़दर हो कि लोगों को उनकी हिदायत पर यक़ीन हो कि यह ख़ुदा की तरफ़ से हैं ताकि वह अपना दिलो जान उनके हवाले कर दें और बग़ैर किसी एतराज़ और सवाल किये उनका कहा मानें। लिहाज़ा ख़ुदाई रहबरों को ख़ुदा के इल्मी खज़ाने से जानकारी रखना होगी और मासूमीयत की मंज़िल को भी हासिल करना होगा ताकि लोगों को हिदायत करने में किसी भी क़िस्म की कोई भी ग़लती न होने पाये (यहां अम्बिया व आईम्मा मुराद हैं)

जिस तरह ऊपर भी गुज़रा है इस नुक्ते के साथ कि इन्सान बाइख़्तेयार है और अपने रास्ते को अपनी इच्छा और इख़्तेयार से चुनकर उसे तय कर सकता है। फिर भी ख़ुदा की ज़िम्मेदारी है कि इन्सान को रास्ता दिखाये और इन्सान को उस रास्ते पर चलने की ताक़त दे ख़ुदा ने इसको कुछ कामों में इस तरह से बांटा है जैसा कि हम नीचे लिखेंगे।

1.ख़ुदा ने इन्सान को अपनी रूह का मालिक बनाया वही रूह कि जो इन्सान को उसकी अस्ल और हक़ीक़त की हिदायत करती है इसके अलावा हक़ व बातिल अच्छे बुरे में फ़र्क़ करने की ताक़त भी दी है ताकि इस ख़ुदा के नूर से उन ख़तरों और रूकावटों को पहचान सकें जो नेकी के रास्ते में रूकावट बनते हैं ताकि उसमे मुबतला न होने पायें और जो उसके लिए नेकी है उसको पहचान कर उससे जुड़ जायें इस बारे मे कुरान में है –''इन्सान के नफ़्स की क़सम और जिसने उसे सही पैदा किया फिर उसके दिल में उसकी नेकी और बुराई डाली।''

2.आसमानी किताबों के भेजने के साथ मज़हबे हक़ से जोड़ना जो इन्सान की फ़ितरत और उसके वजूद के मुताबिक़ है ताकि इन्सान आसानी से उसको क़ुबूल करके हिदायत के रास्ते पर चल सके।

3. ख़ुदा के मासूम रहबरों का मुअय्यन होना – जो ख़ुदा के इल्मी ख़ज़ाने और उसकी अच्छाईयों व अख़लाक़ से वाबस्ता और ख़ुदाई तरबियत पाये हुए होते हैं ताकि लोगों को सीधे रास्ते की हिदयत करें।

इन्सान की अज़मत और बुज़ुर्गी, ख़ुदा व हमेशगी की तरफ़ उसकी सैर का एहसास और उसके तमाम पहलुओं के बन्धनों को इस ऐतबार से कि वो ख़ुदा की पूरी और महान मख़लूक़ है और उसको अपनी बुलन्द मन्ज़िल और सच्ची नेकी की तरफ़ हिदायत करने वाले किसी ख़ास माहिर की ज़रूरत है इन तमाम बातों पर ध्यान रखते हुए नतीजा यह निकलता है कि ख़ुदा पर इन्सान का यह माना हुआ हक़ है कि वह उसके लिए एक ख़ास माहिर हादी जो मासूम हो और ऐसा मज़हबो क़ानून मुअय्यन करके बताऐ जो भरोसे के क़ाबिल हो ताकि उसकी हिदायत पूरी तरह सही हो और अपने आपके सही मक़सद व बुलन्दी और नेकी तक ख़ुद को पहुंचा सके। माहिरो मासूम रहबरों का न होना और सही व भरोसेमंद दीन का न होना ख़ुदा की मरज़ी और इन्सानों के पैदा होने के मक़सद के ख़िलाफ है यानी बग़ैर हादी और भरोसेमंद दीन के बग़ैर इन्सानों के पैदा होने का निज़ाम सरासर ग़लत और बेकार है और ख़ुदा का इस तरह की मख़लूक़ और ऐसे कामों से कोई वास्ता नहीं।

इन्सानों के इस माने हुए हक़ को ध्यान में रखते हुए ज़मीन पर रहने वाले हर इन्सान के इतिहास में हमेशा मासूम रहबर और माहिरे दीन उनके इख़्तियार में रखे ताकि किसी को भी ख़ुदा से शिकायत करने का मौक़ा न मिले।

क्यूँकि हर इन्सान और हर क़ौम को एक अच्छे हादी की ज़रूरत होती है और यह ज़रूरत सिर्फ़ और सिर्फ़ खुद ही पूरी कर सकता है तो इसके बारे में कुरान में इस तरह मिलता है –''बेशक तुम तो सिर्फ़ (अज़ाब से) डराने वाले हो और हर क़ौम के लिए एक हादी है।''

पाँचवे इमाम इस आयत के बारे में फ़रमाते हैं –''रसूले ख़ुदा डराने वाले हैं और हर ज़माने में हम में से एक हादी होता है जो लोगों को पैग़म्बर की बातों की नसीहत करता है। लिहाज़ा नबी के बाद अली उन रहबरों में हैं उनके बाद उनके वसी और यह सब एक दूसरे के बाद आते रहेंगे।''

और हादी को मुन्ज़िर यानी डराने वाले के नाम से याद करने की वजह यह है कि वह ख़ुदा के हुक्म को न मानने वालों जो हुक्म दुनिया और इन्सानों की पहचान कराता और इन्सान को नेकी के रास्ते तक ले जाता है उन लोगों के साथ मासूम और माहिरे दीन हादियों की इताअत न करने वालों को ख़तरों और सज़ाओं से होशियार व ख़बरदार करता रहता है।

<u>हमें एहलेबैत को पहचानना क्यूँ ज़रूरी है?</u>

एहलेबैत की अज़मत को पहचाने बग़ैर हमारे और उनके बीच कासही राबेता बाक़ी रहना मुमकिन ही नहीं है और जब तक उनसे हमारा

सही राबेता न रहे उस वक़्त तक हम हरगिज़ सही और सीधे रास्ते को नहीं पा सकते जिसको हम तलाश करते रहते हैं।

यह मुमकिन ही नहीं कि कोई भी एहलेबैत को अच्छी तरह से पहचानकर किसी दूसरे को अपना हादी मान ले अगर हम ध्यान से देखें तो बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो अभी तक भी एहलेबैत की उस कड़ी को नहीं जानते जो मौजूद है क्यूँकि एहलेबैत और उनकी अच्छाईयों को सही ढंग से नहीं जानते। इमामे रज़ा (अ.स.) फ़रमाते हैं –''कि अगर लोग हमारी बातों की अच्छाईयों की जानकारी रखते तो यक़ीनन हमारे पैरोकार (अनुयायी) हो जाते।''

इसी वजह से अपनी ज़िन्दगी का सही रास्ता और उसके लिए कोई नमूना ढूंढने में बेहद परेशानी महसूस हो रही है और हमेशा ऐसे लोगों के हाथों नुक़सान उठा रहे हैं कि जो इन्सान के वजूद और उसकी ज़रूरतों को नहीं जानते कभी किसी लेखक को अपने लिए नमूना समझते हैं तो कभी किसी पहलवान तो कभी किसी हुनरबाज़ तो कभी किसी ख़ारजी शख़्सियत को और कभी किसी साईन्टिस्ट को अपने लिए नमूनऐ अमल बनाते हैं और आख़िर में जब ख़ुद को देखते हैं तो मालूम होता है कि वह अपने उस अमूल्य जीवन को ऐसे बेकार और वक़्ती (हादियों) नमूनए अमल के सहारे नष्ट कर चुके हैं कि जिसके एक–एक पल का जवाब क़यामत के दिन देना होगा जबकि हम किसी क़ाबिले भरोसा या बाक़ी रहने वाली और हक़ीक़ी चीज़ तक भी नहीं पहुंचे यह वह मन्ज़िल है कि जहां हम ऐसी तकलीफ़ और परेशानी में घिरे हुए हैं कि जिससे कभी भी छुटकारा नहीं मिलेगा। क्यूंकि हमने अपनी ज़िन्दगी का बड़ा और क़ीमती सरमाया यानी उम्र, जवानी और

अपनी ख़ुशी को अपने माशूक़ और बेकार (हादियों) नमूनए अमल के सबब ख़राब और बरबाद कर दिया है।

इसी वजह से हमें मासूमीन की अज़मत को पहचानने की ज़रूरत है क्यूँकि हम ज़ाती तौर पर एक मासूम रहबर और नमूनए अमल के मोहताज हैं। इन्सान की शान और क़दर इतनी ज़्यादा है कि ख़ुदा उसकी हिदायत के लिए किसी मासूम से कम पर राज़ी नहीं हुआ अब जो भी अपना हादी मासूम के अलावा किसी दूसरे को बनाए वह अपने ही हक़ में सितम और बहुत बड़ी ख़्यानत करता है और जो कोई भी मासूम के सिवा किसी दूसरे को रहबर और नमूनऐ अमल बनाने की राय दे तो वह ख़ुद अपने और उस दूसरे पर सितम करता है और बहुत बड़ी ख़्यानत करता है। लिहाज़ा हमें मासूम की अज़मत को पहचानने की सख़्त ज़रूरत है क्यूँकि उनके अलावा कोई भी हमारे लायक़ नहीं हो सकता। हमें मासूम की अज़मत को पहचानने की ज़रूरत है क्यूँकि हम अपनी उम्र को बरबाद करना नहीं चाहते और हम हैरानी व परेशानी से भी दूर हैं। इसीलिए हर बात से पहले हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी इलाही रहबरो हिदायत करने वाले इमामों ख़ासतौर से अपने ज़माने के इमाम को पहचानने की है कि जिनके सहारे के बग़ैर हम पिछड़े हुए और लाचार, भटके हुए और हैरान हैं उनके सहारे के बग़ैर हमारी सारी मेहनतें और काम बेकार और बे नतीजा हैं।

इसीलिए तो हम उनकी ज़ियारत के वक़्त इस तरह कहते हैं – ''तुम पर सलाम ऐ ख़ुदा के सीधे रास्ते, कि जो भी आपसे अलग चला वह हलाक हो गया।''

ख़ुदा ने मासूमीन की पैरवी का हुक्म इसलिए दिया है कि इन्सान परेशानी और सख़्ती में न पड़े और नेकी के रास्ते को आसानी से तय करे और इसलिए भी कि मासूमीन जो ख़ासकर रहबर हैं हिदायत के लिए इनको छोड़ कर किसी दूसरे को हादी न बनाऐं क्यूँकि वह तो इन्सानियत के बारे में कुछ भी नहीं जानते उनसे बचें क्यूँकि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि –''ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ'' इमामे मौहम्दे बाक़िर (अ.स.) से इस बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़रमाया –''सच्चों से मुराद हम हैं'' और आयत में ख़ुदा से डरो का ज़िक्र सच्चों के साथ होने के हुक्म से पहले एक ख़ास मानी में हुआ था। यह ख़ुदा की तरफ़ से डराने के लिए कहा था कि अगर लोग ख़ुदा और हक़ के इमामों का साथ न दें और अपने आपको उनके सुपुर्द न करें और नेक व सीधे रास्ते से हटकर तबाही व बरबादी के रास्ते पर चलें तो आख़रत में अज़ाब का मज़ा चखेंगे और वह अज़ाब कि जो उन्होंने अपने आपके लिए तैयार किया है यानी जो उसके वजूद के लायक़ कमालात की वजह से न पहुंचने वाला अज़ाब और उन चीज़ों से अपने को महरूम करना कि जिनकी उसे ज़रूरत है और वह उसकी ख़ुशी के लिए ज़रूरी भी हो।

इमामे मौहम्दे बाक़िर (अ.स.) फ़रमाते हैं कि –''ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मैं उन लोगों पर यक़ीनन अज़ाब नाज़िल करूंगा कि जो मुसलमान हैं फिर भी ऐसे ग़लत इमाम की पैरवी करें कि जो ख़ुदा की तरफ़ से न हो चाहे वह लोग नेक और परहेज़गार ही क्यूँ न हों और उन मुसलमानों को माफ़ कर दूंगा कि जो इस्लाम में ऐसे इमामे आदिल की पैरवी करें कि जो ख़ुदा की तरफ़ से हों चाहे वह लोग

ज़ालिम और बुरे आमाल वाले ही क्यूँ न हों'' इमामे बाक़िर (अ.स.) की इस वज़ाहत से इस जुम्ले के मानी ''कि ख़ुदा से डरो'' भी वाज़ेह हो गये कि वह इमामों यानी सच्चों से मिल जाओ का हुक्म आने से पहले का हुक्म था।

इन बातों से यह पता चला कि इस दुनिया और आख़रत की नेकी को हासिल करने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ अल्लाह की तरफ़ से ख़ास रहबर जो पूरा पूरा नमूनए अमल है और मासूम भी हो उसको रहबर मानें और वह भी इस तरह कि अगर इस नमूनए अमल (आईडिल) से महरूम हो जाऐं तो चाहे कितनी ही मेहनत से नेक व अच्छे काम करें तब भी उसका कोई नतीजा नहीं मिलेगा। लेकिन अगर हम एक मासूम आईडियल के साथ कोई नेक काम करेंगे तो उसका नतीजा ज़रूर मिलेगा चाहे हमारा वह नेक काम शको शुबह से दो चार ही क्यूँ न हो।

इसीलिए कुरान करीम में है कि –''उससे ज़्यादा भटका हुआ कौन है कि जो ख़ुदा की हिदायत को छोड़कर अपनी मनमानी करे'' अब इन्सान या तो ख़ुदा के भेजे हुए रहनुमा, इल्म, व तजरबेकार माहिरे दीन की पैरवी करने वाले हैं कि ऐसी सूरत में वह ख़ुश नसीब और हिदायत पाये हुए होते हैं या अपनी मनमानी करने और ख़ुदा के भेजे हुए हादी से फ़ायदा नहीं उठाते तो वह भटके हुए और बुरी क़िसमत के लोग होते हैं।

इमामें मूसा काज़िम (अ.स.) इस आयत के बारे में फ़रमाते हैं कि –''सबसे ज़्यादा भटका हुआ वह है कि जो मासूमीन में से किसी इमाम के बग़ैर ख़ुद अपनी अक़्ली राय से दीन को समझता हो।''

इमामे बाक़िर (अ.स.) ने रसूले ख़ुदा की हदीस बयान फ़रमाई कि –'' जो भी चाहता है कि वह पैग़म्बरों की तरह जिये और शहीदों की तरह मरे और उस जन्नत को कि जिसे ख़ुदा ने पैदा किया है उसमें रहे तो उसे अली की पैरवी करनी चाहिए और उनके दोस्तों से दोस्ती करे और उनके बाद आने वाले इमामों की पैरवी करे इसलिए कि यह मेरे एहलेबैत हैं और मेरे ही नूर से पैदा हुए हैं, ऐ ख़ुदा मेरी अक़्ल और इल्म इन्हें अता कर दे और मेरी उम्मत के उन लोगों पर लानत कि जो इनके मुख़ालिफ़ हैं, ए ख़ुदा उनके लिए मेरी शफ़ाअत नहीं है।''

इसी तरह रसूले ख़ुदा के हुक्म को बयान फ़रमाते हैं –''तुम्हारी उम्मत के बुरे लोगों पर मेरी हुज्जत पूरी और कामिल है वही लोग कि जिन्होंने अली की विलायत को छोड़कर उनके दुश्मनों से दोस्ती की है और वह उनकी फ़ज़ीलत और उनके बाद उनके नाइबों से इनकार करते हैं, इसलिए कि तुम्हारी फ़ज़ीलत उनकी फ़ज़ीलत, तुम्हारी इताअत उनकी अताअत, तुम्हारा हक़ उनका हक़ और तुम्हारी ना फ़रमानी उनकी ना फ़रमानी है। वह सब तुम्हारे बाद इमाम हैं और तुम्हारी रूह उनके बदन में है और तुम्हारी रूह वही है जो तुम्हारे ख़ुदा की तरफ़ से तुम्हारे अन्दर फूँकी गई है और वही तुम्हारे एहलेबैत हैं जो तुम्हारे नूर, गोश्त व ख़ून से बने हैं। ख़ुदा ने तुम्हारी और तुमसे पहले के पैग़म्बरों की सुन्नत को इनमें जारी रखा। यह तुम्हारे बाद मेरे इल्म के ख़ज़ाने हैं इनका मुझ पर हक़ यह था कि मैं इनको बड़ा बनाऊ इनको चुनूं पाक व दोस्त रखूँ और जो भी इनको दोस्त रखे और इनकी पैरवी करे और इनकी फ़ज़ीलत को माने वह निजात पायेगा। बेशक जिबरईल उनके और उनके बाप और दोस्तों के

नाम और जो उनकी फ़जीलत को मानते हैं उनके नाम मेरे लिये लाये थे।

इमामे बाक़िर (अ.स.) ने रसूले ख़ुदा से हदीस बयान फ़रमाई –''रहमत की हवा, आराम, कामयाबी, मदद, फ़तह, बरकत, बुज़ुर्गी, बख़शिश, अमान, दौलत, ख़ुशख़बरी, ख़ुदा की ख़ुशी, क़रीब होना उसकी मदद व करम, उम्मीद और ख़ुदा से दोस्ती यह सब उसके लिए है कि जो अली (अ.स.) को दोस्त रखे और उनकी इताअत करे और उनके दुश्मनों से बेज़ारी रखे और उनके साथ उनके नाइबों की भी फ़ज़ीलत का मानने वाला हो। मुझ पर हक़ है कि मैं उसकी शफ़ाअत करूँ और मेरे ख़ुदा पर उनका हक़ यह है कि वह उनके लिए मेरी शफ़ाअत को क़ुबूल करे। इसलिए कि वह मेरी पैरवी करने वाले हैं और जो मेरी पैरवी करेगा वह मेरा होगा। ''क्या जानने वाले और न जानने वाले बराबर हैं सिर्फ़ नसीहत पाने वाले अक़लमंद ही हैं।''

इमामे बाक़िर (अ.स.) ने इस आयत के बारे में फ़रमया कि –''बेशक हम ही वह लोग हैं जो जानने वाले हैं और वह जो नहीं जानते वह हमारे दुश्मन हैं और अक़्लमंद लोग हमारे शिया हैं।''

जी हाँ अक़लमंद यानी जो किसी काम को भी उसके माहिर से पूछे बग़ैर नहीं करता। शिया इस दलील से अक़लमंद हैं कि वह अपने आपको मासूम के सिवा किसी के सपुर्द नहीं करते और मासूम के सिवा किसी को अपना आइडियल या रहबर नहीं मानते। अक़लमंद यानी जो अपनी क़द्र व उम्र व जवानी को जानता हो और वह इस पर ख़ुश न हो कि उसे इन्सानों के इल्मो हिदायत के दावेदारों के लिए आज़माइश की जगह का चूहा बना दिया जाये और अपने आपको

उसके सपुर्द न करे कि जो बग़ैर जानकारी और सलाहियत के सिर्फ़ मनमानी की वजह से इन्सानों की हिदायत के दावेदार बन जाऐं।

शियों की ख़ूनी तारीख़ गवाह है कि किसी वक़्त भी शियों ने शैतान की विलायत व हुकूमत को नहीं माना है।

मासूमीन इल्म में रासिख़ और किताबे ख़ुदा की तावील के भी आलिम हैं

(कुरान) ''ख़ुदा और वह जो इल्म में रासिख़ हैं उनके सिवा कुरान की तावील को कोई नहीं जानता।''

इमामे सादिक़ (अ.स.) ने इस आयत के बारे में फ़रमाया है कि ''हम ही इल्म में रासिख़ हैं और हम ही कुरान की तावील को भी जानते है।

मासूमीन का सीना ही कुरान की असली जगह है

''बल्कि कुरान रौशन आयतें हैं उन लोगों के सीनों में कि जिनको इल्म दिया गया है'' (कुरान)

इमामे बाक़िर (अ.स.) ने इस आयत की तिलावत फ़रमाई और अपने हाथ से सीने की तरफ़ इशारा फ़रमाया, इमामे सादिक़ (अ.स.) उन लोगें के बारे में फ़रमाते हैं कि जिनको इस आयत के मुताबिक़ इल्म दिया गया है –''वह सिर्फ़ आइम्मए मासूमीन हैं।''

इमामे बाक़िर (अ.स.) मासूमीन की इल्मी अज़मत और शान के बोर में फ़रमाते हैं –''ख़ुदा के बड़े नाम तेहत्तर हरफ़ों पर निर्भर हैं जिनमें से एक हरफ़ आसिफ़ इब्ने बरख़िया के पास था। आसिफ़ ने उस एक हरफ़ को पढ़ा कि उसके और तख़्ते बिलक़ीस के बीच की ज़मीन तय हो गई और उसने तख़्ते बिलक़ीस को उठा लिया कि फिर

वह ज़मीन अपनी असली हालत पर आ गई और यह काम पलक झपकने से भी कम वक़्त में हो गया और हम बहत्तर का इल्म रखते हैं और एक हरफ़ ख़ुदा के पास है कि जिससे वह इल्मे ग़ैब का मालिक है।''

मासूमीन ख़ुदा की ज़ाहिरी व छुपी हुई नेमत हैं

कुराने करीम खुदा की नेमतों के बारे में इस तरह फ़रमाता है –''ख़ुदा ने अपनी ज़ाहिरी और छुपी हुई नेमतों को तुम्हारे लिये ज़्यादा कर दिया है।'' मौहम्मद इब्ने ज़्यादे अज़दी कहते हैं कि –''मैंने अपने आक़ा इमामे मूसा इब्ने जाफ़र (अ.स.) से इस आयत (ख़ुदा की ज़ाहिरी व छुपी हुई नेमतों) के बारे में पूछा तो इमाम ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नेमत इमामे ज़ाहिर और छुपी हुइ नेमत इमामे ग़ायब हैं। फिर उन्हीं से पूछा कि क्या इमामों में से कोई इमाम ग़ायब भी होंगे? फ़रमाया हाँ उनकी शख़्सियत लोगों की निगाहों से ग़ायब रहेगी लेकिन मोमिनों के दिलों से उनकी याद ग़ायब नहीं होगी और वह हममें से बारहवें होंगे। ख़ुदा उनकी हर मुश्किल को आसान और हर सख़्ती को नरम कर देगा उनके लिए ज़मीन के सारे ख़ज़ाने ज़ाहिर और हर मुश्किल काम आसान हो जायेगा यहां तक कि ख़ुदा उनको ज़ाहिर करे और ज़मीन को उनके ज़रिये अदलो इन्साफ़ से भर दे जिस तरह वह जुल्मो जौर से भरी होगी।''

ख़ुदा की नेमतें अनगिनत हैं जैसा कि उसने फ़रमाया है कि कोई भी उसकी नेमतों को नहीं गिन सकता अगर इन्सान को उसके सारे पहलुओं के ऐतबार से देखें और उसे उसी तरह देखें जैसे ख़ुदा ने कहा है एक मौजूद है जो दुनिया से आख़रत तक रहेगा इस तरह कि

उसकी हमेशा की नेकी गिरवी रखी है इन्सानी ज़िन्दगी के कि जिसे वह सही ढंग से दुनिया में गुज़ारता है और इस ऐतबार से उन नेमतों पर ध्यान दें जो ख़ुदा ने उसकी अहमियत समझ कर दी हैं तो यक़ीनन सबसे बड़ी व अहम और ज़रूरी नेमत इमाम व मासूम रहबरों का होना समझ में आयेगा। लिहाज़ा कोई भी नेमत आईडियल या मासूम रहबरों से बड़ी और बेहतर नहीं हो सकती बल्कि बुनियादी तौर पर तो इस अज़ीम नेमत के मुक़ाबले में सारी नेमतें बराबरी करने के क़ाबिल भी नहीं हैं बेहतर तो क्या।

अगर इन्सान को विलायतो इमामत की नेमत के अलावा ख़ुदा की सारी नेमतें दे दी जायें तब भी वह कोई भलाई दुनिया व आख़रत में नहीं देख सकता। अफ़सोस कि इस अज़ीम और बेमिस्ल नेमत से फ़ायदा हासिल करने वाले भी इनकी क़दरो मन्ज़िलत को नहीं जानते और बहुत ही कम उनका शुक्र अदा करते हैं।

हमारा एहलेबैत से ख़ास नाता

इस थोड़ी सी वज़ाहत से आइम्मए मासूमीन की अज़मत ख़ासतौर से इमामे ज़माना का ख़ुदा से राबेता ज़ाहिर हो जाता है। अब हम सही ढंग से उनकी निसबत अपने आप से और उनके रिशते से हमारे लिए ज़रूरी काम क्या हैं उन्हे समझ सकते है पता चला कि मासूमीन कि अज़मत को पहचाने बग़ैर न दुनिया कि नेकियाँ हासिल हो सकती हैं नाही आख़रत की, और हम यह भी जानते हैं कि वही हमारी असल हक़ीक़त हैं हमारा उनसे एक वजूदी रिशता है वह वही रूहे ख़ुदा हैं कि जो सारे इन्सानो पर अपना साया रखते हैं और सब अपने वुजूद

मे उनकी रौशनी व हिदायत रखते हैं और उनही पर निर्भर हैं जैसा कि हम ज़ियारते जामेआ कबीरा में पढ़ते हैं कि –''सारी रूहें तुम्हारी रूह से और सारी जाने तुम्हारी जान से हैं'' हम मासूमीन के वुजूदी राबेते के बारे में कुछ हदीसें लिख रहें हैं। इमामे बाक़िर फ़रमाते हैं –''बेशक खुदा ने हमें सबसे अच्छा पैदा किया और जिससे हमें पैदा किया उसी से हमारे शियों के दिल बनाए लेकिन उनके जिस्म दूसरी चीज़ से बनाए इसीलिए शियों के दिल हमारी तरफ़ झुके हुए हैं क्यूँकि वह उसी से बने हैं कि जिससे हम पैदा हुए हैं।'' इमामे सादिक़ फ़रमाते हैं–''कि हमारे पास जो भी राज़ और इल्म है वह सब ख़ुदा की तरफ़ से है कि जिसके प्रचार के लिए हमें चुना गया है और हम खुदा की तरफ़ से उसकी ही तबलीग़ करते हैं जब हमने इसके लिए कोई मुनासिब जगह या उसके लायक़ या उसे कुबूल करने वाला नहीं पाया तो ख़ुदा ने उसी चीज़ व नूर से ऐसे लोगों को पैदा किया कि जो उसे कुबूल करें कि जिस नूर से मौहम्मदो आले मौहम्मद को पैदा किया था और उनको अपने फ़ज़्लो रहमत से बनाया जिस तरह मौहम्मदो आले मौहम्मद के साथ उसका फ़ज़्लो रहमत है अब जो हमने उसका प्रचार किया कि जिसकी ज़िम्मेदारी हमें ख़ुदा ने दी है तो उन लोगों ने उसे कुबूल किया और याद रखा। इसीलिए उनके दिल हमारी पहचान और हदीसों की तरफ़ झुके अगर वह भी उसी नूर से पैदा न हुए होते तो ऐसे न होते और खुदा की क़सम वह इन बातों को बरदाश्त भी नहीं करते।''

इमामे ज़माना एहलेबैत से ख़ुदा के बन्दों के वजूदी राबेते और यह कि वही बन्दों के ज़िन्दा रहने की असल वजह हैं उसके बारे में फ़रमाते हैं

कि ''हम ख़ुदा के बनाये हुए हैं और सारी मख़लूक हमारी बनाई हुई है।''

दीन और शीयत की रूह का फ़ितरी (स्वभाविक) होना

बहुत ज़रूरी बात यह है जैसे कि पीछे भी इसका इशारा हुआ कि सब लोगों जो ख़ुदा की रूह और फ़ित्रत हैं वह मौहम्मदों ही की झलक हैं यानी उनके अन्दर जो भी दीने मौहम्मद और आले मौहम्मद की नसीहत है उसकी बुनियाद मौहम्मदो आले मौहम्मद ही हैं। ख़ुदा अपने दीन को स्वभाविक बताता है यानी वही चीज़े कि जिनको लोग अपने अन्दर पाते हैं। ''आप अपने चेहरे को दीन की तरफ़ रखें और बातिल से किनारा किये रहें कि यह दीन वह फ़ित्रते ख़ुदा है जिस पर उसने इन्सानों को पैदा किया है और ख़ुदा के पैदा करने में कोई फ़रक़ नहीं हो सकता यही सीधा और मज़बूत दीन है मगर बहुत से लोग इससे बिल्कुल अन्जान हैं।''

इसीलिए कुरान के मुताबिक़ इन्सानी बुलन्दी और इस्लाम के बीच एक बुनयादी राबेता है जो दीन सही और ख़ुदा का दीन है जिसके रहबर चौदह मासूम हैं। अब जो भी इस दीन पर अमल करेगा वह ख़ुदा की रूह और उसके दीन को क़ुबूल करने में माहिर हो जायेगा यानी मौहम्मदो आले मौहम्मद का वही नूर जो उसके अन्दर है जब वह सक्रिय होता है तो वह मौहम्मदो आले मौहम्मद के क़रीब हो जाता है। क्यूँकि दीन के ज़्यादातर एहकाम (आदेश) मौहम्मदो आले मौहम्मद पर ही निर्भर हैं। यह दलील इस तरह भी सही है कि जब भी जहाँ भी कोई व्यक्ति इस्लामे मौहम्मदी को सही ढंग से पहचानता और समझता है (नाकि अमरीकी मनगढ़त इस्लाम जैसे वहाबियत) तो फ़ौरन उसके

दिल में मौहम्मदो आले मौहम्मद की मौहब्बत पैदा हो जाती है इस किताब के लेखक की जब ईरान और ईरान के बाहर ऐसे लोगों से मुलाक़ात हुई जिन्होंने जल्दी ही इस्लाम कुबूल किया था वह भी मौहम्मदो आले मौहम्मद से इसी तरह मौहब्बत करते थे। लिहाज़ा अगर इन्सानों और मौहम्मदो आले मौहम्मद के बीच एक बुनयादी रिश्ता न होता तो इस तरह तेज़ी से उनकी मौहब्बत का दिल में पैदा होना ना मुमकिन था क्यूँकि यह ऐसी मौहब्बत होती है जो नये नये मुसलमानों को भी कुर्बान होने, शहीद होने पर तैयार कर देती है। इसीलिए अगर रिवायत में ख़ास लोग यानी शियों को एहलेबैत के हुक्मो क़ानून को कुबूल करने वाला चुना हुआ ग्रुप कहा जाय तो इसका यह मतलब है कि जो इन्सान भी सही रास्ते को तलाश करने वाली रूह अपने अन्दर मज़बूत करे वो तास्सुब को एक तरफ़ रखे तो वही सही रास्ता ढूंढने वाली रूह उसको शियत और एहलेबैत के मज़हब तक पहुंचा देगी।

एहलेबैत सब इन्सानों की रूह में हैं सिर्फ़ उस क़ीमती जौहर को और ख़ुदा के ख़ास करम को अपने अन्दर मज़बूत करें ताकि मौहम्मदो आले मौहम्मद की वजह से वह बेदार हो जाए और उनके करम से उसमें जागरूकता आ जाय और जिसने भी यह काम किया वह शियत यानी ख़ुदा की रूह के आदेशों और स्वभाविक आदि तक पहुंच गया यानी वह एहलेबैत के आदेशों को और उनकी रहबरी व हुकूमत को कुबूल करने में कामयाबी प्राप्त करता है और ग़लत रहबरों और ना तजरबेकारों को छोड़ देता है। और एहलेबैत के आदेशों पर चलने, अपने लिए उनको आईडियल बनाने में कोशिश करता है क्यूँकि वही

ख़ुदा के ज्ञान के जानकार हैं इसलिए सारे इन्सानों के लिए दीने हक़ में आने का रास्ता एहलेबैत को आईडियल बनाकर उनकी सरपरस्ती मे रहकर सीधे रास्ते पर चलने के लिए खुला हुआ है और दीने हक़ मे आये या नही इसके लिए ज़रूरी है कि इस्लाम की ज़रूरी बातें मालूम करने के बाद तास्सुब को एक तरफ फेंक कर सिर्फ़ सच्चाई को अपने सामने रखें।

हमारे हक़ीक़ी बाप तो एहलेबैत ही हैं

हमारे माँ बाप से भी बहुत ज़्यादा क़रीबी और ख़ास रिश्ता हमसे एहलेबैत का है क्यूँकि हमारे माँ बाप सिर्फ़ हमारे जिस्म के हिस्सों या मिज़ाजी बातों और दुनयावी चीज़ो में ही माँ बाप हैं लेकिन हमारी असल रूह व ज़ात की हक़ीक़त के साथ इन्सानी, ख़ुदाई और हमेश्गी के ज़िम्मेदार हैं इस दलील की वजह से ही वह ख़ुदा के बाद दुनिया के हमारे सारे रिश्तेदारों से अहम और अफ़ज़ल हैं चाहे उनमे माँ बाप हों या कोई दूसरा क़रीबी रिश्तेदार क्यूँ न हो वह हमारे ऐसे सच्चे, ख़ुदाई व आसमानी माँ बाप हैं कि हमारे ख़ुदा से इश्क़ का वास्ता और हमें ख़ुदा तक पहुंचाने का ज़रिया हैं मासूमीन वह हैं कि जिनके बग़ैर हम ख़ुदा तक कभी नहीं पहुंच सकते जैसा कि हम ज़ियारते जामेआ कबीरा में इस सच्चाई को इस तरह पढ़ा करते हैं –''जो भी ख़ुदा तक पहुंचने का इरादा करता है वह आपसे ही शुरूआत करता है।

वह ख़ुदा का सीधा रास्ता और ख़ुदा का दरवाज़ा हैं इसीलिए हम अपनी ज़रूरत की सारी चीज़ों को उनपर फ़िदा रखते हैं और उनके रास्ते पर चलते हैं और उनसे यह भी कहते हैं कि ''आप पर मेरे माँ

बाप क़ुर्बान'' यानी हम हर तरह से आप की ख़िदमत के लिए हर क़ीमती चीज़ क़ुर्बान करने के लिए तैयार हैं ताकि हम अपनी पाकीज़ा, ख़ुदाई और आसमानी हक़ीक़त तक पहुँच सकें यानी हमेश्गी और असली बाप (एहलेबैत) और असली वतन (आख़रत) तक पहुँचने के लिए हमें दुनिया की कोई चीज़ नहीं रोक सकती चाहे रिश्तेदार हों या दुनियावी नेमतों की मौहब्बत।

इस बारे में रसूले अकरम जो कि सारी दुनिया के लिए रहमत हैं इस तरह फ़रमाते हैं ''कोई आदमी उस वक़्त तक ख़ुदा पर ईमान नहीं रख सकता जब तक कि उसके नज़दीक मैं उसके लिए ख़ुद उससे भी प्यारा न हूँ और मेरी औलाद को अपनी और मेरे एहलेबैत को अपने और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से अफ़ज़ल व बेहतर न माने।''

इस इबारत का मतलब कि मेरी ज़ात को ''यानी मुझे'' अपनी ज़ात यानी अपने आपसे ज़्यादा अफ़ज़ल माने इस बात को ध्यान में रखते हुए कि मौहम्मदो आले मौहम्मद की ही रूह है जो हमारी असली ज़ात और रूह है यही है कि हम अपनी असली और पाकीज़ा व ख़ुदाई और आसमानी ज़ात को इस मामूली, ज़मीनी, जिस्मानी ज़ात से बहुत ज़्यादा अहम मानें क्यूँकि यह उसके साथ कुछ समय के लिए है और उसके मरते ही उससे अलग हो जायेगी।

दूसरे लफ़्ज़ों में ख़ुदा, आख़रत और हमेशा की ज़िन्दगी पर ईमान इस मामूली और वक़्ती व ज़मीनी ज़ात पर बढ़ावा दिये बग़ैर मुमकिन ही नहीं बल्कि झूठ है। बेशक वह हमारी बुनयाद और असल हैं कि हम सबको उनकी तरफ़ पलटना है और हम सब का हिसाब भी उनके

साथ होगा। हम चूंकि अपनी असल से मिले हुए हैं इसीलिए आराम और ख़ुशी से हैं।

एहलेबैत हमारे सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं

हम जानते हैं कि इस्लाम में सिलए रहम (रिश्तेदारों से अच्छा बरताओ) वाजिब और उसका छोड़ना गुनाहे कबीरा में से है और ख़ुदा उससे अज़ाब का वादा कर लेता है जो अपने रिश्तेदारों से नाता तोड़ दे और कुरान में इसकी कुछ आयतें मौजूद हैं और सूरए राद में अक़लमन्दों की तारीफ़ मे इस तरह फ़रमाता है कि –''और जो उन ताल्लुक़ात को क़ायम रखते हैं जिन्हें क़ायम रखने का ख़ुदा ने हुक्म दिया है।''

इमामे सादिक़ (अ.स.) इस आयत के बारे में फ़रमाते हैं कि –''ताल्लुक़ की एक क़िस्म सिलए रहम है और आयत की तावील का मक़सद तुम्हारा हमसे ताल्लुक़ रखना है'' यानी हम एहलेबैत तुम्हारे सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं कि तुम पर वाजिब है कि हमसे ताल्लुक़ रखो। या यूँ कहा जाए कि ''हमारा इस दुनिया में एहलेबैत से ज़्यादा क़रीबी, अफ़ज़ल और मेहरबान कोई दूसरा नहीं है।''

सबसे बड़ा ज़ुल्म बहुत बड़ी ख़्यानत

अब तक जो कुछ कहा गया चाहे वो इन्सान और ख़ुदा के राबेते या इन्सान का ख़ुदा के लिए कोई काम करना हो ताकि वह ख़ुदा का ख़ास बन्दा बन जाए और बेइन्तहा कमाल और नेकी तक पहुँच जाए इसी तरह इस रास्ते पर मासूमीन के मुताबिक़ ध्यान देना और उनका ख़ुदा से और हमसे राबेता आदि. इन सब बातो से हम कुछ नतीजे प्राप्त करते हैं।

1.इन्सान की सबसे बड़ी ज़रूरत और ख़ुशी की बुनियादी वजह उसका अपनी असल और सच्ची बुनियाद से मिलना है और वह है ख़ुदा जो बड़ा ही मेहरबान है कि जिसके हाथ से इन्सान और दुनिया पैदा हुई और इन्सान और दुनिया की हिदायत उसी पर निर्भर है। वास्तव में उसके अलावा इतनी ताक़त और हक़ कोई नहीं रखता। इसीलिए ख़ुदा से ताल्लुक़ तोड़ना इन्सान के लिए बिल्कुल भटकने और बरबाद होने के बराबर है। लिहाज़ा सबसे बड़ा ज़ुल्म जो मुमकिन है कि एक इन्सान अपने या किसी दूसरे के हक़ में अन्जाम दे वह यह है कि वह ख़ुदा या हादी, मक़सद या असल मक़सद के नतीजे से उसका नाता तोड़ दे या कमज़ोर कर दे।

इसी वजह से ख़ुदा के कलाम और क़ुरानो एहलेबैत की ज़बान में हर गुनाह या ऐसा नाता जो उसकी असल और हक़ीक़त से तोड़ने या कमज़ोर करने की वजह बने उसको ''ज़ुल्म'' के लफ़्ज़ यानी रास्ते से अलग होने और हक़ीक़ी व लायक़ शान से भटकने के बराबर कहा है।

2.लोगों में सिर्फ़ मासूमीन ही ख़ुदा की तरफ़ से रहबर और ख़ुदा के पूरे पूरे मज़हर, ख़ुदा के सच्चे जानशीन और वही ख़ुदा के रास्ते तक पहुँचने वाले ख़ास लोग हैं। ख़ुदा ने सारे इन्सानों को हुक्म दिया है कि उस तक पहुंचने के लिए उनसे फ़ायदा प्राप्त करें कि जो रहबर हैं वास्ता और भरोसे वाला ज़रिया हैं ख़ास तौर से जो कि मासूमीन हैं। जिस तरह कि क़ुरान की कई आयतों से समझ में आता है ख़ासतौर से यह आयत –''ए ईमान वालों ख़ुदा से डरो और उससे क़रीब होने के लिए वसीला ढूंढो'' इसी तरह से मासूमीन की जो हदीसें ब्यान हुई हैं उसके एतबार से सिर्फ़ और सिर्फ़ मासूमीन ही सही वसीला हैं कि

ख़ुदा ने हमें उनके बाद उन्हीं के नूर से पैदा किया और उनके नूर की झलक हमारे अन्दर डाली ताकि इस तरह ख़ुदा से नाता बाकी रहना मुमकिन हो और दूसरे लोगों के लिए भी पहचानने का ज़रिया हो जाये।

3.जुल्म की उस तारीफ़ को ध्यान में रखते हुए यह नतीजा निकाला जा सकता है कि इन्सान का मासूमीन से नाते का टूट जाना या कमज़ोर हो जाना जोकि तन्हा ख़ुदा तक पहुँचने का ज़रिया हैं और ख़ुदा उनके सिवा हमारे लिए किसी दूसरे को आईडियल या रहबर बनाने पर राज़ी नहीं है ये ऐसा ही जुल्म है कि जो इन्सान और ख़ुदा के बीच नाता टूट जाने पर कहा जाता है। दूसरे तरीक़े से यूँ कहा जाये कि जब मासूमीन से नाता कोई अपना या किसी दूसरे का जान बूझकर तोड़ दे तो उसने बहुत बड़ा गुनाह किया क्यूँकि उसने अपने या दूसरों के हाथों को ख़ुदा की रस्सी और ख़ुदा तक पहुंचने के ज़रिये से अलग कर लिया।

4.इसके अलावा एक और ख़ास नतीजा कि जो पिछले पैराग्राफ़ से भी मिला होगा वो यह है कि मानव इतिहास में सबसे बड़ी ख़्यानत और जुल्म लोगो को ख़ुदा के रहबरों और मासूमीन से अलग किया जाना है जो आज तक जारी है।

मासूमीन यानी दीन के विशेषज्ञ और वास्तविक ज्ञानी को छोड़ना और हिदायत और इन्सान की रहबरी को रोकना रूह के बड़प्पन और वुजूद के अलग–अलग तरीक़ों के बावजूद आदमी की नेकियों के लिये कोशिश करने के एहसास और अहमियत के साथ अनपढ़ और ना तजरबेकार लोगों के हाथों इस तरह का हिदायती काम देना यानी ये

जुल्म की एक बड़ी क़िस्म और इन्सानों की ज़िन्दगी में भटकाने के तरीक़े को जन्म देना है। अक़लो शरीअत के हुक्म के तईं इन्सानों की ज़िन्दगी के लिए नेकी और हक़ के रास्ते की हिदायत से ज़्यादा ज़रूरी और बुनयादी कोई काम नहीं है।

जो कुछ भी मासूमीन से नाता रखने की ज़रूरत के बारे में और ख़ास तौर से इमामे ज़माना को पहचानकर उनसे नाता जोड़ने और इन्सान की वह आख़रत की ज़िम्मेदारी जिसमे इमामे ज़माना के सामने दुनिया व आख़रत के बारे में पूछ गछ होगी और इसी तरह कुरान की नसीहत और ख़ुदा के रहबरों के कलाम में साफ़–साफ़ विलायत (हुकूमत) के बारे में आया है उन सबका मतलब बहुत अहम और ज़रूरी हिदायत का विषय है।

5.रसूले इस्लाम के बाद सबसे बड़ा जुल्म यह हुआ कि रसूल के ख़ानदान और एहलेबैत की हिदायत व रहबरी से लोगों को महरूम रखा गया कि आज भी इन्सानियत उसकी सज़ा भुगत रही है और उस जुल्म के परिणाम झेल रही है।

इन्सान उनसे महरूम होकर कुछ और मुसीबतों का भी शिकार हो गया क्यूँकि इन्सानों को सही ढंग से हिदायत करना उनके हाथों से छीन लिया गया कि जो ख़ुदा की तरफ़ से मासूम और दीन के विशेषज्ञ थे और जाहिलों व लालचियों के हाथ हिदायत व रहबरी सौंप दी अफ़सोस कि जिनका ढंग आज तक जारी है। ख़ुदा की हिदायत से महरूम होने से बड़ी इन्सान के लिए न कोई मुसीबत है न परेशानी क्यूँकि यह इन्सान के वुजूद के तीन दरजों में उसकी पहचान की बुनियाद है। इसकी ज़िम्मेदारी सिर्फ़ और सिर्फ़ सच्चे इमाम व मासूमीन

की ही है कि जो ख़ुदा के इल्म का ख़ज़ाना भी हैं और दीन का कोई नुक़्ता भी उनके लिए छिपा हुआ नहीं है।

इस बात के बाद मुसीबते आज़म (बड़ी मुसीबत) के मानी आसानी से समझ में आ गऐ होंगे क्यूँकि मासूमीन से उनकी हुकूमत व रहबरी जो दुनया भर के इन्सानों के लिए थी उसे छीन लिया गया।

दोनों मुसीबतों में हमारी ज़िम्मेदारियाँ

जब अज़ादार ने अपनी ख़ास पहचान और गहरी जानकारी से इस्लाम की बुनियादी और असली बातों से फ़ायदा हासिल कर लिया और वह मुसीबते अज़ीम व आज़म को काफ़ी हद तक पहचान गया तो अब उसे उसके मुक़ाबले में अपनी ज़िम्मेदारी को भी समझना चाहिए एक सच्चे अज़ादार के लिए यह सवाल ख़ड़ा होता है कि एहलेबैत जो उसकी असल व बुनयाद हैं उनके साथ इस तरह के सुलूक के बाद उसकी क्या ज़िम्मेदारी है?

हम अगले दो हिस्सों में उन ज़िम्मेदारियों को बयान करेंगे कि जो इन दोनों मुसीबतों के मुक़ाबले में हर किसी की अपनी और मिल जुलकर हम सबकी है।

भाग – 4

बड़ी मुसीबत में हमारी ज़िम्मेदारी

अपने माँ बाप के लिए हमारी ज़िम्मेदारी 116
बड़ी मुसीबत और सबसे बड़ी मुसीबत के बीच नाता 118
बड़ी मुसीबत का कड़वा और ख़राब असर 119
बड़ी मुसीबत का व्यक्तिगत असर 120
बड़ी मुसीबत का सामाजिक असर 121
1. ज़ालिमों से जंग के लिए जागरूकता 122
2. ज़ालिमों की शक्ति को सीमित करना 122
3. हिदायत और बुलन्दी 123
सबसे बड़ी मुसीबत का कड़वा असर 123

अपने माँ बाप के लिए हमारी ज़िम्मेदारी

रसूले ख़ुदा अमीरूल मोमीनीन से बातें करते हुए इस तरह फ़रमाते हैं ''ए अली मैं और तुम इस उम्मत के बाप हैं और माँ बाप का हक़ औलाद पर यह है कि ज़रूरत के वक़्त वह उनके काम आयें रहम करें ताकि हक़ अदा करने वालों में शामिल हों।''

बहुत अच्छा होगा कि पढ़ने वाले रसूल की इस बात पर ज़्यादा ध्यान दें कि उन्होंने अपना और अपने एहलेबैत का नाता इस उम्मत से किस तरह ब्यान किया है और किस तरह उम्मत से उनके असली माँ बाप होने के नाते, हक़ अदा करने की तवज्जो दिला रहे हैं इस हदीस के मुताबिक़ एक ऐसा वक़्त आएगा कि जब पूरी उम्मत के लिए वाजिब होगा कि अपनी सारी चीज़ो के साथ अपने हक़ीक़ी माँ बाप का ध्यान रखें और औलाद के नाते जो उन पर ज़िम्मेदारियाँ हैं उनको पूरा करें।

मगर अफ़सोस इस बात पर है कि कभी भी मुसलमानों ने अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा नहीं किया। रसूले ख़ुदा के बाद आपके एहलेबैत को एक के बाद एक करके बेपरवाही से लोगों की दुश्मनी में शहीद किया जाता रहा। कुछ लोगों को छोड़कर किसी ने भी औलाद होने की ज़िम्मेदारी पर ध्यान नहीं दिया। ज़रूरी सवाल ये है कि इस वक़्त हम अपने असली बाप जो मज़लूम भी हैं उनके साथ क्या हक़ अदा कर रहे हैं? क्या हम औलाद होने की उन ज़िम्मेदारियों को अदा कर रहे हैं कि जिनका हमें रसूल ने हुक्म दिया है?

इमामे हसन असकरी (अ.स.) फ़रमाते हैं –''तुम्हारे सबसे अफ़ज़ल बाप जो तुम्हारे शुक्र के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं वह हज़रते

मौहम्मद व अली हैं और अली (अ.स.) ने फ़रमाया कि मैंने रसूले ख़ुदा को यह फ़रमाते हुए सुना है कि इस उम्मत के दो बाप मैं और अली हैं बेशक उनपर हमारा हक़ उनके माँ बाप से कहीं ज़्यादा है क्यूँकि अगर वह हमारी पैरवी करते रहेंगे तो हम उन्हें जहन्नम से बचाकर हमेशा के लिए जन्नत तक पहुंचाऐंगे और उनको ग़ुलामी से बेहतरीन, आज़ाद लोगों से मिला देंगे।''

सही व असली माँ बाप वही हैं जो लोगों को भटकने न दें और उनकी असली जगह और हमेशा के वतन तक पहुँचाएं ऐसे माँ बाप के बग़ैर इन्सान नेकियों को नहीं देख सकता इसी वजह से मौहम्मदो आले मौहम्मद हमारे सबसे अफ़ज़ल बाप हैं कि जिनका हक़ भी हमारे माँ बाप और दूसरे रिश्तेदारों से कहीं ज़्यादा है।

यहाँ तक तो यह साफ़ हो गया कि एहलेबैत से हमारा एक ख़ास नाता है और वही हमारे बाप और ख़ास रिश्तेदार हैं और ख़ुदा के सिवा किसी से भी हमारा इतना ख़ास और क़रीबी रिश्ता नहीं है और ख़ुदा के बाद कोई भी उनसे ज़्यादा हमारे लिए मेहरबान और दया करने वाला नहीं है बल्कि वह तो ज़मीन में ख़ुदा के भेजे हुए हैं और हमारे व सब इन्सानों के लिए ख़ुदा की रहमत और दया को ज़ाहिर करने वाले हैं। रसूले अकरम की हदीस के नाते भी हमारे ऊपर औलाद होने पर कुछ ज़िम्मेदारियां होती हैं कि आपने उन ज़िम्मेदारियों को सिर्फ़ एक जुम्ले में इस तरह कहा कि–''ज़रूरत के वक़्त उनके साथ दया व कृपा से व्यवहार करो'' हदीस में ''औक़ात'' वक़्त की जमा को (बहुवचन) इस्तेमाल किया है जिससे पता चलता है कि हमारी ज़िम्मेदारियां अलग–अलग और बार–बार होंगी। अब हम कह

सकते हैं कि अगर उन तमाम वक़्त को एक जगह इखटट्ा करें तो उनकी दो क़िस्में बनती हैं।

1. जब हमारे सामने उनके लिए कोई बड़ी मुसीबत आये तो उस वक़्त हमारी ज़िम्मेदारी।
2. जब हमारे सामने उनके लिए कोई सबसे बड़ी मुसीबत आये तो उस वक़्त हमारी ज़िम्मेदारी

इन दो ज़िम्मेदारियों के नाते को सही ढंग से समझने के लिए ज़रूरी है कि पहले उन दो मुसीबतो के बीच के नाते पर ध्यान दें।

बड़ी मुसीबत और सबसे बड़ी मुसीबत के बीच नाता

दोनों मुसीबतों के बीच ख़ास सम्बन्ध है जिसके पहचानने से हमें हर दो मुसीबतों के मुक़ाबले में अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करने में बहुत मदद मिलेगी।

1.दोनों मुसीबतें ही बड़ी सख़्त और दु:खद हैं लेकिन ज़मीन पर ख़ुदा के दीन की हुकूमत में ख़ुदा के रहबरों का कामयाब न होना और दुनिया के लोगों का ख़ुदा के ख़ास और मासूम रहबरों की हुकूमत से महरूम किया जाना बहुत बड़ी मुसीबत है। इसलिए कि ख़ुदा के रहबरों और उनके मानने वालों ने बड़ी–बड़ी मुसीबतें और उसकी सूरतें सिर्फ़ सबसे बड़ी मुसीबत से बचने के लिए ही सहीं। जबकि ज़ालिमों और दुश्मनों की तरफ़ से बड़ी–बड़ी मुसीबतों को ख़ुदा के रहबरों का सहन करना सबसे बड़ी मुसीबत की ही वजह से था।

नेक लोगों ने इस बड़ी मुसीबत को अपनी जान की क़ीमत देकर ख़रीदा ताकि वह सबसे बड़ी मुसीबत से बचा दें और उससे जंग की

जा सके लेकिन मनमानी करने वालों ने बड़ी मुसीबत को इसलिए बनाया और सहा ताकि वह सबसे बड़ी मुसीबत के लिए रास्ता खोल दें। (मुसीबते आज़म) सबसे बड़ी मुसीबत यानी लोगों का ख़ुदा के दीन से दूर होना और कुफ़्रो शिर्क व निफ़ाक़ से मिलकर उसको बढ़ावा देना। या यूँ कहा जाए कि सबसे बड़ी मुसीबत नतीजा है बड़ी मुसीबत का, लिहाज़ा सबसे बड़ी मुसीबत से ख़ुदा और नेक लोगों को नफ़रत है और शैतान और मनमानी करने वाले उसको बहुत ज़्यादा पसन्द करते हैं।

2.बड़ी मुसीबत के दो भाग हैं एक कड़वा एक मीठा लेकिन सबसे बड़ी मुसीबत सिर्फ़ एक वह भी कड़वा और ख़राब भाग रखती है।

बड़ी मुसीबत का कड़वा और ख़राब असर

बड़ी मुसीबत का कड़वा और ख़राब हिस्सा यह है कि इन्सान रसूल के एहलेबैत और उनके साथियों की शहादतो मुसीबत को सोच कर दुखी हो जाता है और यह एक स्वभाविक चीज़ है कि हर इन्सान जब किसी दुखद बात को देखता या सुनता या किसी को मुसीबत में या जुल्म के साथ क़त्ल होते देखता है तो ख़ुदबख़ुद दुखी हो जाता है अब अगर इस दुखी का वह क़त्ल होने वाला क़रीबी रिश्तेदार या इसकी नज़र में सीधा और नेक शरीफ़ हो तो उसका दुख और बढ़ जाता है इस दुख की सूरतें अलग–अलग सामने आती हैं।

कभी–कभी इन्सान को सिर्फ़ दिली तकलीफ़ होती है और कभी यही दुख चेहरे से भी मालूम होता है और कभी इन्सान की ज़बान भी इस दुख को बताती है और इसके अलग–अलग तरीक़े होते हैं कभी तो वह ज़बान से दुख ज़ाहिर करता है कभी ऐसे लफ़्ज़ कहता है जिससे

शिकायत या एतराज़ का पता चलता है कभी दुख के ज़्यादा होने का पता तो कभी रोना पीटना, चीख़ना चिल्लाना या इससे भी ज़्यादा जिस्म को पीटना यह सब दुख ज़ाहिर करने के तरीक़े हैं।

बड़ी मुसीबत के सामाजिक नतीजों की बहस में मौहब्बत व जानकारी की जो बातें बताई गईं उनके अलावा लोगों के दिलों के दुखी होने की हद और उनके दिलों के पाक साफ़ होने और इस ग़म के कम या ज़्यादा होने का भी असर होता है बड़ी मुसीबत का कड़वा और ख़राब हिस्सा अपनी बुरी अवस्था के साथ अलग–अलग सूरतों में अज़ादारी में शामिल हो जाता है जो बड़ी मुसीबत के लिए एकांकी या सामाजिक बुराइयों की जड़ और वजह बनता है।

बड़ी मुसीबत का एक तरीक़ा उसको चाहना और संवारना है और दूसरा दुखदाइ व नुक़सान वाला है।

पहला तरीक़ा जो बड़ी मुसीबत को चाहने और संवारने का आसान तरीक़ा है वह व्यक्तिगत व सामाजिक ढंग के सही असरात का है जिसका थोड़ा बयान नीचे लिख रहे हैं :–

अ–<u>बड़ी मुसीबत का व्यक्तिगत असर</u>

बड़ी मुसीबत का व्यक्तिगत नतीजा उसी को पता चलता है कि जो दुखी और मज़लूम हो। ख़ुदा की राह में जिहादो शहादत, क़ैदोबन्द, मारपीट, भूक प्यास, बेइज़्ज़ती व तोहमत ये सब इन्सान के लिए इज़्ज़त और बुलन्दी है और ख़ुदा के रास्ते में तो हर सख़्ती व परेशानी को सहना रूह को संवारना और अपनी बुलन्दी के साथ दुनिया व आख़रत की नेकी का ज़रिया है। सच्चे माशूक़ और असली माबूद (ख़ुदा) के लिए कुर्बानी देना ओर उसके लिए परेशानी सहना ये सबसे

ख़ास अपने ईमान और इश्क़ को साबित व ज़ाहिर करने का तरीक़ा है।

बड़ी मुसीबत के एकांकी नतीजे, उसकी अहमियत के साथ लिखने के लिए बहुत ज़्यादा वज़ाहत की ज़रूरत है चूंकि यह किताब इमाम हुसैन की शहादत के सामाजिक व सियासी वाक़ेआत को उजागर करने के लिए लिखी है लिहाज़ा इस बारे में किसी और जगह लिखेंगे।

ब–<u>बड़ी मुसीबत का सामाजिक असर</u>

1.ज़ालिमों से जंग के लिए जागरूकता

इसमें कोई शक नहीं कि ''ख़ून'' और ''मज़लूमियत'' चाहे अलग–अलग सूरतों में क्यूँ न हों अगर वह हक़ के साथ हैं तो वह कमज़ोर रूहों को ताक़तवर और जागरूकता देते हैं और उनके अन्दर ज़ालिमों से लड़ने का जज़्बा तैयार करते हैं इसी तरह इससे आज़ाद रूह को चाहते हुए ज़ालिमों से बदला लेने की जागरूकता पैदा करते हैं और इसके मुख्य प्रभाव की कमी या ज़्यादती का सम्बन्ध निम्नलिखित कारण हैं :–

जिसका ख़ून बहाया गया है उसकी अपनी हैसियत, लोकप्रियता और उसके मौजूद असरात

क़त्ल होने वाले मज़लूम की पाकीज़ा हैसियत

मज़लूमियत की सख़्ती व गहराई

क़त्ल होने वाले मज़लूम से लोगों का नाता व सम्बन्ध

ज़ालेमीन से नफ़रत और लोगों का उनको पहचानना कि उनके ग़लत इरादे क्या हैं यह सब बड़ी मुसीबत में सहा जाता है।

दोनों तरफ़दारों यानी मज़लूम के ख़ून के वली के बीच ऊपर लिखी गयीं पाँचों चीज़ों की पहचान का हासिल करना।

इन कारणों मे इतनी जान होती है कि वह एक इन्क़ेलाब (क्रान्ति) की सूरत में बड़ी–बड़ी ज़ालिम हुकूमतों का तख़्ता पलट देते हैं।

इन कारणों और क्रियाओं के बारे में सोच विचार करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यह कारण दो तरह के होते हैं।

1. भावना और एहसास वाले कारण
2. अक़ल और जानकारी वाले कारण

इन दोनों के बारे में और इनके नतीजों के बारे में बाद वाली बहस में लिखेंगे।

2.ज़ालिमों की शक्ति को सीमित करना

ज़ालिमों की शक्ति को सीमित करना और दीनदारी के लिए आज़ाद (माहौल) वातावरण तैयार करना चाहे नसबी (नस्ली) हद तक क्यूँ न हो। उनके लिए जो सियासत, सामाजिक, शिक्षा और नेक लोग व सच्चे इन्सानों के पालन पोषण में सक्रिय हैं। यह असर पहले के असर यानी शैतानों और ज़ालिमों के ख़िलाफ़ इन्क़लाब का नतीजा है लिहाज़ा भावनाऐं व एहसास या अक़लो जानकारी की वजहें जितनी मज़बूत होंगी तो दूसरा असर इतना ही ज़्यादा होता चला जाएगा यानी ज़ालिमों की ताक़त व असर कम और सीमित होता चला जायेगा बल्कि ख़त्म हो जायेगा चाहे कुछ समय के लिए ही क्यूँ न हो।

दूसरे लफ़्ज़ों में यूं कहा जाये कि बड़ी मुसीबत के सामाजिक नतीजे का पहला असर जितना मज़बूत होगा दूसरे असर का नतीजा इतना ही ज़्यादा दिखाई पड़ेगा।

3.हिदायत और बुलन्दी

जब लोग अपने ''एहसास और भावना'' या ''अक़्लो जानकारी'' की वजह से किसी ज़ालिम हुकूमत के ख़िलाफ इन्तेक़ाम की आवाज़ उठाते हैं तो हुकूमत की तरफ़ से उन्हें ख़ुदी ख़ुद उन ज़ालिमों के जवाब देने की वजह से बड़ी मुसीबत को भुगतना पड़ता है जिन मुसीबतों के नतीजे में उनके अन्दर धैर्य के साथ हिदायत और बुलन्दी में भी बढ़ोत्तरी होती है और एकांकी व सामाजी एतबार से हिदायत व बुलन्दी में बढ़ोत्तरी की शुरूआत होती है।

सबसे बड़ी मुसीबत का कड़वा असर

सबसे बड़ी मुसीबत की ख़राब और कड़वी सूरत हर एतबार से स्पष्ट है क्यूंकि जबसे दुनिया के इन्सानों को मासूम रहबरों और हाकिमों से महरूम किया है तब ही से हर जगह ज़ुल्म, भ्रष्टाचार और तबाही व बरबादी यानी इन्सानियत इसी मुसीबत में घिरी हुई है और यह सब कुछ सबसे बड़ी मुसीबत के ही असर हैं।

जब हमें इन दोनों मुसीबतों के बीच आपसी सम्बन्ध और उन दोनों के नतीजों का पता चल गया तो इससे हमें इन दोनों मुसीबतों के लिए हमारी वह ज़िम्मेदारियाँ भी मालूम हो जाती हैं जो ख़ुदा ने हमारे लिए ही बनाई हैं।

जब भी हमारे सामने कोई बड़ी मुसीबत आती है तो हम उसके लिए अपनी ज़िम्मेदारी को समझने में कोई परेशानी नहीं समझते हैं और यह एक सामने की बात है कि हर इन्सान (न सिर्फ़ शिया) जब अपने किसी रिश्तेदार पर जुल्म और सख़्ती को देखता है तो उसका सबसे पहला असर उसके अन्दर ख़ुद ब ख़ुद ग़म और दुख या रोने पीटने की सूरत में होता है।

इसीलिए इमाम हुसैन (अ.स.) पर रोना और अज़ादारी करना सिर्फ़ उनके शियों तक ही महदूद (सीमित) नहीं है बल्कि आपके अज़ादार हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई और दूसरे मज़हब के लोग भी हैं जो आप या आपकी मुसीबतों को जानते हैं पहली–पहली बार यह बात बड़ी अटपटी सी लगती है कि दुनिया में जितनी अज़ादारी इमामे हुसैन के लिए होती है इतनी अज़ादारी और इतना ग़म दुनिया भर में किसी के लिए भी नहीं मनाया जाता। दुनिया के किसी हिस्से में भी यह नहीं होता कि अलग अलग मज़हब के मानने वाले किसी एक धर्म के धर्म गुरू के लिए जोकि अपने धर्म का न हो फिर भी सबके समान उसपर रोऐं और अज़ादारी करें। अब तक जो हम एहलेबैत, ख़ास तौर से इमामे हुसैन से दूसरों के नाते व सम्बन्ध के बारे में बता चुके हैं उसपर थोड़ा सा ध्यान देने से यह बात सही ढंग से समझ में आ जाती है कि इमामे हुसैन को यह ख़ास और सबसे अलग ढंग क्यूँ दिया गया है।

क्यूँकि इमाम हुसैन (अ.स.) के नूर की किरने सारे इन्सानों के दिलों तक पहुँचती हैं इसीलिए जब भी जो भी इमामे हुसैन (अ.स.) और उनकी कुर्बानी की जानकारी प्राप्त करता है चाहे वह किसी भी धर्म

का क्यूँ न हो मुसलमान हो या ग़ैर मुसलमान, अचानक वह दुखी हो जाता है सिवाए उनके कि जिनके दिल दुशमनाने एहलेबैत के ग़लत प्रोपैगन्डों की वजह से सख़्त हो गए लेकिन उनके दिलो तक क्यूँकि इमामे हुसैन (अ.स.) के नूर की झलक पहुंचती है चाहे उनको कुछ पता नही इसलिए उनका दिल ज़रूर दुखी होता है और वह भी इसलिए कि बड़ी मुसीबत के बारे में रोना और अज़ादारी करना एक स्वभाविक न्यून्तम काम है लेकिन यह क्योंकि अज़ादारी को एक ज़िम्मेदारी वाले काम की तरह करें और इतना ज़्यादा इसको क्यूँ करें इसका छोटा सा जवाब बड़ी और सबसे बड़ी मुसीबत के बीच सम्बन्ध के साथ लिखा जा चुका है और अज़ादार तो वैसे भी पहले दरजे मे एहसास और भावनाओं व दूसरे दरजे में अक़लो जानकारी को जागरुकता देने के लिए सबसे अच्छा कारण है जिसके नतीजे मे एकांकी और समाजिक बड़ी मुसीबत से भी जंग करने की बुनियादी मदद मिलती है इसलिए आइम्मए मासूमीन ने ख़ास इसकी ताकीद की है और इसको दीन मे एक बुलन्दी हासिल है इसकी रौशनी मे अज़ादारी का तरीक़ा और उसे किस तरह किया जाए इसको आगे लिखेंगे।

भाग –5

मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) के बारे में हमारी ज़िम्मेदारियाँ सारूल्लाह के मानी 128

वित्र और मौतूर के मानी 132

बदला लेने की रूह कब पैदा होती है 133

मजालिसे अज़ादारी चौथे मरतबे में 139

इमामे हुसैन की नज़र में मजलिसों का मज़मून 145

दीन व आख़रत को जिहालत से ख़तरा 147

एहलेबैत के अकेले होने और घर में बैठने पर जाहिल शियों का रवैय्या 150

जाहिल और कमज़ोर अक़ीदा शियों से मौला अली को शिकायत 152

पांचवा मरतबा (बदला लेने के कामों का) 160

बदला लेने के कामों के तीन हिस्से 162

बदला लेने की कोशिशों पर रहमत का साया 176

इमामे हुसैन की जंग का मक़सद 180

जिहाद की भावना न होनें से ख़तरे 189

इमामे हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेने वाले से हक़ीक़ी अज़ादार का नाता 191

जहूर मुसीबते आज़म का ख़ातमा, और दुनिया पर मासूम की हुकूमत 193

मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) पर राज़ी रहना भी गुनाह है। 194

इमामे ज़माना (अ.स.) के लिए सच्चे
अज़ादार की ज़िम्मेदारियां 197
इन्तेज़ार करने वाले और सच्चे अज़ादार
की सबसे बड़ी तमन्ना 204
दुनिया व आख़रत में इमामे ज़माना (अ.स.)
से किस तरह क़रीब रह सकते हैं? 205
अज़ादार और बदला लेने के कामों में मज़बूती 212
अज़ादारी का पांचवा दर्जा 214
अज़ादारी की कमज़ोरियों और मुसीबतों से
अज़ादार का जंग करना 220
मजालिस व महाफ़िल में बढ़ावा 225

मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) के बारे में हमारी ज़िम्मेदारियाँ

अब तक जो कुछ भी मासूमीन की दुनयावी अज़मत, उनसे हमारा नाता और मुसीबते अज़ीमो आज़म के बारे में कहा गया उसके एतबार से मुसीबते आज़म के लिये हमारी ज़िम्मेदारी काफ़ी वाज़ेह हो गई फिर भी उसकी ज़रूरतों को देखते हुए कुछ बातें लिखना ज़रूरी हैं।

सारुल्लाह के मानी

दुनिया और इन्सानों की पैदाइश के एतबार से नबयों और चौदह मासूमों की अज़मत, हमारा उनसे नाता और इसी तरह मुसीबते आज़म के मानी जो बयान हुए इन सब बातों को ध्यान में रखने से हमें सारूल्लाह के मानी समझने में मदद मिलेगी। यह लफ़्ज ज़ियारते आशूरा और इमामे हुसैन की सारी ज़ियारतों और मौला अली के लिये भी आया है। ''यानी ए ख़ुदा के ख़ून और ख़ुदा के बेटे के ख़ून'' ख़ुदा का ख़ून कहां है? ख़ून तो ज़िन्दगी का हिस्सा है लेकिन किसकी ज़िन्दगी का हिस्सा? कहां और किस रग में है? यह ख़ून हम सबकी रगों में है।

जिस तरह इन्सान को अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी रखने के लिये ख़ून की ज़रूरत होती है इसी तरह इन्सानी और इलाही ज़िन्दगी के लिये उसे कुछ चीज़ों की ज़रूरत होती है। ख़ुदा के ख़ून को एक अच्छी चीज़ के बराबर मानते हुए दीन और कुरान के एतबार से इन्सान को पहचानने का नाम है। इन्सानी ज़िन्दगी के मानी समझे बिना सारूल्लाह के मानी नहीं समझे जा सकते जैसा कि लिखा जा चुका

कि इन्सान की सही ज़िन्दगी और हैवानियत से बेहतर अच्छी ज़िन्दगी ख़ुदा के दीन पर चलकर गुजारी जा सकती है लेकिन इस दीन को भी ज़िन्दा रखने और बाक़ी रखने के लिये जिसकी ज़रूरत होती है वह इमाम होते हैं जो ख़ुदा की नेकयों और बातों को ज़ाहिर करते हैं और वह हमारी ज़िन्दगी के साथ दीन की ज़िन्दगी बल्कि सबको बाक़ी रखने का राज़ और ज़रूरत हैं।

इसीलिए इमाम हुसैन उम्मत की सियासी व रूहानी हिदायत को बग़ैर इमाम के यानी यज़ीद जैसे किसी हाकिम के ज़रिये होने को दीन के नीसतो नाबूद होने के बराबर मानते हैं।

''इस्लाम को सलाम कि इस्लामी उम्मत यज़ीद जैसे हाकिमों की पैरवी करने को मजबूर है'' इमामे हुसैन बल्कि चौदह मासूमीन का रिश्ता सारे इन्सानों से ऐसा ही है जैसे ख़ून का इन्सान के जिस्म से होता है। वहीं दुनिया के सारे इन्सानों की ज़िन्दगी, ख़ुदा के दीन की ज़िन्दगी और इन्सानों के समाज में ख़ुदा की पहचान को बाक़ी रखने की सबसे बड़ी वजह और ज़रूरत हैं मौहम्मदो आले मौहम्मद के बिना ख़ुदा को न पहचाना जा सकता है न उसके दीन को बाक़ी रखा जा सकता है। मौहम्मदो आले मौहम्मद के बिना ख़ुदा की सही और सच्ची इबादत नहीं हो सकती। यह ख़ुदा के सही ख़लीफ़ा और उसकी अच्छाइयों को बताने वाले और ख़ुदा की हुज्जत (दलील) हैं कि जिनके बग़ैर ज़मीनों आसमान और इन्सानों का पैदा होना बेकार होता। इनके बग़ैर ज़मीन सबको निगल जाती।

ख़ुदा और ख़ुद उनके सिवा कोई भी न तो उनकी पूरी पूरी तारीफ़ कर सकता है न उनको पहचान सकता है। इमामे हादी ज़ियारते

जामेआ जो कि इमाम को पहचानने का बेहतरीन और अच्छा ज़रया है उसमें मासूमीन के पाकीज़ा नूर को इस तरह पहचनवाते हैं ''कि वह रहमत की खान और अक़लमंदी का ख़ज़ाना हैं, ईमान के दरवाज़े, लोगों के लिये पनाह, पैग़म्बरों के वारिस, दुनया व आख़रत के लागों पर ख़ुदा की हुज्जत, ख़ुदा को पहचानने की वजह, ख़ुदा की बरकत का ठिकाना, ख़ुदा की हिकमत का ख़ज़ाना, खुदा के राज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले, ख़ुदा की किताब के वारिस, ख़ुदा की तरफ़ ले जाने वाले, ख़ुदा को ख़ुश करने का रास्ता बताने वाले, ख़ुदा की हुज्जत, नूर और दलील सब कुछ यही हैं।

मासूमीन की मदद के बग़ैर कोई भी दीनदार नहीं हो सकता। इमामे ज़माना अपने मज़लूम दादा के तकलीफ़ों भरे मरसिये में इस तरह फ़रमाते हैं ए दादा हुसैन जब आपको क़त्ल किया तो उन्होंने आपके साथ इस्लाम ही को क़त्ल कर दिया और नमाज़ो रोज़े को बिल्कुल मिटा दिया ख़ुदा की सुन्नत और दीन के एहकाम को ख़त्म कर दिया ईमान की बुनियाद गिरा दी और कुरान को भी बदल दिया''

इस तरह की हदीसों और ज़ियारते जामेआ से इमामे हुसैन और चौदह मासूमीन की अज़मत इस तरह मालूम होती है जैसे कि इनमें का हर एक इस्लाम की नमाज़, रोज़ा, ख़ुदा की सुन्नतों, एहकामों ईमान की बुनियाद और कुरान के बराबर हो, तो ज़ाहिर है कि इमाम के बग़ैर इन सारी इबादतों को करना बिल्कुल बेकार होगा।

क्या अच्छी बात है! कि कुराने करीम जनाबे इब्राहीम को उम्मत कह रहा है और इमामे ज़माना इमामे हुसैन को उम्मत से बेहतर और दीन की बुनयाद बता रहे हैं यानी उन्हें 1– इस्लाम, 2– कुरान, 3– नमाज़,

4– रोज़ा, 5– ख़ुदा की सुन्नत और दीन के एहकाम 6– ईमान की बुनियाद, 7– कुरान की आयतें समझते हैं। लोगों में भी जब कुछ जानकारी बढ़ी और उन्होंने इमाम हुसैन की कुर्बानी को ठंडे दिमाग़ से सोचा तो यह कहने पर मजबूर हो गये कि इमामे हुसैन ने इस्लाम को ज़िन्दा रखने के लिये जिहाद किया था। लेकिन ज़ियारते नाहिया में इससे भी बढ़कर कहते हैं कि ए हुसैन! आपके साथ उन्होंने इस्लाम को भी क़त्ल कर दिया और नमाज़ रोज़े को बरबाद कर दिया। हर जगह की तरह यहां भी हम छुपी हुई और ज़ाहिर, दो चीज़ें समझते हैं ज़ाहिर में तो इस्लाम अलग और इमामे हुसैन अलग नज़र आते हैं इसलिए कि इमाम हुसैन दीन के हाकिम हैं ''जैसे अस्सलामों अला यासूबुद्दीन'' और दीन की हिमायत करने वाले भी जैसे ,,अस्लामो अलल मुहामी बिला मुईन'' और कुरान को बाक़ी रखने वाले भी ''व लिल्कुराने सनदन'' और बातिन यानी अन्दरूनी तरीक़े पर इस फ़र्क़ और अलग–अलग होने का बिस्तर बन्धा दिखता है और एकता ही उनकी जगह दिखती है। इसीलिये अन्दरूनी तरीक़े से इमामे हुसैन, इस्लाम, एहकाम, नमाज़, रोज़ा वग़ैरा हैं और हम भी इसीलिए ज़ियारते नाहिया में पढ़ते हैं कि ऐ हुसैन आपके साथ उन्होंने इस्लाम को भी क़त्ल कर दिया यहां हम यह नहीं कहते कि दीन के रहबर को क़त्ल कर दिया और पढ़ते हैं कि नमाज़, रोज़ा, बरबाद कर दिया लेकिन यह नहीं कहते कि नमाज़ों को क़त्ल कर दिया और कुछ लोगों की सोच है कि ,,हररेफ़ू,, के जुम्लों से उन आयतों को बदलना मुराद है जो इमाम हुसैन की शान में आईं थीं। लेकिन ऊपर की वज़ाहत से पता चल गया कि इमामे हुसैन (अ.स.) ख़ुद कुरान की आयतें हैं और कुरान

की आयतों में तबदीली से मुराद इमामे हुसैन (अ.स.) का क़त्ल होना है यानी चूंकि इमामे हुसैन(अ.स.)कुरान की आयतें हैं तो उनका क़त्ल होना कुरान को बदलना और क़त्ल करना ही है।

वित्र और मौतूर के मानी

ज़ियारते आशूरा में ''सारल्लाहे वबना सारेही'' के बाद जो जुम्ला आया है वह है ''वल वितरल मौतूर'' उसके मानी हैं ऐसी मुसीबत वाला और मज़लूम कि जिसका बदला न लिया गया हो। मुमकिन है कि यह सवाल उठे कि क्या मुख़्तारे सक़फ़ी ने इमामे हुसैन के क़ातिलों को मारकर उनके ख़ून का बदला नहीं लिया? या क्या वह जहन्नम में खुदा के ऐसे अज़ाब में फंसे हुए नहीं कि जिसको हम सोच भी नहीं सकते? क्या वह हमारे हत्थे चढ़ जाते तो हम इससे ज़्यादा उनको सज़ा देते कि जितनी अब मिल रही है? क्या इसके बाद भी इमामे हुसैन को इन जुम्लों से याद करना सही है?

इस सवाल का जवाब उन बातों से अच्छी तरह वाज़ेह हो गया कि जो अब तक इमामे मासूम की दुनया में एहमियत और सारे इन्सानों से उनके रिश्ते, के बारे में बताई गईं इसी तरह इन मासूमीन का सारूल्लाह के मानी होना इस सवाल का जवाब है।

दोबारा फिर से ध्यान दिला दें कि जो जुल्म करबला और सारे मासूमीन की शहादत के वक़्त हुआ वह दो तरह का है। (1) मुसीबते अज़ीम ''बड़ी मुसीबत'' या उनकी मज़लूमी के साथ शहादत जो उनके पाको पाकीज़ा ख़ून बहाने से हुई या दुश्मनों के ज़रये ज़हर देने से हुई इन सब मुसीबतों के मुक़ाबले में इब्ने मुल्जिम, इब्ने साद व शिम्र का मारा जाना और उसके बाद उनका ख़ुदा के अज़ाब से दो चार

होना ख़ून का बदला लेने के लिये काफ़ी है। (2) मुसीबते आज़म सबसे बड़ी मुसीबत यही कि इन्सानों की रहबरी, ख़ुदा के ख़लीफ़ा और मासूम की हुकूमत से महरूम करके उनको उस ज़िम्मेदारी और ओहदे से अलग रहने के लिये मजबूर किया कि जिसका ख़ुदा ने उनको ज़िम्मेदार बनाया था। इसमें कोई शक नहीं कि इस तरह के जुल्म का अभी तक बदला नहीं लिया गया है और इन्सानी समाज पर जो जुल्म हुआ और उससे नुक़सान हुआ उसकी भरपाई भी नहीं हो सकी है।

और जो मुख़तार ने किया वह तो सिर्फ़ इमाम के बदन के ख़ून का बदला एक नेक इन्सान के ऐतबार से था ना कि ख़ुदा के ख़लीफ़ा और इमाम के ख़ून का बदला। इसीलिए तो जब उमरे साद और उसके बेटे का सर मुख़तार के सामने डाला गया तो उन्होंने कहा कि ''वह हुसैन का बदला और यह अली अकबर का बदला'' फिर कहा ''हरगिज़ नहीं कभी भी बराबरी नहीं हो सकती, ख़ुदा की क़सम अगर मैं कुरैश के एक तिहाई हिस्से को भी क़त्ल कर दूँ तब भी बराबरी नहीं हो सकती फिर भी मुसीबते आज़म का बदला नहीं लिया गया है क्यूँकि इस मुसीबत के असर व नतीजे इन्सानी समाज में आज भी पाये जा रहे हैं और हर साल बढ़ने पर हैं क्यूंकि पूरी दुनिया को ख़ुदा की तरफ़ से इन्सानों की हिदायत करने वाले मासूम इमामों को हिदायत करने से महरूम कर दिया था और कर रखा है।

<u>बदला लेने वाली रूह का पैदा होना</u>

''वल वित्रल मौतूर'' से पता चलता है कि आशूरे का माजरा किसी एक आदमी या तारीख़ का नहीं था जो ख़त्म हो गया हो बल्कि

उसका संबन्ध सारे इन्सानों और हर पल से है और इमामे हुसैन का बदला सिर्फ़ उनके क़ातिलों को मारकर नहीं लिया है क्यूंकि बात आपके जिस्म के ख़ून की नहीं है बल्कि बात ख़ुदा के ख़ून की है कि जो हर इन्सान की ज़िन्दगी का राज़ है। यहाँ पर सिर्फ़ इमामे हुसैन जो एक नेक इन्सान थे उनकी ही बात नहीं बल्कि वह हुसैन जो ज़मीन पर ख़ुदा के ख़लीफा नुमाइन्दा, और उसकी बातों को ज़ाहिर करने वाले और एक ऐसी सच्ची शख़्सियत जिनका संबन्ध ज़मीन के हर आदमी से हो इमामे हुसैन और सारे एहलेबैत ख़ुदा की ऐसी रूह हैं जिनका असर हर इंसान में पाया जाता है जिस तरह पहले भी लिखा जा चुका है कि सारे इंसानों में इमाम हुसैन और सभी एहलेबैत के नूर की झलक पायी जाती है। जैसा कि मिर्ज़ा इस्माईल दूलाबी (रह0) कहते हैं कि हर ज़मीन करबला है और हर दिन रोज़े आशूरा है लेकिन ये नहीं कहा कि तुम सब इमाम हुसैन हो। अपने ऊपर ध्यान दो और अपने अन्दर इमाम हुसैन ढूंढो इसी वजह से ज़ियारते आशूरा में हम ख़ुदा से चाहते हैं कि हमारे अपने ख़ून के बदले को इमामे आख़िर के साथ रखना और इस तरह पढ़ते हैं मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ जिसने आपको यह शान दी और मुझे आप ही के ज़रिये ये इज़्ज़त दी कि मैं अपने ख़ून का बदला उस इमाम के साथ लूं जो हिदायत करने वाले ज़ाहिर, सच कहने वाले और आप में से है। इसलिए इमाम हुसैन के ख़ून का बदला सिर्फ़ शिम्र और उसके साथियों को क़त्ल कर देने से नहीं मिलता जब तक कि पूरी दुनया से जुल्म की जड़ों को उखाड़कर न फेंका जाये और ज़माने के शैतानों और यज़ीदों को न मिटाया जाये और जो ये कहा जाता है कि हर दिन रोज़े आशूरा है

और हर ज़मीन ज़मीने करबला इसका मतलब है कि इमामे हुसैन हर वक़्त हमारे साथ हैं अगर हम अपने अन्दर सुधार लाएँ और इमाम हुसैन और हुसैनियत जैसे काम करें तो हम इमाम हुसैन से मिले हुए होंगे और इमामे हुसैन की अज़ादारी की जो ताकीद है उसका मतलब यह है कि इमाम हुसैन का ज़ाहिर होना हर वक़्त मुमकिन है यानि जो लोग इमाम हुसैन की तरह काम करें, और यह सब उस वक़्त तक मुमकिन ही नहीं जबतक कि हुसैनी बातें और रूह उसमें न पायी जाऐं। इमामे हुसैन का बदला यानि इन्सानी समाज मे ख़ुदा के ख़ून को पलटाना, यानी दुनिया की हुकूमत ख़ुदा के ख़लीफ़ा के हाथ मे होना। इसीलिए यह बदला सिर्फ़ इमामे ज़माना के साथ उन्ही के हाथों लिया जा सकता है। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि ज़हूर की तैय्यारी करें और इमामे ज़माना के साथ मिलकर बदला लेने की तैय्यारी करें। इसके लिये ज़हूर के रास्ते में रूकावटों को हटाना ज़रूरी है। और यह ज़िम्मेदारी जब ही अदा हो सकती है कि जब हमारे अन्दर बदला लेने का जज़्बा और रूह मौजूद होगी।

तीसरी फसल में हमने एक ज़रूरी और हिला देने वाली हदीस लिखी थी जिसमें रसूले ख़ुदा ने मौला अली से फ़रमाया ''ऐ अली मैं और तुम इस उम्मत के बाप हैं और औलाद पर माँ बाप का यह हक़ है कि ज़रूरत के वक़्त माँ बाप के साथ नरमी से सुलूक करें ताकि उनका हक़ अदा हो जाये इस हदीस के एतबार से मासूमीन का हमसे ऐसा ही नाता है जैसा कि औलाद का सगे माँ बाप से होता है यानी ये दोनो तरफ़ का सम्बन्ध है और दोनो ही की अलग अलग कुछ ज़िम्मेदारियां हैं। उन्ही में से एक ज़िम्मेदारी यह है कि एक दूसरे से

मौहब्बत से बरताव करें और इसमें कोई शक नहीं कि मासूमीन अपनी ख़ुदाई ज़िम्मेदारियों को अदा करने के साथ हमसे मौहब्बत करते और रहमो करम करते हैं।

पैग़म्बरे अकरम के फ़रमान के मुताबिक़ हमारे लिए भी ''जो कि उनकी औलाद हैं'' वह वक़्त आने वाला है कि जिसमें हम एहलेबैत के वाजिब हुकूक़ अदा करने के लिए उनके सामने सर झुका कर मेहरबानी और मौहब्बत से बरताओ करें क्योंकि वही हमारे असली माँ बाप और सबसे क़रीबी रिश्तेदार हैं यानी अब हमें देखना है कि उन्हें उस वक़्त किस तरह की ख़िदमत की ज़रूरत है या उनके लिए हमारे कौन से काम होने चाहियें।

तीसरी फ़सल में हम इस नतीजे तक पहुंचे थे कि मुसीबते अज़ीम बड़ी मुसीबत के बारे में हमारी ज़िम्मेदारियां यह हैं कि मासूमीन पर जो ज़ुल्म ढाये गये हैं उनपर अज़ादारी करें।

इस फ़सल में हम इस नतीजे तक पहुंचे हैं कि मुसीबते आज़म सबसे बड़ी मुसीबत के मुक़ाबले में हमारी असली ज़िम्मेदारी बदला लेना है यानी उन लोगों से बदला जिन्होंने दुनया को उनके हक़ीक़ी बाप और मासूम हादी व इमाम से महरूम कर दिया है।

इस जगह पर हमारी दुआ यह है कि कहें ''ख़ुदा हमें और आपको अपने वली मेहदीय आख़िर (अ0) के साथ इमाम हुसैन का बदला लेने वालों में क़रार दे।

लिहाज़ा मुसीबते आज़म ''सबसे बड़ी मुसीबत'' के लिये एक शिया की असली ज़िम्मेदारी और तरीक़ा यह है कि वह बदला लेने के लिये हक़ीक़ी बदला लेने वाले के साथ रहे चाहे उसको ढूंढना पड़े।

अब हम कहते हैं कि अगर हम इस ज़िम्मेदारी को न निभाऐं जो मुसीबते अज़ीम ''बड़ी मुसीबत'' के मुक़ाबले में कहीं ज़्यादा है तो हमने उनसे बेहद बे वफ़ाई की और कठोर दिली का सुबूत दिया। न तो हमने पैग़म्बर के बताये हुए तरीक़े पर अपनी ज़िम्मेदारी निभाई यानी अपने असली माँ बाप के साथ नरमी से बरताओ नहीं किया और ना ही उस मौहब्बत की ज़िम्मेदारी के हुक्म को पूरा किया जिसके लिये ख़ुदा ने हमें कुरान में हुक्म दिया है।

तो हम इमामे ज़माना से यह नहीं कह सकते कि हम आपके दादा की मुसीबते अज़ीम ''बड़ी मुसीबत'' में तो आपके साथ अज़ादारी करेंगे लेकिन मुसीबते आज़म ''सबसे बड़ी मुसीबत'' का बदला लेने के लिये और ख़ुदा के ख़ून को इन्सानों की रगों में वापस लाने के लिये आप का साथ नहीं दे सकते जबकि इस मौक़े पर इमाम बदला लेने में अपना साथ चाहते हैं सिर्फ रोना मातम करना नहीं।

चौथे मरहले पर पहुंचने के बाद अज़ादार को नई नई जानकारी और पहचान का पता चलता है और उसके अन्दर उन लोगों से बदला लेने की भावना पैदा हो जाती है जिन्होंने मासूमीन को उनके उस पद से महरूम कर दिया जो ख़ुदा ने दिया था इसी तरह उनसे भी बदले की भावना तेज़ हो जाती है जिन्होंने इमामतो हिदायत के पद को हड़पने वालों की मदद करके दुनया के लोगों पर ज़ुल्म किया।

इस मरहले में अज़ादार रोने रूलाने को जोकि एक बड़ी ज़िम्मेदारी है उसे वह काफ़ी नहीं समझता वह उस मौहब्बत की वजह से जो उसे उनसे मिली है इमामे हुसैन के गिरोह जोकि ख़ुदा का गिरोह है उसमें शामिल हो जाता है इस जगह मोमिन कुराने मजीद के इस हुक्म को

पूरा करता है कि ए मोमिनों एहलेबैत से मौहब्बत करो या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि वह मौहब्बत से मवददत तक पहुंच जाता है कयूंकि मवददत उस पाकीज़ा मौहब्बत को कहते हैं कि जो उस के अमल (कामों) से ज़ाहिर हो। वह रसूले ख़ुदा की हदीस के एतबार से अपने को मौहम्मदो आले मौहम्मद की औलाद में समझता है। लिहाज़ा अपने को उनके घराने का एक, और उनके ख़ून का वारिस समझता है यानी उसकी नज़र में चौदह मासूमीन के ख़ून का बदला लेना उस पर वाजिब है।

इस मरहले में अज़ादार हक़ीक़ी ईमान को पा लेता है और मौहम्मदो आले मौहम्मद के लिये सोच और मौहब्बत का वही तरीक़ा हो जाता है कि जैसा रसूले ख़ुदा का हुक्म है। ''कोई भी ख़ुदा पर उस वक़्त तक ईमान नहीं ला सकता जब तक कि मैं उसके लिये ख़ुद उससे ज़्यादा पसन्दीदा न हो जाऊँ और मेरे एहलेबैत को अपने घर वालों से ज़्यादा और मेरी ज़ात को अपनी ज़ात से ज़्यादा दोस्त न रखे।''

इसीलिए अगर कोई ज़ालिम किसी अज़ादार के रूहानी या जिस्मानी माँ–बाप या किसी भी रिश्तेदार पर जुल्म करे तो वह सिर्फ़ रोने पीटने को काफ़ी नहीं समझेगा बल्कि जब तक वह उसका बदला न ले ले उसे सुकून नहीं मिलता। इसी तरह वह मौहम्मदो आले मौहम्मद ख़ास तौर से इमामे हुसैन और आपके एहलेबैत और साथियों पर होने वाले जुल्म और मसाईब की वजह से भड़कता रहता है और जब तक वह उसका बदला न ले लेगा उस वक़्त तक दुखी और रोता पीटता रहेगा। यह बदले की आग और भावना सिर्फ़ इसीलिए नहीं कि उस अज़ादार का एहलेबैत से एक संबन्ध और ख़ास नाता है बल्कि ख़ुदा

की तरफ़ से भी एक ज़िम्मेदारी है जिसका हुक्म ज़ियारते आशूरा बल्कि सारी ज़ियारतों में हमारे लिये मिलता है। बदले की रूह और भावना वही दरजा है कि जिसको ज़ियारतों में ''तलबसारिल हुसैन'' से याद किया जाता है।

बदला और बदले की रूह के बारे में अब तक जो कुछ कहा गया उससे यह बात अच्छी तरह समझ में आ सकती है कि बदले की रूह, भावना का पैदा होना या इसको रखना बहुत बड़ी और अहम बात है। इसीलिए अगर किसी में यह भावना पाई जाती है तो वह एक तरह से एहलेबैत का हक़ीकी बेटा है और उनके ख़ून का भी वारिस है जिसपर ख़ून का बदला लेना वाजिब है तो वह यक़ीन की मंज़िल तक पहुंच जाता है और वह हुसैनी फ़ौज का सिपाही और एहलेबैत के ख़ानदान का एक हिस्सा बन जाता है। लेकिन यह भी इस शर्त पर कि वह सिर्फ़ बदले की भावना ही को काफ़ी न समझे बल्कि उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ काम करे यानी अपनी बदले की भावना को पूरा करने की कोशिश करे और बदले के कामों को पूरा करने के मरतबे यानी अज़ादारी के पाँचवे मरतबे में दाख़िल हो जाये।

<u>मजालिसे अज़ादारी चौथे मरतबे में</u> :–

इस मरतबे में अज़ादारी उन पाकीज़ा उसूल की हिफ़ाज़त का ज़रया है जिनकी वजह से एहलेबैत ने शहादत को कुबूल किया। यह मजलिसें झूठ, हराम, तेहरीफ़ और इख़्तेलाफ़ात से बहुत दूर हैं बल्कि लोग इन मजलिसों में शरीक होकर पहले से कहीं ज़्यादा अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानने लगते हैं। मजालिसे अज़ा और मासूमीन के

लिये हर प्रोग्राम चौथे मरतबे में जानकारी और बदले की भावना पैदा करने का ज़रया हैं। उनमें इमाम हुसैन और दुनया में उनकी अज़मत और अहमीयत को उजागर किया जाता है। आपका ''सारूल्लाह'' और इस्लाम को बाक़ी रखने का सहारा होना मजलिसों की बुलन्दी के लिये बहुत अहम है जैसा कि हम आपकी जियारते अरबईन में पढ़ते हैं।

''ए ख़ुदा उन्होंने अपने ख़ूने जिगर को तेरे लिये कुर्बान कर दिया ताकि तेरे बन्दों को जिहालत और भटकने से बचाऐं'' चौथे मरतबे में अज़ादारी से इमामे हुसैन की रंगत व ख़ुशबू की चाहत पैदा होती है जिसपर उनकी रूह की हुकूमत होती है। इन मजलिसों से लोगों को जहां इमाम हुसैन की दुनया में अहमीयत का पता चलता है वहीं वह काम भी करती हैं जो इमाम ने करबला में किया था। यानी आपके आदेशों और हदीसों को लोगों तक पहुंचाती हैं और आपके और लोगों के बीच एक सम्बन्ध पैदा करती हैं यानी जैसे इमाम हुसैन लोगों को जिहालतो गुमराही से बचाने के लिये शहीद हो गये इसी तरह यह भी लोगों को जिहालतो गुमराही से बचाती हैं। मासूमीन, ख़ास तौर से इमामे हुसैन की मजलिसें करने की इसीलिए ताकीद की गई है।

चौथे मरतबे में बेहतरीन मजलिसों की कसौटी ज़्यादा रोना, ज़्यादा अज़ादार, खाना (तर्बरूक) बड़ी बड़ी अंजुमनें, बड़े इमामबाड़े, मशहूर ज़ाकिर या मरसियेख़ान वग़ैरा नहीं है बल्कि कामयाब और बेहतरीन मजलिस की कसौटी यह है कि अज़ादार को उस मजलिस से कितनी जानकारी और कितना दीनी फ़ायदा पहुंचा। चौथे मरतबे में सच्चे अज़ादार की नज़र में असली और बेहतरीन मजलिस वह है कि जो

अज़ादारों में इमाम हुसैन की रूह डाल दे और उनमें इमाम की तरह ख़ुदा की पैरवी की भावना पैदा हो जाये।

इस मरतबे में अज़ादार को इमाम हुसैन की जंग का मक़सद जो ख़ुद आपने बयान किया था उसकी जानकारी भी होती है और उसको दूसरों तक पहुंचाने के लिये भी वह तैयार हो जाता है और इस मरतबे में अज़ादार के लिये रोना सिर्फ़ एक मौहब्बतो एहसास वाला काम नहीं बल्कि उसे अच्छी तरह यह जानकारी होती है कि एहलेबैत ने रोने के लिये जो हुक्म दिया है उसका मक़सद रोने और रूलाने और अपनी भावनाओं को पूरा करने से कहीं ज़्यादा अहम है।

इस मरतबे में रोना ही मक़सद नहीं है बल्कि आज की नस्ल के लिये आशूरा के पैग़ाम को ज़िन्दा रखने का एक ज़रया है। रोना और अपनी भावनाओं को ज़ाहिर करना एक अहम बल्कि सबसे अहम वसीला है। इस मरतबे में ख़तीब और ज़ाकिर सब ही मौहब्बतो एहसास और रोने रूलाने को अहमियत देते हैं लेकिन एक मक़सद से ही नहीं बल्कि लोगों की सोच समझ को ऊँचा और अच्छा बनाने के लिये एक बहुत अच्छा ज़रया है।

लोगों की जानकारी को बढ़ावा देने और एहलेबैत से नाता जोड़ने का सबसे अच्छा ज़रया रोना रूलाना है। लोगों की जानकारी के बढ़ावे और मासूमीन से सम्बन्ध बनाने से अज़ादारों में उनकी पैरवी और कहना मानने की ज़िम्मेदारी पैदा हो जाती है।

इस मरतबे में रोने रूलाने से अज़ादार में हुसैनियत और दीने ख़ुदा के लिये मिटने की रूह पैदा हो जाती है। और वह हर वक़्त यही तमन्ना करता है कि काश वह भी करबला में होता तो वही काम करता जो

करबला वालों ने किया। इस मरतबे में उसकी दुआ और तरीक़ा यह होता है ''काश मैं आपके साथ होता तो मैं भी अज़ीम दरजे पर पहुँच जाता।''

शहीद मुतहहरी फ़रमाते हैं जो कि ख़ुद भी बहुत ज़्यादा रोते और पक्के अज़ादार थे ''शहीद पर रोना ऐसा ही है जैसे उसके साथ जंग में शरीक हों'' इस दरजे के अज़ादार का रोना, जनाबे फ़ातेमा की पैरवी में एक तरह से समाजी और बामक़सद होता है। उनके रोने से ख़िलाफ़त को हड़पने वालों और मौला अली के दुश्मनों को बहुत तकलीफ़ होती है और डर पैदा होता है जैसे ही उनको ख़तरा महसूस हुआ तो वह मौला अली के पास पहुँचे और कहा कि जनाबे फ़ातेमा के रोने को मुअय्यन कर दें। जब आपने उनकी बात जनाबे फ़ातेमा को बताइ तो उसपर बीबी ने फ़रमाया '' ए अबुल हसन! उनके बीच मैं ज़्यादा दिन नहीं रहूँगी मैं तो बहुत जल्दी यहाँ से रूख़सत हो जाऊंगी। ख़ुदा की क़सम मैं रातो दिन ख़ामोश नहीं बैठूंगी जब तक कि अपने बाबा से न मिल जाऊँ।''

ख़ुमैनी साहब ने इरानी लोगों की अज़ादारी के लिये कहा था कि ''यह समस्या रोने या रूलाने तक सीमित नहीं बल्कि समस्या तो सियासी है कि मासूमीन जो ख़ुदा की नज़र रखते थे उनका मक़सद यह था कि इन क़ौमों को तैयार करके एक कर दें और अलग–अलग रास्तों से इन्हें एक जगह जमा कर दें ताकि कोई उन्हें नुक़सान न पहुंचा सके।

किसी शहीद पर रोना उसकी जंग को ज़िन्दा रखना है।

हर मज़हब के लिए उसका प्रचार ज़रूरी होता है तो एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देना चाहिये और जो इस तरह से मेहनत करता है वही मज़हब बाक़ी रहता है। यह एक ऐसा तरीक़ा है कि जिससे इस्लाम हमेशा ज़िन्दा रहेगा और ऐसा फूल है जिसे पानी दिया जाता रहा है। इस रोने रूलाने को बाक़ी रखना ही हुसैनी मिशन को बाक़ी रखना है।''

चौथे दरजे में अज़ादारी या ज़्यादा रोना उसकी अहमियत और हमेशगी मौहब्बतो एहसास से ज़्यादा मासूम की मारफ़त (जानकारी) और उनकी अज़मतो अहमियत से सम्बन्धित होती है दूसरी तरह यूँ कहा जाये कि अज़ादार को इमाम हुसैन व मासूमीन की जितनी ज़्यादा जानकारी होगी इतना ही उसके रोने और दुःखी होने में बढ़ोत्तरी होती चली जायगी। जैसा कि मौला अली जो रसूले ख़ुदा को सबसे बेहतर पहचानते थे और आपकी अज़मतों अहमियत को भी ख़ूब जानते थे। वह आपकी वफ़ात के बाद आप ही से इस तरह फ़रमाते हैं कि ''सब्र करना अच्छी बात है मगर आपके अलावा, किसी पर रोना तड़पना अच्छा नहीं मगर आपके सिवा, आपकी जुदाई की मुसीबत बड़ी सख़्त और आपसे पहले और आपके बाद आने वाली मुसीबतें बहुत छोटी हैं।''

यह रोना बहुत ऊँची मंजिल पर पहुंचाता, आपसी झगड़ों को कम करता और अच्छाइयों को पैदा करता है। रोने से अज़ादार की भावनाऐं, मौहब्बत और उसकी क़दर, उसके पैदा होने के मक़सद, उसके लायक़ अच्छाइयों में हैरत की हद तक बढ़ोत्तरी हो जाती है। एक अज़ादार को जितनी ज़्यादा एहलेबैत के फज़ाइल उनके इल्म,

नूरानियत, रूहानियत, मोजिज़े, समाज सेवा और उनके सारे फज़ाइल की जानकारी होगी इतना ही उसके दिल में उनकी मौहब्बत गहरी होती चली जायेगी और उनकी मुसीबतों को याद करके उसके रोने में और दर्द पैदा हो जायेगा। इसीलिए इस दरजे में रोना, एहलेबैत के दुश्मनों से जिहाद करने और उनसे बदला लेने की रूह फूंकने का एक अच्छा ज़रिया है।

वैसे भी इस दरजे में अज़ादार का रोना उस (सैक़ल) धार तेज़ होने के मानिन्द है जो हर पल उसकी रूह को पाक साफ़ बनाता है और उसे ख़ुदा व रसूल का हुक्म मानने को तैयार करता है। इस तैयारी के असर से अज़ादार में दीन के हुक्म का पालन करने की ताक़त और ख़ुदा की पैरवी करने की रूह मज़बूत होती है। इसी लिय वह नेक और अच्छी बाते आसानी से क़बूल कर लेता है। और उसकी चाल उस तरफ़ को तेज़ हो जाती है जिस मक़सद के लिए वह पैदा हुआ था। इसलिए कि दीन के हुक्म के लिए इन्सान की चाल और मानने की ताक़त जितनी कम होती चली जायेगी इन्सानियत के रास्ते पर उसकी तेज़ी इतनी ही बढ़ती चली जायेगी।

रोना चूंकि दिल से होता है और दिल के अन्दर से उसका सम्बन्ध होता है इसीलिए वह दिल के सारे कामों पर असर करता है चाहे अच्छा असर हो या बुरा असर यानी रोने का दिल में दो तरह से असर होता है। इसका अच्छा असर भी है और दिल में ही इसका दूसरा असर भी हो जाता है। रोने का सम्बन्ध तक़वा से भी होता है जो दिल ही में होता है इसी तरह गुनाह और ग़लत बातों से भी उसका नाता होता है। रोने का असर फ़ितरत पर भी होता है और

तबियत यानी माहौल पर भी लेकिन हक़ीक़ी अज़ादार का रोना उसकी फ़ितरत को मज़बूत बनाता है और उसकी मर्ज़ी व चाहत की बातों को कमज़ोर बनाता है इसी तरह उसकी ताक़त व हिम्मत को बढ़ाता है और डर ख़ौफ को कम करता है। उसकी सख़ावतों करम को ज़्यादा और कन्जूसी को कम करता है। रोने से एहलेबैत की मवददतो मौहब्बत ज़्यादा होती है और उनके बारे में ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा करके उसे और मज़बूत करता है। उधर उनके दुश्मनों से नफ़रत की भावना को ज़्यादा करता है और इन्सान को उनके चाल चलन और तरीक़ों से दूर रखता है। जी हाँ एहलेबैत के हक़ की जानकारी रखते हुए रोना इज़्जत दिलाने और दूसरो को जलाने वाला है।

इमामे हुसैन की नज़र में मजलिसों का मज़मून

मजलिसों में पढ़ी जाने वाली चीज़ों (बातों) के तरीक़ों और रास्तों को तय करने के लिये ख़ुद इमाम हुसैन सबसे बेहतर तय करने वाले हैं। आप अपनी नूरानी बातों में इस तरह हुक्म देते हैं कि जो भी हमारे पास आयेगा हमारी मजलिसों में शरीक होगा। उसे चार में से कम से कम एक चीज़ जरूर मिलेगी। ''अक़ीदों के उसूल और इस्लामी जानकारी, अख़लाक़ की बातें फ़ायदेमन्द भाई चारगी और आलिमो के साथ उठ बैठ।

इस बिना पर मजलिसे अज़ा लोगो के लिए दीन को पहचानने अख़लाक़े दीन के सारे हुक्म जानने की बेहतरीन जगह है। यानि वही तीन इल्म कि रसूले ख़ुदा ने जिनका जानना हर मुसलमान पर वाजिब किया है आपने हर मुसलमान पर इल्म को हासिल करना वाजिब

बताया है और इस तरह हुक्म दिया '' इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर वाजिब है।''

ज़ाहिर है कि जिस इल्म का हासिल करना हर मुसलमान पर वाजिब है यानि एक तरह से वाजिबे ऐनी हो तो वह रोज़ाना के इल्म में नहीं हो सकता। बल्कि वह एक ऐसा इल्म है कि जो इंसान को सुधारने, उसके पैदा होने के मक़सद और उसकी दुनया वा आख़रत की भलाई से सम्बन्ध रखता हो जैसा कि आपने दूसरे मौक़े पर उस इल्म के लिए इस तरह फ़रमाया कि जिसका हासिल करना सबपर वाजिब है ''हक़ीक़ी इल्म सिर्फ़ तीन हैं अक़ीदे की जानकारी, अख़लाक़ और अहकाम, हुक्म की जानकारी'' इनके अलावा बाक़ी सब इनकी वज़ाहत हैं।

इससे यह नतीजा निकलता है कि इमामे हुसैन उस मजलिस से ख़ुश होते हैं जिसमें अज़ादार दीनी जानकारी के साथ शरीक हों और एक सच्चा मोमिन व पक्का अज़ादार एक अच्छा इंसान और शिया होने के नाते अपनी ज़िम्मेदारी को भी जानता हो।

मजलिसे अज़ा करने वाला जब तक ख़ुद ही चौथे मरहले तक न पहुंचा हो तो वह उसका प्रोग्राम बनाते वक़्त मजलिस का ज़्यादा और अच्छा वक़्त नौहा पढ़ने और मातम करने वालों के लिये मख़सूस कर देता है और मजलिस या मजलिस पढ़ने वाले को ज़्यादा अहमीयत नहीं देता या फिर बहुत कम अहमीयत देता है। ज़्यादातर अगर किसी ज़ाकिर को बुलाया भी जाता है तो उससे इमामे हुसैन की मजलिस के मुताबिक़ अच्छी अच्छी बातों को सुन्ने के बदले ये चाहते और कहते हैं कि वह अज़ादारों को ज़्यादा से ज़्यादा रूलायें।

इसीलिए इस तरह के मजलिस करने वाले पढ़े लिखे आलिम व ज़ाकिर को बुलाने में दिलचस्पी नहीं रखते बल्कि ज़्यादातर वह उन लोगों को बुलाते हैं कि जो मजलिस में ज़्यादा से ज़्यादा हू हा मचायें और लोगों की मर्ज़ी के मुताबिक़ मजलिस पढ़ें।

उधर वह अज़ादार जोकि अज़ादारी के तीसरे दर्जे में रह जाते हैं और वह चौथे दर्जे तक नहीं पहुंच पाते वह मजलिस सुनने, अपनी दीनी ज़िन्दगी के उसूल और अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानने से कोई लगाओ नहीं रखते। वह लोग ज़्यादातर मजलिस के वक़्त इधर उधर या चाय पीने और गप्पे लगाने में गुज़ार देते हैं और अगर मजबूरी में आकर बैठ भी गए तो बड़ी बेदिली से मजलिस सुनते हैं और कोशिश करते हैं कि जल्दी से जल्दी मातमो नौहा शुरू हो जाये और कभी कभी ज़ाकिर को अपनी बेचैनी ज़ाहिर भी कर देते हैं।

दीन व आख़रत को जिहालत से ख़तरा

जैसा कि हमने बताया कि पैग़म्बर ने हर मुसलमान पर दीन की जानकारी को वाजिब किया और इसकी बहुत ज़्यादा ताकीद की इसके अलावा जो लोग इसको नहीं मानेंगे उनके लिये सज़ा इस तरह बताई है कि बेशक ख़ुदा उसका दुश्मन है कि जो दुनियावी जानकारी तो रखता हो लेकिन आख़रत से अन्जान हो। आपकी नज़र में हर वह आदमी जो इंसानो के हमेशा रहने की जगह (आख़रत) है उसे न जाने चाहे दुनिया का कितना ही बड़ा जानकार और पढ़ा लिखा क्यूँ न हो फिर भी उससे ख़ुदा नाराज़ है इसलिए कि जो भी आख़रत और अपने हमेशा रहने की जगह के बारे में कुछ जानता ही न हो वह उसके लिए अपने को कभी भी तैयार नहीं करेगा। ज़ाहिर है कि आख़रत की

तैयारी दुनयावी इल्म हासिल करके नहीं हो सकती बल्कि वह तो सिर्फ़ दीनी इल्म और उनको मान कर ही की जा सकती है। इसीलिए मासूमीन ने उन शियों को सख़्ती से फटकारा कि जो दीनी तालीम हासिल नहीं करते यानी दीन की ज़रूरी जानकारी नहीं रखते। इस बारे में रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं –''आलिम या इल्म हासिल करने वालों के अलावा मेरा कोई नहीं है।'' इमामे सादिक़ भी इस बारे में इस तरह फ़रमाते हैं कि –''मुझे अच्छा नहीं लगता कि तुम जवानों में से कोई इन दो कामों के सिवा किसी दूसरे काम में मसरूफ़ हो एक आलिम दूसरे तालिबे इल्म। अब अगर वह ऐसा नहीं करते तो ग़लती करते हैं और अगर ऐसी ग़लती की तो वह बरबाद हो गये और अगर वह बरबाद हुए तो उन्होंने गुनाह किया और जब गुनाह किया तो उसकी क़सम कि जिसने मौहम्मद मुस्तफ़ा को नबी बनाकर भेजा है कि वह गुनाहगार जहन्नम में रहेगा।''

हाँ हाँ दीन और उसके हुक्म से अनजान होना इसकी वजह बनेगा कि इन्सान को जहन्नम में डाल दिया जाये इसी वजह से आपने दूसरी किसी जगह पर इस तरह फ़रमाया कि अगर मेरे पास कोई ऐसा शिया जवान लाया जाये जो दीन का इल्म हासिल नहीं करता तो मैं उसको तंबीह करूंगा (यानी डाटूंगा) इसी तरह आप यह भी चाहते हैं कि आपके शिया हलालो हराम को पहचानें ताकि वह गुनाह और उसके अज़ाब से बचे रहें लिहाज़ा वह फ़रमाते हैं ''काश मेरे सहाबियों के सरों पर कोड़े मारे जाते जब तक कि वह हलालो हराम को न समझ लेते हलाल और हराम को समझे बग़ैर दीनदार होना मुमकिन नहीं है और दीनदार हुए बग़ैर दुनया व आख़रत की नेकयाँ हासिल

नहीं हो सकतीं इसीलिए हलाल व हराम को पहचानने के लिए कोशिश करनी चाहिये ताकि दुनया व आख़रत के अज़ाबो परेशानी से बच सकें चाहे इसके लिए कोशिश करने में कोड़े खाने के बराबर ही तकलीफ़ क्यूँ न उठानी पड़े हमे देखना चाहिये कि इमामे सज्जाद ने किस तरह से अपने शियों को दीन की बातो के लिए सख़्तियाँ और परेशानी बरदाश्त करने के लिए तरीक़ा बताया है कि ''अगर लोगों को पता चल जाय कि इल्मे दीन हासिल करने की अहमियत क्या है तो वह उसे ज़रूर हासिल करेंगे चाहे उन्हें उसके लिए अपने दिल का ख़ून बहाना पड़े या भंवर से गुज़रना पड़े'' और बहुत ज़्यादा की ताकीद के लिए इमामे मूसा काज़िम की हदीस देखें कि वह किस तरह दीन की थोड़ी जानकारी या दीन को न जानने को कितना ख़तरनाक जानते हैं ''आप फ़रमाते हैं कि दीन के बारे मे जो अच्छी ख़ासी जानकारी नही रखता है तो ख़ुदा उसके किसी भी काम से ख़ुश नही होगा मौला अली दीन की ज़्यादा जानकारी न रखने वाले के लिए फ़रमाते हैं कि ए लोगों जिस दीन में ख़ूब व अच्छी ख़ासी जानकारी न हो तो उस से फ़ायदा व भलाई नही है ''इसलिए जिस दीन के बारे में हमें अच्छी तरह जानकारी न हो तो वह इन्सान के लिए दुनिया व आख़रत की कामयाबी की वजह नही हो सकता मुसलमानो की ज़्यादातर मुशकिलों कि वजह दीन की कम से कम जानकारी और उस पर न चलने से ही है दीन की थोड़ी जानकारी या उससे भी अनजान होना इन्सान को तरक़्क़ी नहीं दिला सकता चाहे वह कितनी ही इबादत क्यूँ न करता हो इसीलिये हज़रत अली ने इस बारे में फ़रमाया है जो कि क़यामत में हमारे कामों के हिसाब से

जन्नतो जहन्नम बाटेंगे बल्कि दीन की जानकारी न रखने वाला इबादत गुज़ार ऐसा ही है कि जैसे कोल्हू का बैल जोकि चक्कर तो काटता रहता है मगर उस घेरे से बाहर नहीं निकल पाता।

इस्लाम में बुनयादी तौर पर हर इंसान की अहमियत उसकी दीनी जानकारी के ज़रिये ही तय होती है जैसा कि रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया ''लोगों में सबसे ज़्यादा अहमियत उसे है जो सबसे ज़्यादा आलिम हो और सबसे कम हैसियत उसकी है जिसकी दीनी जानकारी बहुत कम हो।''

दीन को सही ढंग से समझे और उसकी जानकारी के बग़ैर सिर्फ़ शिया होने का दावा करना काफ़ी या फ़ायदेमंद नहीं है बल्कि ख़ुद उसके और ख़ुद दीन के लिये बहुत ज़्यादा ख़तरनाक भी है।

<u>एहलेबैत के अकेले होने और घर में बैठने पर जाहिल शियों का रवैय्या</u>

एहलेबैत पर जो भी ज़ुल्म हुआ उसकी वजह सिर्फ़ उनके जाहिल और ना समझ शियों की कमी की वजह से हुआ। हज़रत अली रसूले ख़ुदा की वफ़ात के बाद अपना हक़ लेने के लिये (जिसे हड़प लिया गया था यानी इमामत) जनाबे फ़ातेमा को अपनी सवारी पर सवार करके इमाम हसन व हुसैन के साथ अन्सार के घरों पर जाते थे और उनसे गवाही का सहारा चाहते थे। लेकिन वह लोग बेतुके बहाने और दलीलें पेश कर देते थे। जनाबे फ़ातेमा भी उनको अपने शौहर की मदद के लिये ग़दीर का वाक़ेआ याद दिलातीं कि तुम तो इनके हाथों पर ग़दीर में बैअत कर चुके हो। और फ़रमाती थीं कि ''क्या मेरे बाबा ने ग़दीर के दिन किसी के लिए कोई हीला बहाना छोड़ा था।''

माविया ने इसी वाक़ेऐ को ख़त में लिखकर हज़रत अली को तकलीफ़ पंहुचाई थी। उसने इस तरह लिखा था तुम अपनी ज़ौजा को अपनी सवारी पर सवार करके हसनो हुसैन का हाथ थामें अन्सार के घरों पर जाते थे और उनसे सहारा चाहते थे लेकिन चार पांच लोगों के सिवा किसी ने तुम्हे सहारा न दिया। अगर तुम अपने दावे में सच्चे थे तो लोग तुम्हारा साथ देते। इस तरह ज़बान का जख़्म पहुंचा कर उस पर नमक छिड़कने वाली बात कहता है कि ''अगर मैं सब बातों को भूल जाऊं तब भी एक बात कभी नहीं भूल सकता और वह यह कि तुमने मेरे बाप से कहा था कि अगर चालीस सच्चे लोग मेरी मदद करें तो मैं तुम से जंग करूंगा। एक दिन भी मुसलमान तुम्हारे साथ न हुए। हज़रत अली उन दिनों अपने अकेलेपन और मज़लूमियत को इस तरह बयान करते हैं।

''ए ख़ुदा कुरैश और उनके साथियों पर जीत हासिल करने के लिए तुझसे मदद चाहता हूँ कि उन्होंने मेरे रिश्तेदारों को अलग कर दिया और मेरे काम (मिशन) को मुश्किल कर दिया मेरे हक़ में कि जिसका मैं उन सब से ज़्यादा हक़दार हूँ वह सब उसके लिये मुझसे जंग करने के लिए एक हो गये हैं और कहते हैं कि अगर अपना हक़ ले सकते हो तो लो और अगर हमने तुमसे तुम्हारा हक़ छीन लिया है तो या तो दुखी रहकर सहन करो या इसी दुख में दुनया से चले जाओ। फिर मैंने अपने चारो सिम्त ध्यान दिया तो मैंने उनको कोई नुक़सान न पहुंचने की वजह से अपनी आँख में कांटा, अपने हलक़ में हड्डी कड़वा घूँट पीने के बराबर अपने गुस्से को पिया जो कड़वी घॉस से भी कड़वा और दिल तक पहुँच जाने वाली तलवार के वार से दर्दनाक

था और सब्र किया जब ज़ाहिरी ख़िलाफ़त आप तक पहुँची तो वह लोग जो ख़ुद आप को ढूंढ कर बेहद ज़िद करके आपको हाकेमीयत क़ुबूल करने पर मजबूर कर रहे थे वही ज़रूरत के वक़्त जब आप उनको सहारे के लिए बुलाते तो वह आपको अकेला छोड़ देते आप ने अलग अलग मौक़ो पर अपने सहाबियों की बेवफ़ाई, नीचपन और अपने अकेले होने व मज़लूम होने की शिकायत की है।

<u>जाहिल और कमज़ोर अक़ीदा शियों से मौला अली को शिकायत</u>

नैहजुल बलाग़ा में ख़तों और नसीहतों के अलावा बीस से ज़्यादा ऐसे भी ख़ुतबे हैं जिनमें मौला ने अपने सहाबियों को सज़ा का हक़दार कहा है कि वह आप को अकेला क्यूँ छोड़ देते हैं और आप का हुक्म नही मानते इस जगह कुछ छोटे छोटे नमूने देखिये –''ए इराक़ के लोगो तुम उस हामेला औरत की तरह हो जो अपने हमल के दिन पूरे करे तो मरा हुआ बच्चा गिरा दे और उसका शौहर भी मर चुका हो, रंडापे की मुददत भी बहुत लम्बी हो चुकी हो और (क़रीबी न होने की वजह से) दूर के रिश्तेदार ही उसके वारिस हों। ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारी तरफ़ ख़ुशी से नहीं आया बल्कि हालात से मजबूर होकर आ गया मुझे पता चला है कि तुम लोग कहते हो कि अली सच नही बोलते ख़ुदा तुम्हे हलाक करे (बताओ) मैं किस पर झूठ बॉध सकता हूं।

ख़बरदार मैंने उस क़ौम से लड़ने के लिए दिनो रात ख़ामोशी से भी और एलान करके भी तुम्हे पुकारा और ललकारा और तुम से कहा कि इससे पहले कि वह जंग के लिए बढ़ें तुम उनपर धावा बोल दो ख़ुदा की क़सम जिस क़ौम के लोगों पर उनके घरों के पास ही हमला हो

जाता है वह ज़लीलो ख़्वार हो जाते हैं लेकिन तुम ने जिहाद को दूसरों पर टाल दिया और एक दूसरे की मदद से दामन बचाने लगे यहां तक कि तुम को लूटपाट का शिकार बनाया गया और तुम्हारे शहरों पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा कर लिया गया। हैरत है हैरत, ख़ुदा की क़सम उन लोगों का बातिल पर एका कर लेना और तुम सबका अलग अलग हो जाना दिल को मुर्दा कर देता है और दुख तकलीफ़ को बढ़ा देता है तुम्हारा बुरा हो तुम दुख तकलीफ़ में फंसे रहो। तुम तो ख़ुद ही तीरों का निशाना बने हुए हो तुम्हे बरबाद किया जा रहा है फिर भी तुम हमले के लिये नहीं उठते। वह तुमसे लड़ भिड़ रहे हैं और तुम जंग से जी चुराते हो ख़ुदा की मुख़ालफ़तें हो रही हैं और तुम ख़ुश हो रहे हो। अगर गर्मियों में तुम्हें उनकी तरफ़ बढ़ने को कहता हूँ तो तुम यह कहते हो कि ये तो बड़ी सख़्त गर्मी का वक़्त है और अगर सर्दियो में चलने के लिये कहता हूँ तो तुम ये कहते हो कि कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है इतना रूक जाइये कि सर्दी का मौसम चला जाये। यह सब सर्दी और गर्मी से बचने के लिये बातें हैं। जब तुम सर्दी और गर्मी से इस तरह भागते हो तो फिर ख़ुदा की क़सम! तुम तलवारों को देखकर इससे कहीं ज़्यादा भागोगे। ऐ मर्दों की सूरत वाले नामर्दों! तुम्हारी अक़्लें बच्चों की सी हैं और तुम्हारी समझ पर्दे में रहने वाली दुल्हनों की तरह है मैं तो यही चाहता था कि न तुमको देखता न तुमसे जान पहचान होती ऐसी पहचान जो ज़िल्लत और दुःख व तकलीफ़ की वजह बनी है ख़ुदा तुम्हे फ़ना करे कि तुमने मेरे दिल को पीप से भर दिया और मेरे सीने को गुस्से से छलका दिया है तुमने

मुझे दुःख व तकलीफ़ के घूंट लगातार पिलाये कहना न मानकर मेरी राय को तबाह कर दिया।

ए वह लोगों जिनके जिस्म एक जगह और तमन्नाऐं अलग अलग हैं तुम्हारी बातें तो सख़्त पत्थरों को भी नरम कर देती हैं और तुम्हारे काम ऐसे हैं कि जो दुश्मनों को तुम्हारे ऊपर मुसल्लत होने का मौक़ा देते हैं अपने घरों में बैठकर तो तुम यह कहते हो कि यह कर देंगे और वह कर देंगे और जब जंग छिड़ जाती है तो तुम उससे बचने लगते हो जो तुमको मदद के लिये पुकारे उसकी आवाज़ की कोई हैसियत नहीं जिसका तुम जैसे लोगों से पाला पड़ा हो उसका दिल हमेशा बेचैन रहता है ग़लत सलत हीले बहाने हैं और मुझसे जंग करने के लिये देरी चाहते हैं। जैसे करज़ा न देने वाला करज़ा लेने वाले को टालने की कोशिश करता है ज़लील आदमी ज़िल्लतों को नहीं रोक सकता और हक़ तो बग़ैर कोशिश के नहीं मिल सकता उस घर के बाद और कौन सा घर है जिसकी हिफ़ाज़त करोगे और मेरे बाद और किस इमाम के साथ होकर जिहाद करोगे। ख़ुदा की क़सम जिसे तुमने धोका दे दिया हो उसके धोका खाने में कोई शक नहीं और जिसे तुम जैसे लोग मिले हों तो उसके हिस्से में वह तीर आता है जो ख़ाली होता है और जिसने तुम्हें तीरों की तरह दुश्मनों पर फेंका हो उसने ऐसा तीर फेंका है जिसका मुँह और फलका टूट चुका है। ख़ुदा की क़सम मेरी हालत तो अब यह है कि न मैं तुम्हारी किसी बात की ताईद कर सकता हूँ और न तुम्हारे सहारे का मुझे कोई आसरा बाक़ी रहा है और न ही तुम्हारी वजह से दुश्मन को जंग की धमकी दे सकता हूँ तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारी बीमारी क्या है?

और उसका इलाज क्या है? उस क़ौम के लोग भी तो तुम्हारी तरह के मर्द हैं क्या बातें ही बातें रहेंगी कोई काम न होगा। तुम पर अफ़सोस है कि मैं तो तुमको बुरा भला कहते कहते भी उकता गया हूँ कया तुम्हें आख़रत के बदले दुनयावी ज़िन्दगी और इज़्ज़त के बदले ज़िल्लत ही कुबूल है! जब तुम्हें दुश्मनों से लड़ने के लिये बुलाता हूँ तो तुम्हारी आँखें इस तरह घूमने लग जाती हैं कि जैसे तुम मौत के भंवर में हो और जान निकलने के वक़्त की बेहोशी तुम पर छाई हो मेरी बातें जैसे तुम्हारी समझ में ही नहीं आतीं तो तुम हैरान रह जाते हो ऐसा लगता है कि जैसे तुम्हारे दिलो दिमाग़ पर दीवानेपन का असर है कि तुम अक़ल से कुछ काम भी नहीं ले सकते। तुम हमेशा के लिए मुझसे अपना एतमाद (भरोसा) खो चुके हो न तुम कोई मज़बूत सहारा हो कि तुम पर भरोसा करके दुश्मनों की तरफ़ रूख किया जाये और न तुम इज़्ज़त या कामयाबी की वजह हो कि तुम्हारी ज़रूरत पड़े, तुम तो उन ऊँटों की तरह हो जिनके चरवाहे गुम हो गए हों अगर उन्हें एक तरफ़ से समेटा जाए तो दूसरी तरफ़ से तितर बितर हो जाऐंगे। ख़ुदा की क़सम तुम जंग के शोले भड़काने के लिए बहुत बुरे साबित हुए हो तुम्हारे ख़िलाफ सब तदबीरें हुआ करती हैं और तुम दुश्मनों के ख़िलाफ़ कोई तदबीर नहीं करते तुम्हारे शहरों की हदें दिन ब दिन कम होती चली जा रही हैं मगर तुम्हें गुस्सा नहीं आता। वह तुम्हारी तरफ़ से कभी बेपरवाह नहीं होते और तुम हो कि बेपरवाही में सब कुछ भूले हुए हो। ख़ुदा की क़सम एक दूसरे पर टालने वाले हारा ही करते हैं। ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हारे लिए यही सोच रखता हूँ कि अगर जंग ज़ोर पकड़ ले और मौत की गरमबाज़ारी

हो तो तुम इब्ने अबी तालिब से इस तरह कट कर जाओगे के जिस तरह बदन से सर (कि दोबारा पलटना मुमकिन ही न हो)।

मैं तो ऐसे लोगों में फंस गया हूँ कि जब उन्हें कोई हुक्म देता हूँ तो उसे मानते नहीं और जब उन्हें बुलाता हूँ तो आते नहीं तुम्हारा बुरा हो अब अपने ख़ुदा की मदद करने में तुम्हे किसका इन्तेज़ार है क्या दीन तुम्हें एक जगह इकठठ्ा नहीं करता और तुम्हारी ग़ैरत तुम्हें जोश में नहीं लाती? मैं तुममे खड़ा होकर चिल्लाता हूँ और मदद के लिए पुकारता हूँ लेकिन तुम न मेरी बात सुनते हो न मेरा कोई हुक्म मानते हो यहां तक कि मेरा हुक्म न मानने के बुरे नतीजे खुलकर सामने आ जाऐं न तुम्हारे ज़रिये ख़ून का बदला लिया जा सकता है, न किसी मक़सद तक पहुँचा जा सकता है। मैंने तुम्हें तुम्हारे ही भाईयों की मदद के लिए पुकारा था मगर तुम उस ऊँट की तरह बिलबिलाने लगे जिसकी नाफ़ में दर्द हो रहा हो और उस पतले दुबले कमज़ोर ऊँट की तरह ढीले पड़ गए जिसकी पीठ पर ज़ख़्म हो फिर मेरे पास तुम लोगों की एक छोटी सी, परेशान व कमज़ोर फ़ौज आई।

हमने देखा कि जाहिल और बेवकूफ़ शियों ने किस तरह अपने इमाम को अकेला छोड़ दिया वह जाहिल बेवकूफ़ शिया ही हैं जैसा कि इमामे ज़माना ने फ़रमाया कि उसके ईमान से मच्छर का पर ज़्यादा मज़बूत है अगर सारे शिया चौदह मासूमीन के लिए अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह समझते होते और उनको पूरा भी करते तो तारीख़ कभी भी उनकी मज़लूमियत, बेकसी और मुसीबतों की गवाह न होती।

अगर शिया अपने इमामों ख़ासकर इमामे ज़माना को सही ढंग से पहचानते और उनके बारे में अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा कर रहे होते तो इमामे ज़माना एक हज़ार एक सो साठ साल ग़ैबत में अकेले रहने के लिए मजबूर न होते।

हमें ध्यान देना चाहिए कि इमामे ज़माना जोकि अपने दादा मोहतरम के सच्चे अज़ादार हैं और उनके ख़ून का वही बदला लेने वाले हैं वह एक हज़ार साल पहले अपने शियों की बेवफ़ाई और कम हिम्मती की शिकायत किस तरह से कर रहे हैं –''अगर हमारे शिया (ख़ुदा उन्हें अपनी पैरवी की तौफ़ीक़ दे) हमारे वादे को पूरा करने में एक दिल होते तो उनके लिए हमारी बाबरकत मुलाक़ात में देरी न होती और हमें देखने की नेकी, जानकारी के साथ उन तक पहुँच जाती तो हमें उनसे कोई चीज़ दूर न रखती मगर उनकी वही बातें जो हम तक पहुँचती हैं जिससे हमें दुःख होता है जबकि उनकी हमें उनसे उम्मीद भी नहीं होती है।''

वह जाहिल और नासमझ शिया ही तो थे जिन्होंने इमामे हसने मुजतबा को हक़ पर जानते हुए भी माविया की तरफ़ से आने वाली धमकियों और लालच के सामने पैर फैला दिये और आपका साथ छोड़कर चले गये और आपको माविया से सुलह करने पर मजबूर किया।

आग़ा ख़ुमैनी साहब जिन्होंने ख़ुद बेवकूफ़ों और जाहिलों से बहुत तकलीफ़ और दुःख सहे हैं वह इमामे हसने मुजतबा की मज़लूमियत के बारे में उन्हीं के चाहने वालों के बीच इस तरह फ़रमाते हैं –''इमामे हसन जितना अपने दोस्तों और सहाबियों से परेशान थे इतना दूसरों

से नहीं थे वह सहाबी कि जिन्होंने यह सोचा ही न था कि उनके ज़माने के इमाम किस प्रोग्राम के साथ आगे बढ़ रहे हैं इसी लिए वह अपनी खोटी अक़ल और ग़लत सोच को लेकर उनके मुक़ाबले में खड़े हो जाते थे और आपको परेशान करते, सताते और कहूँ तो उन्हीं की वजह से आपकी जीत न हो सकी आपके दुश्मनों से वादे किये और हज़ारों तरीक़ों से जाल फैलाए।''

हाँ हाँ एहलेबैत को जो तकलीफ़ें शियों और अपने जाहिल चाहने वालों से पहुंची हैं वह दुश्मनों से भी नहीं पहुँची। बल्कि जो तकलीफ़ भी उन्हें उनके दुश्मनों से पहुंची या जो तौहीन और ज़ुल्म बर्दाश्त किया वह सब ना समझ शियों के बुरे तरीक़े और कामों की वजह से ही थे। इसी वजह से हम यह कहते हैं कि शिया अज़ादारी के चौथे दर्जे तक नहीं पहुंचे हैं और सिर्फ़ यही नहीं कि वह सच्चे अज़ादार नहीं हैं बल्कि कहीं ऐसा न हो कि जो मुसीबत इमामे ज़माना को पहुंचेगी उसमें इनका हाथ हो या यह भी उनपर ज़ुल्म करने वालों के साथ हों।

एक नासमझ शिया जब तक एक सच्चा अज़ादार नहीं बन सकता तो फिर वह इमामे ज़माना का सच्चा और सही इन्तेज़ार करने वाला तो हो ही नहीं सकता।

सच्चा इन्तेज़ार करने वाला जानता है कि दीन और उसके हलालो हराम की जानकारी के बग़ैर न सिर्फ़ यह कि हम ख़ुदा और इमामे ज़माना से क़रीब नहीं हो सकते बल्कि दीन और उसकी अधूरी जानकारी हमें उनसे और दूर कर देगी और हम बहुत ज़्यादा गुनहगार बन जाऐंगे वह लोग जो सिर्फ़ दीन का ज़ाहिरी ख़्याल रखते हैं और

अपनी बातों और कामों को ख़ुदा और रसूल के हुक्म के जैसा नहीं करते और अपनी मर्ज़ी और अक़्ल के मुताबिक दीन पर चलते हैं वह इमामे ज़माना की मदद करने के बजाए आपको तकलीफ़ देते और आपको नाराज़ करते हैं।

अफ़सोस है उसकी हालत पर कि जिसकी शिकायत उसके इमाम करें। ख़ुदा हमें बचाए कि कोई इमामे ज़माना की मौहब्बत और उनके दीन की पाबन्दी का दावा तो करे मगर उसकी दीनदारी और उसके दीनी कामों से आपको और सारे मासूमीन को तकलीफ़ हुई हो और वह उनकी मौहब्बत पाने के बजाये उनसे दूरी के रास्ते पर चला जा रहा हो और उनकी लानत और अज़ाब का भी हक़दार बन गया हो। इल्म हासिल करो और बा अदब बनो कि उनकी मजलिस में जो बा अदब नहीं होता उसे बात चीत की कोई इजाज़त नहीं होती।

इसीलिए सच्चा इन्तेज़ार करने वाला वह है कि जो ज़्यादा से ज़्यादा इस बात की कोशिश करे कि उसके सारे काम और अख़लाक़ दीनो मासूमीन के बताए हुए रास्ते पर हों वह दीनदारी में मनमानी बातों पर नहीं चलता या दूसरों के बहकाए में नहीं आता बल्कि हर काम से पहले दीन का हुक्म पता करता है सच्चे इन्तेज़ार करने वाले अपनी ज़िन्दगी को तौज़ीहुल मसाईल के सहारे गुज़ारते हैं और अपनी मनमानी व मनघड़त बातों और चाहतो से वह बहुत दूर रहते हैं ताकि उनकी ज़िन्दगी का हर मोड़ और दीन का हर काम मौला की ख़ुशी की वजह बन सके इस तरह से वह अपने मौला के चाहने वालों की लाईन मे आ सकते हैं।

अगर इमाम से मिलना चाहते हो तो इल्म हासिल करो क्यूँकि साहिबे नज़र हमेशा जानने वालों से ही सम्बन्ध रखते हैं। इन्तेज़ार करने वाला बहुत ज़्यादा अपनी सूझ बूझ से काम लेता है ताकि जो कुछ दीन में नहीं है उसे दीन न समझे और जो दीन का हिस्सा है उसे न छोड़े और इसके लिए वह आलिमों से मदद मांगता है और वह अपने आपको कभी भी आलिमों और दीनदारों से दूर नहीं रखता वह दीन को समझने और ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी पाने के लिए बेचैन रहता है जाहिलों और नासमझ लोगों से बहुत दूर रहता है सिवाए इसके कि उन्हें कुछ सिखाना चाहे मगर इसका ख्याल रखते हुए कि उनका कोई बुरा असर न आए।

पांचवा मरतबा (बदला लेने के कामों का)

इस मरतबे में अज़ादार अपने चौथे मरतबे को पूरा करके आता है यहाँ वह दिल की पाकीज़गी और ख़ास जानकारी के बाद पहुंचता है सच्चा अज़ादार इस मरतबे में एहलेबैत की अज़मत की जानकारी जो उसे पहले हो चुकी और उनकी मौहब्बत और दुश्मनों से उनका बदला लेने की भावना, इन सब की वजह से वह बहुत ज़्यादा काम करता है और ऐसे काम कि जिनसे एहलेबैत की मौहब्बत पैदा हुई या उनपर अक़ीदे का निर्भर होना या ख़ुदा की ख़ास बातें हों, करता है। सच्चा अज़ादार वह है कि जो अगर मुसीबते अज़ीम (बड़ी मुसीबत) जो इमामे हुसैन पर हुई उस पर रो रहा है तो वह मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) पर और ज़्यादा रोये।

रसूले ख़ुदा फ़रमाते हैं –'' बेशक मोमिनों के दिलों मे क़त्ले हुसैन की वजह से ऐसी गर्मी है जो कभी भी ठंडी नहीं होगी।''

जब सच्चे अज़ादार के दिल में ''मुसीबते अज़ीम'' यानी इमामे हुसैन औरउनके साथियों को क़त्ल होने की वजह से ठंडी न होने वाली आग (गर्मी) है तो फिर जिस ओहदे के लिए ख़ुदा ने आपको भेजा था औरउसपर आपको बाक़ी न रहने दिया उसके लिए तो और भी ज़्यादा सच्चे अज़ादार में गर्मी होनी चाहिए। क्यूँकि उसमें रूहे हुसैनी और उसकी भावना पाई जाती है।

वह इमामे हुसैन का हक़ीक़ी बेटा है जिसको ख़ुदा ने उनके ख़ून का बदला लेने वाला बनाया है। इसीलिए उसके दिल में बदला लेने की आग है कि जो कभी भी नहीं बुझेगी और यही आग ख़ुदा और इन्सानियत के दुश्मनों के लिए भी है कि जो उसको अज़ादारी के पाँचवे मरतबे तक पहुँचाती है यानी इमाम हुसैन के दुश्मनों से बदला लेने और जिहाद करने वाले कामों को शुरू करना।

इस मरतबे में उसकी दुआ वही होती है कि जो ज़ियारते आशूरा और दूसरी ज़ियारतों में उसको बताई गई है।

''मैं उस ख़ुदा से सवाल करता हूँ कि जिसने आपको यह बुलन्द मक़ाम दिया और मुझे आपके ज़रये इज़्ज़त दी कि मुझे एहलेबैत के इमामे मन्सूर के साथ आपके ख़ून का बदला लेने की तौफ़ीक़ दे।''

दूसरे जुमले में इमाम हुसैन से इस तरह कहा गया कि–

''मैं उस ख़ुदा से सवाल करता हूँ कि जिसने आपको यह बुलन्द मक़ाम दिया और मुझे आपके ज़रये इज़्ज़त दी कि मुझे उस इमामे हिदायत के साथ इमामे हुसैन के ख़ून का बदला लेने की तौफ़ीक़ दे जो हक़ के साथ ज़ाहिर होकर हक़ की बातें करने वाला है।

पाँचवा मरतबा दीन और एहलेबैत के दुश्मनों के ख़िलाफ़ तेज़ी से कामों को शुरू कर देने का है या दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाए कि यह मरतबा मुसीबते आज़म की सही पहचान और उसकी सही सोच समझ का है। जिहाद और मुक़ाबले के सिवा मुसीबते आज़म का जवाब किसी चीज़ से नहीं दिया जा सकता।

बदला लेने के कामों के तीन हिस्से

अब तक जो कुछ बताया गया उससे एक अज़ादार की ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह समझा जा सकता है लेकिन इस बात की अहमियत को सामने रखते हुए इस ज़िम्मेदारी को तफ़सील से लिख रहे हैं। अज़ादार के लिए बदले के कामों में जो कुछ भी ज़रूरी है जैसा कि इस हिस्से के नाम से भी पता चलता है वह है कुछ कामों का लगाातार करना यानी दिल, एहसास और अक़्ल से भी आगे की ज़िम्मेदारियां।

कुराने करीम और मासूमीन की हदीसों से जो कुछ हासिल होता है वह यह है कि मोमिन की इस मरतबे में तीन ज़िम्मेदारियां हैं। 1. ज़बानी लानतो मलामत 2. दूरी व नफ़रत 3. दुश्मनों से जिहाद।

1. ज़बानी लानत व मलामत

ख़ुदा और मासूमीन से इन्सानों के नाते को तोड़ना या कमज़ोर करना बहुत बड़ा गुनाह है और इन्सानी ज़िन्दगी में ख़यानत भी है और पूरे इतिहास में जिन लोगों ने भी यह बड़ा गुनाह किया है उन सब पर ख़ुदा, नबी और फ़रिश्तों ने लानत की है। लानत यानी ख़ुदा की रहमत और हिदायत से दूर होना और नेकयों के रास्ते से अलग हो जाना है।

और यह सच है कि जो लोग ख़ुदा और मासूमीन से खुद भी अलग हो गये वह ख़ुद भी हिदायत व रहमत से दूर हो गये और उन्होंने दूसरों को भी उनकी हिदायत से दूर कर दिया है तो वह मलऊन हैं और मलऊन वह है कि जो सीधे रास्ते से भटक जाये और ग़लत रास्ता चुन ले।

जिन्होंने ख़ुद को और दूसरों को भटकाया है उनपर लानत करना एक तरह से गवाही देना और एक वहशतनाक और बहुत कड़वे वाक़ऐ के होने का पता देता है और वह ये कि जिन लोगों पर लानत की जा रही है उन्होंने इन्सानी समाज को तरक़्क़ी की ऊँचाई तक पहुँचने से रोक दिया और उन्हें दुनया व आख़रत की नेकयों से दूर कर दिया तो उसके नतीजे में उनको लोगों को भटकाने, अज़ाब और बुरी क़िस्मत बनाने का मज़ा भी चखना होगा। क्यूँकि उन्होंने ख़ुद अपने हाथ से ही अपनी तक़दीर ख़राब की है।

लानत के दूसरे मानी जो आम लोगों में मशहूर हैं वह भी पहले मानी की तरह हैं यानी इतना बड़ा गुनाह करने वालों के लिए अज़ाब की बददुआ करना और इसकी दलील बिल्कुल सामने की है जब कोई इन्सान किसी को अपने जायज़ हक़ के रास्ते में रूकावट बनते हुए देखता है तो ख़ुदा से यह दुआ करता है कि उस रूकावट को दूर कर दे और उसे उससे ख़ुद ही नफ़रत हो जाती है और वह इन्सानों की नेकयों के रास्ते में रूकावट बनने की वजह से ख़ुदा के अज़ाब का हक़दार हो जाता है और ऐसा आदमी हर उस आदमी की नज़र में, जो अच्छाइयों को पसन्द और नेकयों का शौक़ीन, होगा गिर जायेगा बल्कि उससे नफ़रत हो जायेगी।

इसी वजह से कुराने करीम और एहलेबैत की हदीसों ख़ासकर उनकी ज़ियारतों के एतबार से वह लोग लानती ठहरें हैं कि जो लोगों की दुनया व आख़रत की नेकी और अच्छाइयों में रूकावट की वजह बने हैं या बनेंगे।

ज़बान से दूरी का ज़ाहिर करना बदला लेने के शुरूआती कामों में से है जो अपनी जगह एक अहम और बड़ा काम है इस मरतबे के अहम और बहुत ज़्यादा नतीजे सामने आते हैं जिनको लिखने की गुंजाइश यहाँ नहीं है।

एहलेबैत की बताई हुई कोई ज़्यारत ऐसी नहीं है जिसमें उनके दुश्मनों पर ज़बानी लानत मलामत न हो। कुराने करीम में भी दीने ख़ुदा के दुश्मनों पर बार बार लानत की गई है। ज़ियारते आशूरा बल्कि मासूमीन की सारी ज़ियारतों में जहाँ जहाँ भी एहलेबैत की विलायतो मौहब्बत के लिए कहा है वहीं उनके दुश्मनों से दुश्मनी और नफ़रत को भी कहा गया है।

ज़ियारते आशूरा में तीन तरह के लोगों से नफ़रत और उनपर लानत करने को कहा गया है जो नीचे लिखे जा रहे हैं।

(अ)जिन लोगों ने ख़िलाफ़त को हड़प कर उसको ग़लत रास्ते की तरफ़ मोड़ दिया जिसके बाद एहलेबैत पर जुल्म होने लगे उनमें करबला का जुल्म उसके बाद भी शियों और सारे मुसलमानों को अनगिनत मुसीबतें सहना पड़ीं।

ज़ियारते आशूरा में इमाम हुसैन की मुसीबत को उस भटकने और ग़लती करने के नतीजे में बताया है जो इस्लाम के शुरू ही में मौला अली (अ.स.) का हक़ दबाने से सामने आई थी। इसीलिए इमामे हुसैन

(अ.स.) की मुसीबत की अज़मत के बाद इस ज़ियारत में सबसे पहले उनपर लानत पढ़ी जाती है कि जिन्होंने इस्लाम के शुरूआती दौर में रसूले ख़ुदा के बाद लोगों की हिदायत के रास्ते को बदल दिया था और भटकाने के बीज बोए थे जिसके नतीजे में बनी उमय्या को पनपने का मौक़ा मिल गया था और इस मलऊन ख़ानदान के फैलने और पनपने ही की वजह से आशूरा की मुसीबत सामने आई जिससे एक बार फिर इन्सानी समाज मासूम इमाम की हिदायत से दूर हो गया।

(ब) वह दुश्मन कि जिन्होंने इमाम हुसैन और उनके साथियों को शहीद किया,याउन के लिए काम किया या ख़ामोश रहकर उन दुश्मनों को सराहा और उनकी मदद की।

(स)वह दुश्मन जो करबला के बाद से क़यामत तक दुनया मे आयेंगे।

लानत के बारे में इसका ध्यान रहे कि जिस तरह एहलेबैत के दुश्मनों के पहले और दूसरे गिरोह पर लानत करना ज़रूरी है इसी तरह उनसे दुश्मनी रखने वाले तीसरे गिरोह पर भी लानत ज़रूरी है क्यूँकि यह लानत उन लोगो पर है जो इस वक़्त एहलेबैत और ख़ास तौर से इमामे ज़माना के दुश्मन हैं और आपके ज़ुहूर के रास्ते में रूकावट बने हुए हैं जो भी इमामे ज़माना के दुश्मनों पर लानत न करे और उनसे अपनी दुश्मनी को भी खुलकर न बताये तो उसे अपनी एहलेबैत से मौहब्बत और ईमान पर शक करना चाहिए।

हम इस ज़माने में कुछ ज़्यादा देख रहे हैं कि जो लोग देखने में दीनदार और मोमिन लगते हैं वह अलग अलग हीले बहानों से लोगों को शैताने बुज़ुर्ग अमरीका और दूसरी इस्लामी दुश्मन ताक़तों के

ख़िलाफ़ नारा लगाने से रोकते हैं और ख़ास तौर पर लोगों को अमरीका मुर्दाबाद और इस्राईल मुर्दाबाद कहने से रोकते है।

जम्हूरिया इस्लामिये इरान जो ऐसा मुल्क है कि जिसके लिये रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया है कि यहाँ के लोग इमामे ज़माना के ज़हूर के लिये माहौल तैयार करेंगे। उस मुलके इस्लामी के बानी आयतुल्ला ख़ुमैनी साहब ने अपने इलाही सियासी वसीयत नामें में मजलिसों के बीच एहलेबैत के दुश्मनों पर भेजी जाने वाली लानतों के बारे मे इस तरह फ़रमाया है –''ईरान की नेक क़ौम से मरी यह वसीयत है कि मासूमीन ख़ास तौर से इमाम हुसैन की अज़ादारी में हम कभी भी लापरवाही न करें जिनकी जिहादी रूह पर ख़ुदा, नबयों, फ़रिश्तों और नेकों की बे इन्तहा सलवात हो और याद रखें कि मासूमीन ने इस्लाम की तारीख़ के इस अज़ीम वाक़ऐ को ज़िन्दा रखने के लिए जो हुक्म दिया है और एहलेबैत पर जुल्म करने वालों पर जो भी लानत होती है यह सब तारीख़ में हमेशा से है और हमेशा ज़ालिमों के ख़िलाफ़ बहादुर और जियाली क़ौमों का नारा है। आप जानते हैं कि बनी उमय्या लानतुल्लाह अलैह चाहे वह जहन्नम तक जा चुके हैं मगर उनपर लानत करना दुनया के ज़ालिमों के ख़िलाफ आवाज़ उठाना है और जुल्म को ख़त्म करने की इस आवाज़ को बाक़ी रखना है। नौहों और मासूमीन के क़सीदों में हर ज़माने और हर वक़्त के ज़ालिमों के जुल्म की याद दिलानी चाहिए। अमरीका और उसके सब पिटठुओं जिनमें सबसे बड़े ख़ुदा के हरम के ख़्यानतकार आले सऊद (ख़ुदा और फ़रिश्तों की उनपर लानत हो) जिनकी वजह से दुनया को इस्लाम की

मज़लूमियत के इस वक़्त में ज़ोर शोर से उसकी याद दिलानी चाहिए और उन पर लानत मलामत होनी चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा ''कि हज के मौक़े पर निजात का ऐलान कुफ़्रो शिर्क और बुतपरस्ती के ख़िलाफ तैयार करना है!

इसी तरह ईरानियों के अमरीका मुर्दाबाद के नारों के लिए फ़रमाते हैं:—

अमरीका मुर्दाबाद कहना या उस मुल्क का झन्डा जलाना ऐसे काम अमरीका की मोहतरम चीज़ों की हरगिज़ तौहीन नहीं है जैसे उनके अक़ीदए ईसाइयत की जानकारी, इन्जील, चर्च वग़ैरा। बल्कि यह अमरीका की हुकूमत पर क़ब्ज़ा किय हुए गिरोह की ज़ालिमाना सियासत के ख़िलाफ नफ़रत को ज़ाहिर करना है जिसे ईरानी क़ौम अमरीका मुर्दाबाद कहकर और उसका झन्डा जलाकर अपनी नफ़रत को ज़ाहिर करती है।

2.दूरी बनाना — यानी दुश्मनों के कल्चर से दूरी और उनकी आदतों और अक़ीदों से बचना। ज़ाहिर है कि एहलेबैत से मौहब्बत उनके दुश्मनों के कल्चर और आदतों को अपनाकर नहीं हो सकती इस बारे में इमामे सादिक़ फ़रमाते हैं —''हम हर नेकी व अच्छाई की जड़ हैं जितनी भी नेकियां हैं वह सब हमारी ही देन हैं जिनको इस तरह गिना जा सकता है — तौहीद, नमाज़, रोज़ा और गुस्से को पी जाना वग़ैरा और हमारे दुश्मन हर बुराई की जड़ हैं हर बुराई उन्ही से फैलती है उनकी वजह से झूठ, कंजूसी, चुग़लख़ोरी, रिश्तेदारों से बुरा सुलूक, सूद लेना वग़ैरा। लिहाज़ा वह झूठा है कि जो यह सोचे कि

वह हमारे साथ और हममें से है मगर वह हमारे दुश्मनों की बुरी आदतों में जकड़ा हुआ हो।''

यह सही है कि वह झूठा है जो अपने आपको एहलेबैत का समझता हो लेकिन दुश्मनों की आदतें उसमें पाई जाती हों और सूद लेने देने बुरे अख़लाक, गाली गलौच, चुग़लख़ोरी, मंहगी चीज़े करके बेचना, कंजूसी और धोका धड़ी के साथ उनके शियों से बरताओ करता हो। इस तरह से झूठा है वह भी जो अपने आपको एहलेबैत से मौहब्बत करने वाला समझता हो और दीन के दुश्मनों और बुरे लोगों से दूरी न रखता हो और बेपरदा, बेनमाज़, अपनी औरतों के लिए बेग़ैरती, दूसरे मज़हबों की तरबियत अपने बच्चों को ग़लत रास्ता दिखाना इससे इमामे ज़माना बल्कि मासूमीन के दिल का ख़ून करता है। झूठा है वह भी जो अपने आपको एहलेबैत का चाहने वाला कहता है अपने घर के दरवाज़े पर या हुसैन का अलम लगाता है, अज़ादारी के लिए अपने पूरे घर को काले कपड़े से ढक देता है और ख़ुद भी इन दिनों में काले कपड़े पहने रहता है मगर उसके दिल में इमामे ज़माना के दुश्मनों की मौहब्बत है और वह उनकी बातों और कल्चर को बढ़ावा देता हो और अपनी छत पर शैतानी सोच और उसकी गुलामी का झंडा भी लगा रखा हो (डिश एन्टीना)।

एहलेबैत से मौहब्बत उनके दुश्मनों से ज़रा सी नफ़रत या उनके कल्चर से थोड़ी सी दूरी करके नहीं की जा सकती इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स) ने उसके जवाब मे इस तरह फ़रमाया जिसने आप से यह सवाल किया कि वह आप से मौहब्बत करता है मगर आप के दुशमनो से दूरी रखने मे कुछ कमज़ोर है ''कि वह बिल्कुल झूठा है

जो हमसे मौहब्बत का दावा तो करता है मगर हमारे दुश्मनो से दूरी नहीं रखता।

मासूमीन एक नूर हैं और उन सबका मक़सद भी एक है (यानि दीन को बाक़ी रखना और मज़हब के चराग़ को रौशन रखने के लिए दौड़ धूप मेहनत करना व कुरबानी देना) इसलिए उनमे से किसी एक के नाम को भी ज़िन्दा रखना मज़हबे हक़ को ज़िन्दा रखना है लेकिन इमामे हुसैन (अ.स.) में यह ख़ासियत पायी जाती है कि आपकी याद और नाम को ज़िन्दा रखना मज़हबे इस्लाम को ज़िन्दा रखने में बहुत ज़्यादा असर रखता है।

रोज़ाना ज़ियारते आशूरा पढ़ने की जो ताकीद की गई है और एहलेबैत से मौहब्बत रखने व उनपर दुरूदो सलाम पढ़ने और उनके दुश्मनों से दूरी रखने को इसलिए कहा गया है ताकि एहलेबैत के दुश्मनों के तरीक़ों और आदतों से नफ़रत हो जाये वरना आज मुआवया और यज़ीद का कोई वजूद नहीं है कि हम उस पर लानत करें। उनकी याद और नाम ख़त्म हो चुके हैं उनके लाशें कूड़े के ढेर में बदल चुकी हैं बल्कि आज तो यज़ीदी सोच और इस वक़्त के यज़ीदियों के रास्ते और सोच से मुक़ाबला है फ़िरऔन की बीवी ने जब ख़ुदा से दुआ की तो यह नहीं कहा कि ख़ुदा मुझे फ़िरऔन से निजात दिला दे बल्कि उन्होंने यूँ कहा ख़ुदा अपने पास जन्नत में मेरे लिए एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन और उसके कारोबार से निजात दिला दे और पूरी ज़ालिम क़ौम से निजात दिला दे। यानी मुझे फ़िरऔन व फ़िरऔनियों से निजात दे कि जो बुरी और ख़राब बातों को पसन्द करते हैं। सोच हमेशा बाक़ी रहती है चाहे नाम और उसके मौजू बदल जाऐं।

जंगे नैहरवान के ख़त्म हो जाने पर जब ख़ारजियों की ज़िन्दगी का बिल्कुल सफ़ाया हो गया तो मौला अली (अ.स.) से किसी ने कहा कि वह सबके सब मिट गये ख़त्म हो गए, तो आपने फ़रमाया हरगिज़ नहीं अभी तो वह मर्दों की सुल्बों और औरतों के पेटों में मौजूद हैं जब भी उनमें कोई सरदार ज़ाहिर होगा तो उसे काटकर रख दिया जायेगा यहां तक कि उनके आख़री लोग चोर और डाकू होकर रह जायेंगे।

इमाम हुसैन (अ.स.) का मिशन आज भी ज़िन्दा और बाक़ी है इसी तरह अमवी, मरवानी, और अब्बासी मसलक भी मौजूद हैं रोने और अज़ादारी करने की ताकीद इसलिए की गई है कि शहीद पर रोने से शहादत का शौक़ पैदा होता है और इन्क़लाब की रूह को ज़िन्दा करते हुए उसके लिए शहादत को दिलचस्प बना देता है। क्यूँकि आँसुओं में उसी का रंग छलकता है जिसके लिए वह बहाये जाते हैं और यही रंगो ढंग आँसू बहाने वाले को दिया जाता है। इसीलिए हुसैनी मिशन पर चलने वाला इन्सान न जुल्म बरदाश्त करता है न खुद किसी पर जुल्म करता है इसीलिए जो लोग जुल्म करने या सहने को कुबूल करते और मानते हैं उनमें हुसैनियत थोड़ी सी भी नहीं पाई जाती क्योंकि इमाम हुसैन(अ.स.) का ख़ास शिया न जुल्म करता है न जुल्म सहता है। जुल्म सहने वाला इसी तरह बनी उमय्या का पैरोकार है जिस तरह जुल्म करने वाला अमवी चालों को मानने वाला है चाहे उसके होंटो पर ''या हुसैन''(अ.स.) का नौहा क्यूँ न हो और क़यामत के दिन जब हर एक को उसके इमाम के साथ बुलाया जायेगा तो ज़ालिमों को बनी उमय्या के साथ खड़ा किया जायेगा। लिहाज़ा अगर कोई यह समझना चाहता है कि कौन सा रास्ता इमाम हुसैन (अ.स.)

का है और कौन सा बनी उमय्या का, तो वह देखे कि उसमें जुल्म सहने या करने की भावना है या नहीं अगर उसके अन्दर बुरी आदतें और बातें पाई जायें तो फिर उसे अपने ऊपर शुरू से ध्यान देना होगा।

3. दुश्मनों से उस वक़्त तक 'जिहाद' लड़ाई और उनकी ताक़त को महदूद करने की कोशिश रखनी चाहिए जब तक कि वह जड़ से ख़त्म न हो जाए

अगर कल्चर या बुरे प्रचार के असर से बुत परस्ती व शिर्क राइज हो जाये जिसके नतीजे मे मुसलमानों के असली हक़ यानी ख़ुदा के एक होने को नुक़सान पहुँचे तो उस हक़ को वापस लेने के लिए मुसलमानों को क़दम उठाना चाहिये लेकिन क़दम उठाने की रूह सिर्फ़ रद करना है चाहे वह फ़िक़ह के एतबार से शुरूआती जिहाद क्यूँ न कहा जाये तौहीद तो इन्सानी फ़ितरत का तयशुदा हक़ है उसका राज़ यह है कि तौहीद से एक एक भी और पूरे समाज, हर एक को ज़िन्दगी मिलती है जिस तरह मौला अली(अ.स.) ने फ़रमाया है कि''तौहीद नफ़्स की ज़िन्दगी है'' क़ुरान में भी काफ़िर को तौहीद का क़ायल न होने की वजह से मुरदा कहा गया है और उसे ज़िन्दा के मुक़ाबिले में बताया गया है ''ताकि उसके ज़रिये ज़िन्दा दिल लोगों को ख़ुदा के अज़ाब से डरायें और काफ़िरों पर हुज्जत तमाम हो जाये।''

सारी आयतों और रिवायतों से पता चलता है कि सबसे पहले तो तौहीद एक आदमी और पूरे समाज सबकी ज़िन्दगी का ज़रिया है। फिर यह कि यह ज़िन्दगी का ज़रिया सारी इन्सानयत का तयशुदा

हक़ है लिहाज़ा सारे इन्सानों को उससे फ़ायदा उठाने का हक़ है इससे भी बढ़कर यह कि ज़िन्दगी वह हक़ है जिसे ख़ुदा ने दिया है (ना कि इन्सान अपनी मेहनत व कोशिश से यहाँ तक पहुँचा हो) इसीलिए न सिर्फ़ दूसरों को इससे महरूम नहीं किया जा सकता बल्कि इन्सान ख़ुद भी ख़ुदकुशी नहीं कर सकता।

लिहाज़ा इन्सानों को हक़ का दिफ़ा और कुफ़्रो शिर्क से मुक़ाबला उन सब ही का असली व पैदाइशी हक़ है यानी जिस तरह एक आदमी या समाज को कोई आदमी या समाज उनकी ज़िन्दगी को नुक़सान पहुंचाये तो उसकी रद वाजिब है बिल्कुल इसी तरह अगर कोई किसी आदमी या समाज की रूहानी व मज़हबी ज़िन्दगी को ख़राब करे और उनको काफ़िर बनाये या उनके इस्लामी रास्ते में रूकावट बने तो उसको रद करना ज़रूरी है जैसे कोई ख़ुदकुशी का इरादा करे तो उसकी जान बचाने के लिए उसकी ख़ुदकुशी से मुक़ाबला ज़रूरी है। यही हाल उसकी रूहानी और मज़हबी ख़ुदकुशी का भी है जो कि कुफ़्रो शिर्क की सूरत में सामने आती है। कुरान ने इसको तीन हिस्सों में बयान किया है :– 1. ''तबाह करने वालों का हाल यह है कि यह न सिर्फ़ ये कि ख़ुद नूरे ख़ुदा से फ़ायदा नहीं उठाएंगे बल्कि दूसरों को भी उसके नूर से फ़ायदा नहीं उठाने देते और यह लगातार ख़ुदा के दीन के नूर को बुझाने की कोशिश में लगे रहते हैं जैसा कि कुरान में है कि ''यह लोग चाहते हैं कि ख़ुदा के नूर को अपने मुँह से फूंक मारकर बुझा दें जबकि ख़ुदा इसके सिवा कुछ मानने को तैयार नहीं है कि वह अपने नूर को (तमाम) पूरा कर दे चाहे काफ़िरों को यह कितना ही बुरा क्यूँ न लगे।''

''यह लोग दूसरों को कुरान से रोकते हैं और ख़ुद भी दूर भागते हैं जबकि यह अपने को ही तबाह कर रहे हैं और वह इसको समझते ही नहीं।''

इन दोनों आयतों से पता चलता है कि काफ़िर नूरे ख़ुदा को बुझाने की कोशिश करते रहते हैं मगर वह कभी भी कामयाब नहीं हो पाते इसके अलावा वह लोगों को ख़ुदा के दीन से भी दूर रखना चाहते हैं और उनको उससे फ़ायदा नहीं उठाने देते और ख़ुद भी दूर हैं जबकि वह लोग जो रोकने और मना करने वाले हैं वह उस पत्थर के मानिन्द हैं कि जो किसी पानी के चश्में के मुंह को बंद किये हो कि जो रूहानियत के प्यासों तक ज़िन्दगी का पानी नहीं पहुँचने देते जबकि ख़ुद भी उससे महरूम हैं फ़ायदा नहीं उठाते।

दूसरे इस तरह के काँटों और पत्थरों को रास्ते से साफ़ करने को रहमत समझते हैं और इसको दुनिया के पैदा होने का तरीक़ा बताते हैं ''अगर इसी तहर से ख़ुदा कुछ लोगों को कुछ से न रोकता रहता तो सारी ज़मीन में झगड़ा फैल जाता लेकिन ख़ुदा दो जहान पर बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है।''

''और अगर ख़ुदा कुछ लोगो के ज़रिये कुछ को न रोकता रहता तो सारे गिरजे और यहूदियों और मजूसियों के इबादत ख़ाने और मसजिदें सब गिरा दिये जाते और जो ख़ुदा की मदद करेगा ख़ुदा उसकी ज़रूर मदद करेगा वह यक़ीनन ताकत और इज़्ज़त वाला है।''

क्यूकि ज़मीन को तबाही से बचाना और मज़हबी जगहों को वीरान न होने देना एसी रहमत है जो हमला करने वालों को रोके बग़ैर नही मिल सकती ऐसे पत्थरों और काँटों को रास्ते से साफ़ करना और उन

रास्ते के लुटेरों को हटाना नेक काम भी है और ख़ुदा की रहमत भी है।

तीसरे– ख़ुदा के लिए ज़रूरी है कि दुनिया को सही ढंग से चलाने के लिए उसकी सारी ज़रूरतो को पूरा करे और वह उसमे किसी तरह की कमी नही कर सकता यही वजह है की पहली आयत मे यह फ़रमाने के बाद कि अगर ख़ुदा ज़ालिमो को अपने नेक बन्दो के ज़रिए न रोके तो ज़मीन में दंगा फ़ैल जाए यह फ़रमाता है (लेकिन ख़ुदा आलमीन पर रहम करने वाला है) यानि ख़ुदा की रहमत इस बात की इजाज़त नही देती कि बेदीन ज़ालिम ज़मीन पर तबाही मचाए, दूसरी आयत मे यह फ़रमाने के बाद कि अगर यह रूकावट (रद) ना हो तो इबादत गाहें खराब और वीरान हो जायें। यह फ़रमाया–''जो ख़ुदा की मदद करेगा ख़ुदा भी यक़ीनन उसकी मदद करेगा बे शक वह ताक़तो इज़्ज़त वाला है'' यानि ख़ुदा के फज़ल और इज़्ज़त का तक़ाज़ा यह है कि शैतानो को दूर भगाए और नेकी के रास्तों मे आने वाले कान्टो को हटाकर अपनी रहमत के करशिमे दिखाए।

इसी तरह सूरए बक़र की 203 से 207 तक की आयतें भी यही बताती हैं कि चाहे कुछ लोग समाज को झगड़े और दंगे की तरफ़ ले जाना चाहते हैं और कुछ लोग कुर्बानी देते हैं लेकिन कुर्बानी देने वालो की कुर्बानी अस्ल मे ख़ुदा की रहमत है अपने बन्दो पर, यानि ख़ुदा चूंकि रहमत से सुलूक करता है लिहाज़ा वह कुछ ऐसे लोगो को पैदा करता है ताकि वह अपनी जान देकर हर रूकावट को दूर करते रहें।

''लोगों में से कुछ (हज़रत अली) ऐसे भी हैं कि जो अपनी जान (नफ़्स) बेचकर ख़ुदा की मर्ज़ी ख़रीद लेते हैं। ख़ुदा अपने बन्दों पर बहुत मेहरबान है। ''कुरान''

चूंकि हर चीज़ का हिसाबो किताब ख़ुदा की रहमत पर निर्भर है इसलिए उसका नतीजा भी वही तय करता है इसीलिए जनाबे दाऊदो जालूत के वाक़ऐ में इरशाद है–''नतीजा यह हुआ कि उन लोगों ने जालूत के लश्कर को ख़ुदा के हुक्म से हरा दिया और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया और ख़ुदा ने उन्हें मुल्को हिकमत दे दी'' ''बस तुमने उनको क़त्ल नहीं किया बल्कि ख़ुदा ने क़त्ल किया है।''

जिस तरह बदन की ज़िन्दगी के लिए रूह ज़रूरी है बल्कि सारे हिस्सों को ज़िन्दा रखती है और उनको बेकार होने से बचाती है इसी तरह दीन भी पूरे इन्सानी समाज को रूहानी ज़िन्दगी देता है और हर तरह से रूहानी ज़िन्दगी की वजह बन जाता है। लिहाज़ा उसकी ज़िन्दगी की हर घड़ी दीनी रंग ढंग में ढल जाती है और उसपर ख़ुदा की हुकूमत हो जाती है। इसीलिए जिस मुल्क के रहने वाले भी ख़ुदा रसूल और क़यामत पर ईमान रखते हैं तो वह मुल्क इस्लामी मुल्क में शामिल है तो उसको बचाना ज़रूरी, और उसकी रद्द वाजिब, और उसके बचाने के लिए जंग करना ख़ुदा के लिए जिहाद करने के बराबर है।

उधर काफ़िरों के वतन को बचाना ख़ुदा के लिए जिहाद नहीं है क्यूँकि काफ़िर के मुल्क को बचाना कभी भी ख़ुदा का काम नहीं हो सकता और उसके बचाव को दीनी जिहाद नहीं कहा जा सकता जैसा

कि कुरान उन लोगों के लिए कहता है कि जो बनी इस्राईल से थे कि जो अपने नबी से चाहते थे कि वह उनके लिए फ़ौज का सरदार बना दें ताकि उसके साथ ख़ुदा के लिए जिहाद करें तो उनके नबी ने फ़रमाया कहीं ऐसा न हो कि जब जंग वाजिब हो तो तुम उससे फिर जाओ, रूक जाओ और जंग को न जाओ तो उन्होंने जवाब दिया कि हम कैसे जिहाद नहीं करेंगे जबकि हमें हमारे घरों और बच्चों से अलग निकाल कर खड़ा कर दिया गया है।

इस आयत का ख़ास पैग़ाम यह है कि इस्लामी मुल्क और मुसलमान औरतों बच्चों की हिफ़ाज़त के लिए लड़ना अगर मुसलमानों की ज़िम्मेदारी में आता है तो वह ख़ुदा के लिए जिहाद करना है जैसा कि आज कल फ़िलिस्तीन के मुसलमान अपने मुल्क के लिए यहूदियों से जिहाद कर रहे हैं यह ख़ुदा के लिए जिहाद है।

बदला लेने की कोशिशों पर रहमत का साया

इस दर्जे में अज़ादार मासूमीन से क़रीब होने की बरकतों से ''क्यूँकि वही तो रहमत और मौहब्बत का ख़ज़ाना है'' और पैदाइशी मौहब्बत के साथ इन्सानी अख़लाक़ से काफ़ी मज़बूत और बुज़ुर्ग हो जाता है जैसा कि इन्सानी ज़िन्दगी के दर्जों के बारे में बताया जा चुका कि इन्सान के अन्दर दो चीज़ें पाई जाती हैं एक हैवानी दूसरे इन्सानी जिनमें से हर एक की अलग अलग ख़ासियतें हैं। हैवानी दर्जे में तो इन्सान सिर्फ़ हैवान ही होता है और जिस तरह हैवानों को एक दूसरे से मौहब्बत होती है वह उस मौहब्बत की बिना पर एक दूसरे की मुश्किलों में मदद करते हैं उसी हैवानी मौहब्बत की बिना पर

इन्सान भी दूसरों की मदद करते हैं और परेशानियाँ दूर करते हैं यानी यह मदद करना या परेशानी दूर करना उनकी हैवानी मौहब्बत का असर है।

जैसे बीमारी बर्दाश्त करना, दर्द सहना, ज़ख़्मी होना, क़त्ल होना और दूसरे इन्सानों के ग़म जो उसे नहीं हैं और इनमें से कोई एक परेशानी भी किसी इन्सान को हो जाती है तो वह उसका मुक़ाबला करता है ऐसे में हर इन्सान उसकी मुसीबत से दुखी होता है और उसकी मदद के साथ कोशिश करता है कि उसके दुख दर्द को कम करे और कभी कभी दूसरों की तकलीफ़ ख़त्म या कम करने के लिए अपनी पूँजी भी ख़र्च करता है। इस तरह की मौहब्बत जानवरों में बहुत पाई जाती है यह भी बहुत ज़्यादा देखा गया है कि कोई जानवर अपनी हैवानी मौहब्बत के नाते किसी इन्सान या किसी जानवर चाहे वह उसका बच्चा या जोड़ा या उसी की तरह हो उसे बचाने के लिए अपने आपको ख़तरे में डाल देता है मगर इस तरह की मौहब्बत सिर्फ़ जिस्मानी ज़िन्दगी को बचाने की हद तक होती है जो इस दुनिया की ज़िन्दगी तक सीमित है।

इन्सानी दर्जे में इन्सान इन्सानी व हमेशगी की निगाह अपने और दूसरों के लिए रखता है फिर उसकी अपने आपसे या दूसरों से मौहब्बत उसी निगाह से होती है कि इन्सानियत के साथ यह कि वह सबसे बेहतर मख़लूक़ है ना कि एक हैवान होने के नाते कि जिसकी उम्र और कमालात दोनों ही सीमित होते हैं।

इस लिहाज़ से क्यूँकि इन्सान को ख़ुदा की रूह दी गई है तो फिर वह फ़रिश्तों से बढ़कर सबसे बेहतर मख़लूक़ है और अपनी

इन्सानी व हमेशा की ज़िन्दगी बिताने के लिए वह नबियों और आसमानी किताबों का मोहताज है। दीन जो दुनिया के उस पालने वाले की तरफ़ से नबियों के ज़रिये आया है कि जो इन्सानों का और दुनिया का मालिक है यह वही दीन है जो ख़ुदा के आदेशों और क़ानून को इकटठा किये हुए है और वह इन्सानी ज़िन्दगी के तीनों मरतबों के नाते बनाया गया है जिसमें इन्सानी हिदायत की ज़रूरत के लिए सातों तजरबों का ख़याल रखा गया है।

इस निगाह से इन्सानी ज़िन्दगी सिर्फ़ इसी दुनिया या दुनियावी चीज़ों तक महदूद नहीं हैं बल्कि उसके तीन दर्जे है। जिसमें दुनियावी ज़िन्दगी उसका दूसरा दर्जा और उसकी ज़िन्दगी के बीच का हिस्सा है।

इन्सानी ज़िन्दगी के वह दर्जे यह हैं :–

1. दुनिया से पहल`2. दुनिया में
3. दुनिया के बाद (आख़रत या हमेशगी)

इन्सान इस दुनिया में ख़ुदा की दी हुई रूह के साथ आकर कुछ समय रहता है और फिर वह ख़ुदा व आख़रत और हमेशगी की तरफ़ चला जाता है इस बिना पर इन्सान की ज़िन्दगी और ज़िन्दगी के कामों का नक़्शा इस तरह बनता है।

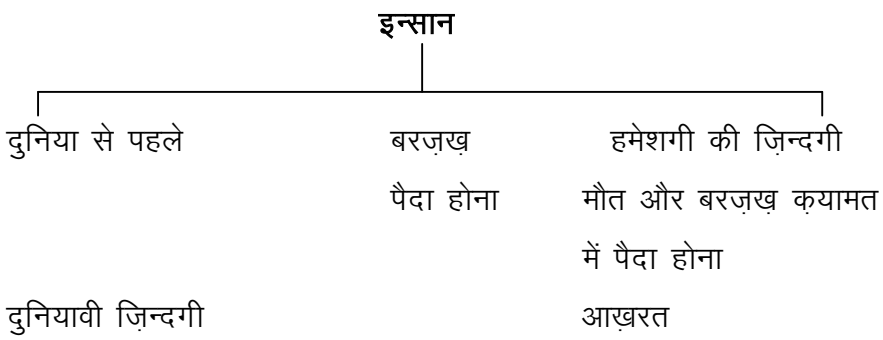

इन्सानियत के नाते जब कोई इन्सान किसी इन्सान की सारी बातों को सामने रखते हुए उसकी ज़िन्दगी के हर मोड़ पर ध्यान रखकर अपने आपसे या दूसरे से मौहब्बत करता है तो उसकी मौहब्बत सिर्फ़ दुनिया तक सीमित नहीं रहती बल्कि वह हमेशा वाली और असीमित होती है।

सही अज़ादार सिर्फ़ हैवानी आदत, भावना के नाते या दुनियावी ज़िन्दगी के लिए ही मौहब्बत नहीं करता बल्कि वह तो सबसे बेहतर और अच्छी व मज़बूत मौहब्बत सबसे करता है चाहे इन्सान हो या हैवान, पेड़ हों या पत्थर, उसके लिए सारी चीज़े मौहब्बत व इज़्ज़त के क़ाबिल हैं बल्कि वह तो दूसरों की इन्सानी ज़िन्दगी के लिए भी इसी तरह पक्की मौहब्बत रखता है।

पाँचवें मरतबे में अज़ादार एक तरफ़ इन्सानियत और दूसरी तरफ़ दीन व मासूम रहबरों के नाते हमेशगी और सही निगाह से देखता है और अपने दौर के हालात की सही जानकारी की बिना पर इन्सानी ज़िन्दगी के दुश्मनों और नेकी व अच्छाई में रोड़ा बनने वालों को ढंग

से पहचानता है तो वह इन्सानों से इस हमेशगी मौहब्बत की बिना पर उन रोड़ो को रास्ते से हटाने के लिए लड़ाई भी लड़ने लगता है।

अज़ादार चूंकि सारी चीज़ों से हमेशगी की मौहब्बत और निगाह रखता है इसलिए किसी से भी वह ज़ाती दुश्मनी या लड़ाई नहीं रखता उसकी लड़ाई और दुश्मनी सिर्फ़ इन्सानियत और इन्सान से मौहब्बत के लिए है और इस अच्छी मौहब्बत ही की वजह से वह जिहाद के नाम से ख़ुदा के लिए ख़ुदा के हुक्म से लड़ता है।

उसका जिहाद ख़ुदा के लिए है उसमें किसी तरह का ज़ाती कीना, हसद, गुस्सा, दौलत, ओहदा या हुकूमत का कोई काम नहीं होता।

इमामे हुसैन (अ.स.) की जंग का मक़सद

यहाँ अज़ादार अपने मौला इमाम हुसैन (अ.स.) का पैरोकार होता है आपने जिहाद की ज़रूरत और इस्लाम में उसकी अहमीयत और अपनी जंग के राज़ों को इस तरह बताया है –

1.मिना के मैदान में सैकड़ों लोगों और रसूले ख़ुदा (स.अ.) के सहाबियों के बीच आपने फ़रमाया –''अजीब बात है और अजीब क्यूँ न हो कि इस्लामी मुल्क, धोकेबाज़ों और इस्लामी टैक्स लेने वाले जालिमों और मोमिनों पर किसी तरह रहम न करने वाले हाकिमों के चंगुल में है तो अब इस चीज़ का ख़ुदा ही हाकिम है जिसके लिए हम परेशान हैं और जिस बारे में हम झगड़ रहे हैं उसमें वह हमारी मदद करेगा।

ए ख़ुदा तू बेहतर जानता है कि जो कुछ हमने किया है वह हुकूमत की दौड़ धूप और दुनिया के बेक़ीमत माल के लिए नहीं किया था बल्कि तेरे दीन की निशानियों को दिखाने के लिए किया था और तेरी

ज़मीन में सुधार लाने के लिए, ताकि तेरे मज़लूम बन्दे सुकून से रह कर तेरे वाजिबो सुन्नत हुक्म पर चल सकें और तुम (ए लोगों) अगर (इस नेक काम में) हमारी मदद नहीं करोगे या हमारा साथ न दोगे तो ज़ालिम बहुत जल्दी तुम्हें अपने चंगुल में ले लेंगे और तुम्हारे पैग़म्बर के नूर को बुझााने की कोशिश करेंगे। हमारे लिए तो ख़ुदा ही बहुत है उसपर हमें भरोसा है क्यूँकि उसी की तरफ़ पलटना है और अन्जाम भी उसी के हाथ है।

2.अपने भाई जनाबे मौहम्मदे हनफ़िया की भाईचारगी और भलाई के जवाब में आपने फ़रमाया – ''मेरे भाई! ख़ुदा की क़सम अगर दुनिया में मुझे कहीं पनाह न मिले तब भी मैं कभी भी यज़ीद की बैअत नहीं करूंगा क्यूँकि रसूले ख़ुदा (स.अ.) ने उसके लिए कहा था ऐ ख़ुदा यज़ीद को बरकत और नेकी मत देना।

उसके बाद आपने वसीयत नामा लिखकर अपने भाई को दिया जिसमें लिखा था –''मैं मनमानी, सरकशी या झगड़े फ़साद के लिए अपने वतन से नहीं निकला हूँ बल्कि मैं अपने नाना की उम्मत को सुधारने के लिए चला हूँ और चाहता हूँ कि नेकियों का हुक्म दूं और बुराईयों से रोकूँ ताकि अपने नाना और अपने बाबा अली इब्ने अबी तालिब की तरह दीन की ख़िदमत करूं। जो भी मेरी बात को जोकि हक़ है मानेगा तो ख़ुदा हक़ से सबसे ज़्यादा क़रीब है और उसका सिला (बदला) भी उसी के हाथ है और जो भी मेरी बात को नहीं मानेगा तो मैं जब तक सब्र करूंगा कि जब तक ख़ुदा मेरे और उसके बीच हक़ का फ़ैसला न कर दे बेशक वही हक़ का फ़ैसला करने वाला है।''

3.आपने कई बार हुर और उसकी फ़ौज से इस तरह फ़रमाया–''मेरा हाल तुम देख रहे हो क्या हो गया दुनिया ने मुँह फेर लिया और उसकी अच्छाईयों ने मुह मोड़ लिया और बहुत तेज़ी से गुज़र रही है और उसमें मानिन्द बर्तन की तलछट के सिवा कुछ भी नहीं रह गया है और वह भी बहुत नीच ज़िन्दगी है जैसे एक सख़्त और ख़तरनाक चरागाह। क्या तुम नहीं देखते कि वह हक़ पर नहीं है और बातिल से पीछे नहीं हट रहे? इन बातों पर मोमिनों को ख़ुदा से मुलाक़ात यानी शहादत का शौक़ीन होना चाहिए क्यूँकि मेरी नज़र में ऐसी मौत, शहादत व नेकी है और ज़ालिमों के साथ ज़िन्दा रहना ज़िल्लत व रुसवाई है।''

''सच तो यह है कि लोग दुनिया के पुजारी हैं दीन उनकी ज़बान पर बेजान और कमज़ोर चीज़ जैसा है और वह उसके आगे पीछे सिर्फ़ उस वक़्त तक रहते हैं कि जब तक दुनिया उनके साथ है और जब किसी मुसीबत का शिकार हो जाते हैं तो दीनदारी कम रह जाती है।''

इसी तरह फ़रमाते हैं ''ऐ लोगों अगर तुम ख़ुदा से डरो और हक़ वालों का हक़ पहचानों तो यह ख़ुदा को ख़ुश करने वाली बात है हम नबी के एहलेबैत उन झूठे दावेदारों से ज़्यादा ख़िलाफत (हुकूमत) के हक़दार हैं जो तुमपर ज़ुल्मों सितम करते रहते हैं अगर तुम हमसे ख़ुश नहीं हो और हक़ को नहीं पहचानते हो और तुम्हारी सोच उससे हटकर कुछ और है जो तुमने हमें अपने ख़तों में लिखा था और तुम्हारे ख़त लाने वालों ने कहा था तो मैं वापस जा रहा हूँ।

आपने यह भी फ़रमाया ''मैं वह नहीं हूँ जो मौत से डर जाऊं हर वह मौत जो इज़्ज़त हासिल करने और हक़ को ज़िन्दा करने में आये

कितनी आसान है, इस्लाम की इज़्ज़त के लिए मर जाना हमेशा की ज़िन्दगी पाना है और ज़िल्लत के साथ जीना उस मौत के सिवा कुछ नहीं जिसमें ज़िन्दगी का कोई नाम न हो। क्या तू मुझे मौत से डराता है? यह कभी नहीं हो सकता तेरा निशाना उल्टा और तेरी सोच ग़लत हो गई। मैं वह नहीं हूँ जो मौत से डर जाऊं मेरी रूह और हिम्मत इससे कहीं ज़्यादा बुलन्द है कि मैं मौत से डरकर और जुल्म सहकर जियूँ क्या तुम मुझे क़त्ल करने से ज़्यादा कुछ और कर सकते हो? ख़ुदा के लिए क़त्ल होना कितना अच्छा है तुम मेरी इज़्ज़त अज़मत और बुज़ुर्गी को ख़त्म नहीं कर सकते तो फिर मुझे क़त्ल हो जाने का क्या डर। आपने यह भी फ़रमाया कि जो भी किसी ज़ालिम बादशाह (हाकिम) को देखे कि वह ख़ुदा के हराम को हलाल जानता हो और ख़ुदा के वादे को तोड़ता हो, रसूले ख़ुदा (स.अ.) की सुन्नतों की मुख़ालफ़त करके ख़ुदा के बन्दो के बीच गुनाह और बुरी बातों का चलन करता हो और वह देखने वाला अगर अपनी बातों या कामों से उसको न बदले तो ख़ुदा उसको भी उसी ज़ालिम बादशाह के अज़ाब में गिरफ़्तार करेगा।

ख़बरदार वह लोग शैतान के गुलाम और ख़ुदा की इताअत को छोड़कर तबाही के रास्ते पर आ गये हैं ख़ुदा के हुक्म को छोड़कर बैतुल माल (इस्लाम के ख़ज़ाने) को अपने क़ब्ज़े में किये हुए हैं हरामे ख़ुदा को हलाल और हलाले ख़ुदा को हराम कर रहे हैं और सबसे ज़्यादा मेरे लिए ज़रूरी है कि मैं बेचैन होकर उनके मुक़ाबले के लिए उठ खड़ा हूँ।

तुम्हारे ख़त भी मेरे पास आये और तुम्हारे भेजे हुए लोग भी लगातार मेरे पास आये कि तुमने अपनी बैअत से मुझे दुश्मनों के सुपुर्द नहीं किया। इससे मुझे कोई फ़ायदा नहीं हुआ न मैं आज़ाद हुआ अगर तुम अपनी बैअत पर बाक़ी रहते तो कामयाबी को पहुँचते मैं हुसैन इब्ने अली (अ.स.) जो फ़ातेमा बिन्ते रसूल का बेटा हूँ आज भी तुम्हारे साथ हूँ बल्कि मेरे एहलेबैत भी तुम्हारे साथ हैं मैं तो तुम्हारे लिए नमूना हूँ।

4.आपने अपने आख़री वक़्त में ख़ुदा से इस तरह मुनाजात की ''ऐ ख़ुदा! तेरी मौहब्बत में मुझे सत्तर हज़ार मरतबा क़त्ल होकर ज़िन्दा होना गवारा है ख़ासकर जबकि जब मेरे क़त्ल होने से दीन को मदद, मज़हब को ज़िन्दगी और दीन की बुनियादों की हिफ़ाज़त हो रही हो फिर मैं आले मौहम्मद के जवानों और दोस्तों के शहीद होने के बाद ज़िन्दगी से बेज़ार हो गया हूँ।

5.इमामे हुसैन (अ.स.) को अपने मक़ामों मंज़िलत का बहुत ज़्यादा एहसास था जो कि ख़ुदा ने उनको और उनके एहलेबैत को दिया था यानी रसूले खुदा की जानशीनी और लोगों पर हुकूमत और इस ओहदे पर क़ब्ज़ा किये जाने पर कि जो इस्लामी हुक्म को ख़राब और ख़त्म करने जैसा है उसको एक बड़ी मुसीबत जानते थे इसीलिए जब मावया मर गया तो वलीद जो मदीने का हाकिम था उसने इमामे हुसैन (अ.स.) से यज़ीद पलीद की बैअत का सवाल किया इब्ने ज़ुबैर ने आपसे पूछा कि अगर आपको यज़ीद की बैअत के लिए बुलाया जाये तो क्या करेंगे? तो आपने उसके जवाब में फ़रमाया ''मैं कभी भी उसकी बैअत नहीं करूंगा, कयूँकि अपने भाई हसन (अ.स.) के बाद विलायत का मैं औहदेदार हूँ मावया ने अपना काम कर लिया उसने

मेरे भाई से वादा किया था कि वह अपने बाद ख़िलाफ़त को अपने बेटों को नहीं देगा और मैं ज़िन्दा रहा तो वह मुझ पर छोड़ देगा अब वह दुनिया से चला गया मगर अपने वादे को पूरा नहीं किया ख़ुदा की क़सम मेरे लिए वह मुसीबत खड़ी कर दी जिससे कभी सुकून नहीं मिलेगा, अबू बकर ध्यान दे क्या मैं यज़ीद की बैअत करूँ जबकि वह ऐसा फ़ासिक़ है जो खुल्लम खुल्ला गुनाह करता हो, शराब पीता हो, कुत्तों और बन्दरों से खेलता हो और आले मौहम्मद से दुश्मनी रखता हो, ख़ुदा की क़सम मैं उसकी बैअत कर ही नहीं सकता।

6.आपने मदीने के हाकिम को ख़िताब करके फ़रमाया–''ऐ हाकिम मैं एहलेबैते नुबुव्वत और रिसालत की खान, फ़रिश्तों के आने जाने की जगह और ख़ुदा की रहमत की जगह हूँ ख़ुदा ने हमसे ही दीन को शुरू किया और हम पर ही ख़त्म करेगा। यज़ीद फ़ासिक़, शराब पीने वाला, नेक लोगों का क़ातिल और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वाला है मुझ जैसा उस जैसे की बैअत कभी भी नहीं कर सकता लेकिन तुम भी सुबह तक सोचो में भी सोचता हूँ फिर मैं भी और तुम भी इन्तेज़ार करें ताकि देखें कि हम में कौन है जो रसूले खुदा (स.अ.) की ख़िलाफ़त और बैअत का हक़दार है?'' फिर आपने यह भी फ़रमाया ''अबू सुफ़यान के बेटों के लिए ख़िलाफ़त हराम है लिहाज़ा मैं उस ख़ानदान की बैअत कैसे कर सकता हूँ कि जिसके लिए रसूले ख़ुदा ने यह बात कही हो?''

7.आपने मरवान बिन हकम के जवाब में जो आपसे यज़ीद की बैअत मांग रहा था फ़रमाया इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन इस बिना पर तो इस्लाम को ख़ुदा हाफ़िज़ कहता हूँ कि उम्मते इस्लामी यज़ीद

जैसे हाकिम के चंगुल में फंस गई है और यह भी फ़रमाया कि ''ए दुश्मने ख़ुदा मुझसे दूर हो जा! मैं एहलेबैते रसूले खुदा (स.अ.) हूँ और हक़ हम ही में है जो हमारी ही ज़बान पर जारी होता है मैंने रसूले ख़ुदा (स.अ) से सुना है आपने फ़रमाया कि अबु सुफ़यान के ख़ानदान, आज़ाद किये हुए गुलामों और उनकी औलाद पर ख़िलाफ़त हराम है। अगर मावया को मेरे मिम्बर पर देखो तो उसका पेट फाड़ दो ''ख़ुदा की क़सम मदीने वालों ने उसे मेरे नाना के मिम्बर पर देखा लेकिन मेरे नाना के हुक्म पर न चले, इसीलिए ख़ुदा ने उसके बेटे यज़ीद को उनपर मुसल्लत कर दिया ख़ुदा आग में उनके अज़ाब को और बढ़ाये।''

8.रसूले ख़ुदा (स.अ.) की बीवी जनाबे उम्मे सलमा इमामे हुसैन (अ.स.) से फ़रमाती हैं ''मेरे बेटे इराक़ जाकर मुझे दुखी न करो क्यूँकि मैंने तुम्हारे नाना से सुना है कि मेरा हुसैन इराक़ में करबला की ज़मीन पर शहीद कर दिया जायेगा।'' तो इमाम ने फ़रमाया–''नानी जान! ख़ुदा की क़सम मैं इसे जानता हूँ कि मैं बेकसी और बेदर्दी से शहीद किया जाऊंगा और इससे कोई बचाव नहीं ख़ुदा की क़सम मैं तो उस दिन को कि जिस दिन मुझे क़त्ल किया जायेगा और अपने क़ातिल को, जहाँ मुझे दफ़न किया जायेगा उस जगह को, यानी हर एक को जानता हूँ इसी तरह मेरे एहलेबैत, दोस्त और चाहने वाले जो क़त्ल किये जाऐंगे उनको भी जानता हूँ।

नानी जान! अगर आप मेरी क़ब्र व रौज़े की जगह देखना चाहती हों तो मैं दिखा सकता हूँ ''आपने यह भी फ़रमाया नानी जान ख़ुदा की मर्ज़ी है कि मुझे जुल्मों जोर के साथ शहीद किया जाय और सर

काटा जाये फिर मेरे एहलेबैत, मेरे क़रीबी रिशतेदारों, मेरी औरतों को अपने घरों से असीर करके दूर ले जायगें इसी तरह बच्चों के सर कटेंगे या वह ज़ंजीरों मे जकडे होंगे और मदद माँग रहे होंगे मगर कोई मदद करनें वाला न होगा।

9.जब आप मक्के से करबला को रवाना हो रहे थे उस वक़्त फ़रमाया '' सारी तारीफ़ें उस ख़ुदा के लिए कि जो वह चाहता है हो जाता है उसके बग़ैर कुछ नहीं हो सकता लोगों के गले में मौत इस तरह पड़ी हुई है जैसे लड़कियों के गले में माला पड़ी होती है और मैं अपने बुज़ुर्गों से मिलने को इसी तरह बेचैन रहता हूँ जैसे जनाबे याक़ूब यूसुफ़ को देखने को बेचैन रहते थे उन्होने मुझे शहीद करने कि जगह छॉट रखी है जिसे मैं मजबूरन देखूंगा यानि लालची भेड़ियों को करबला के जंगल में देखूंगा कि जो अपने ख़ाली पेट के जहन्नम को मेरे जिस्म के अलग अलग ज़ख्मी हिस्सो से भर रहे होंगे मुझे इस से कोई इन्कार नहीं है कि जो ख़ुदा ने मेरे नसीब में लिखा है क्यूँकि ख़ुदा का ख़ुश होना ही हम अहलेबैते नबी का ख़ुश होना है उसकी हर मुसीबत पर हम शुक्र करते है क्यूँकि वह हमे सब्र करने पर पूरा पूरा बदला देगा रसूले ख़ुदा (स.अ.) की औलाद कभी भी उससे अलग न होगी वह हरम मे उससे क़रीब होते हैं वह भी उनको अपनी निगाह मे क़रीब समझता है और उनके लिए अपने किए हुए वादे को पूरा करेगा जो भी हमारे लिए (यानि ख़ुदा के लिए) अपना ख़ून बहायेगा और अपने आप को ख़ुदा के क़रीब करना चाहे वह हमारे साथ चले कि कल ख़ुदा की मर्ज़ी से हम ही साथ चलने वाले होंगे।''

10.सैय्यद इब्ने ताऊस इमामे जाफ़रे सादिक़ (अ.स.) से रिवायत लिखते हैं ''मौहम्मद इब्ने हनफ़िया ने उस रात इमामे हुसैन (अ.स.) के पास आकर कहा कि जिसकी सुबह आप मक्के के लिए निकलने वाले थे भाई जान आप अपने वालिद और भाई के बारे में कूफ़ियों की मक्कारियों को जानते हैं मुझे डर है कि आपके साथ भी कहीं वही सुलूक न हो। अगर आप मुनासिब समझें तो मक्के में ही रुक जायें कि वहाँ आप सुकून से महफ़ूज़ रहेंगे। तो आपने फ़रमाया ''भाई! मुझे डर है कि यज़ीद इब्ने मावया हरम (मक्के) ही में मेरा ख़ून न बहा दे जिससे ख़ानऐ काबा का एहतेराम ख़त्म हो जायेगा'' तो उन्होंने कहा कि अगर ऐसा है तो रात के वक़्त यमन या उसके आस पास किसी गुमनाम जंगल में चले जायें जहाँ आप हिफ़ाज़त से रह सकेंगे और किसी को पता भी नहीं चलेगा तो आपने फ़रमाया मैं इस बारे में सोचूंगा सुबह सवेरे इमाम मक्के से निकले जैसे ही मौहम्मदे हनफ़िया को पता चला फ़ौरन वह आये और इमाम के ऊँट की मिहार पकड़ कर कहा कि भाई जान आपने तो फ़रमाया था कि मैं इस बारे में सोचूंगा? तो आपने फ़रमाया 'जी' तो उन्होंने कहा तो फिर इतनी जल्दी क्यूँ चलने लगे। आपने फ़रमाया 'कि जब आप चले गये तो रसूले ख़ुदा (स.अ.) ने मुझसे आकर कहा कि बेटा हुसैन! चलो कि ख़ुदा तुमको शहीद देखना चाहता है'' मौहम्मदे हनफ़िया ने कहा कि इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहे राजेऊन अगर ऐसा ही है तो फिर इन औरतों को क्यूँ साथ लिए जाते हैं? फ़रमाया रसूले ख़ुदा (स.अ.) फ़रमाते हैं कि ''ख़ुदा इनको असीर (क़ैदी) देखना चाहता है।''

11.जब आपको रास्ते में अपने रज़ाई आई और मुस्लिम इब्ने अक़ील व हानी इब्ने अरवा की शहादत की ख़बर मिली तो आपने फ़रमाया ''वह लोग जो तलवार की धार और नेज़े के ज़ख़्म को सहन कर सकें वह तो मेरे साथ रहे बाक़ी पलट जायें।''

12.रोज़े आशूरा दुश्मन के लश्कर से इस तरह फ़रमाया ''ख़बरदार ज़िना ज़ादे का बेटा ज़िना ज़ादा मुझे तलवारों और ज़िल्लत के बीच खींच लाया है। अफ़सोस बातें और मैं! अफ़सोस कि मैं जिल्लत बरदाश्त करूँ! ख़ुदा, रसूल, मोमेनीन, पाकदामन लोग, नेक शरीफ़, जो हमारी पैरवी करते हैं यह सब कभी भी मेरे लिए इसे पसन्द नहीं करेंगे क्यूँकि इन नीच लोगों की पैरवी बुज़ुर्गों की क़त्लगाह पर भारी पड़ेगी जान लो कि मैं इन थोड़े से साथियों के साथ ही तुम ढेरों दुश्मनों से जंग करूंगा।

जी हाँ सच्चा अज़ादार जिहाद और अपने कामों में इमामे हुसैन और उनके मक़सद का पैरोकार होता है।

<u>जिहाद की भावना न होनें से ख़तरे</u>

एहलेबैत और सारे नबियों ने हमेशा बड़ी बड़ी मुसीबतें उठाई ताकि ख़ुदा के दीन के साथ इन्सानों की सही ज़िन्दगी को बचाया जा सके लिहाज़ा जब भी इन्सानी ज़िन्दगी या ख़ुदा के दीन पर कोई ख़तरा मंडराता है तो दीनदार, सच्चे मोमिन इन्सानों को उससे निजात दिलाने की हर तरह से कोशिश करते हैं।

जो लोग इस्लाम में जिहाद के क़ानून पर उंगली उठाते हैं और उसे ज़ुल्म जानते है वह न तो इन्सानी ज़िन्दगी रखते हैं न ही उसकी अहमीयत जानते हैं और बेवकूफ़ी से भरा अक़ीदा यह है कि

हम सिर्फ़ दुनियावी ज़िन्दगी ही की अहमीयत के क़ायल रहें और अगर उसकी किसी चीज़ से ख़तरा मालूम हो तो उसको दूर करें बल्कि उसे मिटा दें लेकिन अगर कोई चीज़ इन्सानों की इन्सानी ज़िन्दगी या उनकी हमेशा की नेकी में आड़े आये तो उससे लड़ना जुल्म है। जबकि जिस तरह इन्सानों और दूसरे जानदारों की निजी और हैवानी ज़िन्दगी को नुक़सान पहुँचाना जुल्म है इसी तरह उनकी इन्सानी और हमेशा की ज़िन्दगी को नुक़सान पहुँचाना भी जुल्म और ख़यानत है बल्कि यह जुल्म तो इन्सानो और जानवरो की आम ज़िन्दगी को नुक़सान पहुँचाने से भी ज़्यादा सख़्त है जी हाँ दीन को बचाने के लिए जिहाद करना सिर्फ़ एक इन्सानी क़ायदे का और अच्छा काम ही नही है बल्कि यह तो वाजिब काम है कि अगर उसकी रूह मर जाय तो उसका मतलब यह हुआ कि उसमे इन्सानीत की रुह भी मर चुकी है और वह हमेशा बाक़ी रहने वाली नेकी से बहुत दूर है।

वास्तव मे जिहाद की भावना का न होना हर तरह के जुल्म, ज़ियादती की ताईद है जो रुहे इन्सानी से किसी तरह मेल नही खाती इसीलिए रसूले अकरम (स.अ.) जो रहमत के पैग़म्बर और क़ुरान के नाते सारे आलम के लिए रहमत है उन्होने उसके लिए फ़रमाया कि जिसमे जिहाद की भावना नही पायी जाती ''जो भी इस तरह मरे कि न उसने किसी जंग में शिरकत कि है न जंग की चिन्ता हो तो वह निफ़ाक़ की किसी एक डाल पर मरता है।

दूसरे लफ़्ज़ों मे इस तरह का इन्सान सच्चा मोमिन ही नहीं है क्यूँकि जिहाद ही है जिससे दीन समाज और लोगो के अमन चैन की हिफ़ाज़त की जा सकती है और जिसको लोगो के अमन चैन या

उनकी दुनिया व आख़रत की नेकियों की चिंता न हो वह न सही इन्सान है न सच्चा मोमिन है इसीलिए हमारा मानना है कि अज़ादारी जो इमाामे हुसैन (अ.स.) के दुशमन ख़ासकर इमामे ज़माना(अ.स.) के दुशमनो से बदला लेने की रुह है और रसूले ख़ुदा (स.अ.) के फ़रमाने के मुताबिक़ जिहाद की चिन्ता न रखने वाला सिर्फ़ सच्चा और पक्का अज़ादार नही हो सकता बल्कि वह तो मुनाफ़िक़ो का एक हिस्सा है।

इमामे हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेने वाले से हक़ीक़ी अज़ादार का नाता

जब अज़ादार को इस सच्चाई का पता चल गया कि इमामे हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला आपके हक़ीक़ी बदला लेने वाले के ज़हूर के बग़ैर नही लिया जा सकता तो मुसीबते अज़ीम की वजह से जो जानकारी और दुख उसके दिल मे पैदा हो जाते है वह उसे पूरी तरह इमामे ज़माना(अ.स.) की तरफ़ झुका देते हैं और मौहब्बत व जानकारी यह दोनो बातें अज़ादार को हमेशा इमामे ज़माना(अ.स.) की याद दिलाती रहती हैं और यह हमेशा का नाता उस अज़ादार को इस बात पर उभारता है कि वह इमामे ज़माना(अ.स.) कि अज़मत और उनके बारे में अपनी ज़िम्मेदारियो को जाने और इस जानकारी के बाद उसको और बढ़ावा दे तो अज़ादार उस बड़े और अहम दर्जे पर पहुँच सकता है कि जिस तक एक इन्सान का पहुँचना मुमकिन है और उस बड़े दर्जे का नाम है (इन्तेज़ार)।

इस दर्जे मे इमामे ज़माना(अ.स.) से मौहब्बत और उनकी खिदमत की भावना उस अज़ादार को अपने घेरे मे ले लेती है कि जो

अब मुन्तज़िर कहा जा सकता है कि फिर इमाम से नाता रखने और उनको ख़ुश रखने ''जो कि ख़ुदा को ख़ुश करना है'' इसके सिवा उसके जीने का और कोई मक़सद नहीं होता और वह इस सच्चाई को जान लेता है कि दुनिया कि सारी परेशानियां चाहे मुसीबतें हों या ज़ुल्म, ना इन्साफ़ी हो या लूटमार और झगड़ा जिस से समाज परेशान है यह सिर्फ़ इमामे मासूम कि ग़ैबत कि वजह से है। उसे अपनी ज़ात और दुनिया के सभी इन्सानो से जो मौहब्बत है ख़ासकर इमामे ज़माना(अ.स.) से जो मौहब्बत और लगाव है और इमाम के लिए अपनी ख़ास ज़िम्मेदारियों का एहसास है इस वजह से जिहाद के दर्जे मे शामिल हो जाता है।

अब उसका यह नेक काम और जिहाद एक अच्छे मक़सद के साथ है क्यूँकि वह इस सही नतीजे पर पहुँच चुका है कि इबादत या कोई भी ख़िदमत बग़ैर इस्लामी मक़सद के काफ़ी नही है बल्कि हर वह इबादत या ख़िदमत जिसे इस्लाम के लिए किया जाय उन सबका एक नेक मक़सद होना ज़रूरी है और वह मक़सद है ख़ुदा के ख़लीफा की तरफ़ बढ़ना और उनसे मज़बूती के साथ जुड़ना तो फिर वह नेक कामों या एक तरह कि इस्लामी ख़िदमत ही को काफी नही समझता हैं बल्कि वह जो भी नेक काम करता है या इस्लाम और मुसलमानो की ख़िदमत करता है तो उसमे एक ख़ास रुह और ख़ास मक़सद यानि ''रुहे इन्तेज़ार'' और ''उस इन्तेज़ार में ख़िदमते इस्लाम है''।

इस तरह उसकी हर एक सियासी, समाजी, इबादती, रुहानी और इल्मी कारकरदगी का सिर्फ़ एक मक़सद हो जाता है जो हर हक़ीक़ी अज़ादार और इन्तेज़ारे इमाम करने वाले का होना चाहिये कि

वह इमाम के और उनकी दुनिया पर हुकूमत की कोशिश करता रहता है और जिस काम का मक़सद यह ना हो वह उसके, समाज के, ख़ुदा के मासूमीन और इस्लामो मुसलमान के लिए ख़यानत है क्यूँकि ख़ुदा व रसूल का दम भरना और रूहे इस्लाम व मक़सदे दीन के बग़ैर कुछ ज़ाहिरी इबादतो और मज़हबी कामो मे मशगूल रहना और ख़ुदा की हुज्जत और ख़लीफा से लगाव न रखना शैतान से धोका खाना और नुक़सान उठाने के सिवा कुछ नहीं है वह इस्लाम की जिसमे ख़ुदा की हुज्जत के बारे मे उन ज़िम्मेदारियों को छोड़ दिया जाय कि जो हमारे लिए बेहद ज़रूरी है तो यह सच्चा इस्लामे मौहम्मदी नहीं है बल्कि इस इस्लाम का नाता अमरीका और शैतान के जाल और धोके बाज़ी से है ज़ालिमो और शैतानो की हुकूमत में रहने वाले इस्लाम का नतीजा यह हुआ कि लौग सैकडो साल से अपने इमामे ज़माना (अ.स.) से बे ख़बर हैं और उन्होने उनको मज़लूमियत, परेशानी, दुख में अकेला छोड़ रखा है।

ज़ुहूर हमेशा के लिए मुसीबते आज़म का ख़ातमा और दुनिया पर मासूम की हुकूमत

इमामे ज़माना (अ.स.) जो कि तेरह मासूमीन बल्कि सारे नबी और ख़ुदा के वलियों की मज़लूमियत के वारिस हैं वही उन सारे ज़ुल्मों को ख़त्म करेंगे जो आपके बुज़ुर्गों आपकी दादी और दुनिया के बहुत से लोगों पर ढाये गयें हैं जैसा कि आपके ''जद'' दादा इमाम जाफ़रे सादिक(अ.स.) का फ़रमान है। ''ख़ुदा मेरी औलाद से एक बेटा ऐसा बनाएगा जो हम एहलेबैत के ख़ून का बदला लेगा'' उनके आने

से हर तरह की मज़लूमियत, भटकना, जिहालत और ग़मों गुस्से की जगह अदालत, हिदायत और ख़ुशी ही ख़ुशी होगी।

इमामे ज़माना(अ.स.) के ज़हूर के बाद ख़ुदा के दुश्मन मिट जायेंगे और दुनिया पर ख़ुदा के दीन और मासूम रहबर की हुकूमत और रहबरी का सिलसिला शुरू हो जायेगा।

अल्लामा तबातबाई ने इस बारे में फ़रमाया कि –''रजअत'' इमाम के ज़माना के बारे में रिवायतों में है कि दुनिया की उम्र एक लाख साल होगी जिसमें से अस्सी हज़ार साल आले मौहम्मद की हुकूमत होगी और बीस हज़ार साल दूसरों की।''

कुरान इस बारे में यह बशारत देता है कि ''और हमारा इरादा यह है कि ज़मीन में जो लोग जुल्म की वजह से कमज़ोर हो गये हैं उनपर एहसान करें और उन्हीं को रहबर और ज़मीन का वारिस बनाऐं।''

क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि हम एहलेबैत के सच्चे चाहने वाले और सच्चे अज़ादार हैं जबकि हम आले मौहम्मद की हुकूमत के लिए कोई दौड़ धूप नहीं करते हैं और इसी तरह मुसीबते आज़म पर राज़ी हैं।

मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) पर राज़ी रहना भी गुनाह है

ऊपर यह लिखा जा चुका कि दीने ख़ुदा जो ख़ुदा को एक बताता है वही हमारी ज़िन्दगी का राज़ है जिसके बग़ैर हम एक लाश के बराबर हैं और मासूम इमाम और रहबर जिनको ख़ुदा ने दीन लागू करने के लिए भेजा है वह ही दीन के बाक़ी रहने के ज़िम्मेदार हैं। इमाम के बग़ैर कोई दीन नही और दीन के बग़ैर कोई ज़िन्दगी नहीं।

ज़ियारते वारेसा में उन लोगो पर लानत की गई है कि जो इमामे हुसैन (अ.स.) की मुसीबते अज़ीम पर राज़ी रहें तो फिर मुसीबते आज़म पर राज़ी रहना तो और भी बड़ा गुनाह और जुर्म है और जो लोग इमाम मासूम के न होने की वजह से ग़ैर मासूम की हुकूमत और नूरे ख़ुदा से अपने को दूर होने पर ख़ुश और राज़ी हों और ग़ैर मासूम की ताईद करते हों और ख़ुदा के दीन के सिवा किसी और दीन से ख़ुश रहते हो वह बहुत बड़े मलून और नफ़रत के हक़दार हैं।

लिहाज़ा मुसीबते आज़म ''सबसे बड़ी मुसीबत'' पर राज़ी रहना बहुत बड़ा गुनाह है और जो भी मासूम के न होने और समाज पर हुकूमत न करने के साथ लोगों के नूरे हिदायत से महरूम होने पर राज़ी हों और ग़ैर मासूम की हिमायत करते हों, ख़ुदा के दीन के सिवा किसी दूसरे दीन को अच्छा समझते हों तो वह भी बहुत बड़े मलून हैं।

हक़ीक़ी अज़ादार को अपनी जानकारी की वजह से पता रहता है कि जब तक सच्चा इन्तेज़ार करने वाला सहीं ढंग से इमाम का इन्तेज़ार ना करेगा तब तक वह सच्चा अज़ादार और इमामे हुसैन (अ. स.) के ख़ून का बदला लेने वाला नही बन सकता। बल्कि इससे बढ़कर यह भी हो सकता है कि अगर वह इमाम के ज़हूर और उसमें आने वाली रूकावटो को दूर न करें तो वह इमाम पर जुल्म करने वालों में शामिल रहेगा क्यूँकि इमामे ज़माना को अकेला छोड़ना इमाम हुसैन(अ.स.) को कूफ़े वालों की तरह अकेला छोड़ने के बराबर हैं।

इमामे ज़माना(अ.स.) के लिए बेचैन और दुखी न होना खुला हुआ जुल्म और बेवफ़ाई है जिसकी इमाम को शिकायत और तकलीफ़

है यही वजह है कि आप आज तक पर्दे में हैं और इमाम हुसैन(अ.स.) व दूसरे मासूमीन के ख़ून का बदला लेने में देरी हो रही है।

जैसा कि ऊपर गुज़रा कि इमामे ज़माना (अ.स.) ने लगभग एक हज़ार साल पहले शेख़मुफ़ीद(अ.र) को एक ख़त में लिखा था कि मैं अपने शियों की दो कमियों की वजह से जल्दी जुहूर नहीं कर सकता 1. उनकी बेवफ़ाई 2. जुहूर की रूकावटों को हटाने के लिए कोशिश न करना।

इसीलिए ऐसे शिया कि जिन्होंने अपने ज़माने के इमाम के लिए अपनी ज़िम्मेदारियों में कमी को तो वह भी उन लोगों में शामिल हैं जिन्होंने आपको तकलीफ़ पहुँचाई है और इमाम ने ख़ुद इस तरह के लोगों की शिकायत बयान की है।

''बेशक बेवकूफ़ और जाहिल शियों का दीन मच्छर के पर के बराबर भी अहमीयत नहीं रखता बल्कि उससे भी हमें तकलीफ़ पहुंचती है।'' अज़ादारे हक़ीक़ी कभी भी यह नहीं चाहेगा कि उसे इमामे ज़माना(अ.स.) को परेशान करने वाला कहा जाये और उन लोगों में गिना जाये जो इमाम के जुहूर में रूकावटें डालते हैं आपकी अज़मत को पहचानने और उनके बारे में जो हमारी ज़िम्मेदारियां हैं उनमें कमी करने की वजह ही है कि हम कभी भी आपके जुहूर की तमन्ना नहीं करते और न ही आपके दुश्मनों और जुहूर की रूकावटों को ख़त्म करने की कोशिश करते हैं एक तरह से हम भी उनके साथ शरीक हो जाते हैं कि जिन्होंने इमाम को ख़ुदा के दिए हुए ओहदे से अलग कर दिया है। ख़ुदा न खास्ता उसकी लानत के हक़दार भी हो सकते हैं हाँ हाँ अगर हम यह न चाहें कि इमाम का जुहूर हो और उनके जुहूर

के लिए कोशिश भी न करें तो मलून हैं अगर ज़ुहूर में थोड़ी सी देरी भी चाहें और आपके बदले किसी और की हुकूमत को पसन्द करें चाहे एक सिकिन्ड के लिए क्यूँ न हो तो ख़ुदा और ज़ियारते आशूरा में लानत करने वाले सभी लोगों की लानत के हक़दार होंगे क्यूँकि हमने अपने ज़माने के इमाम पर सबसे बड़ा ज़ुल्म किया है।

इमामे ज़माना (अ.स.) के लिए सच्चे अज़ादार की ज़िम्मेदारियां

सच्चा अज़ादार अच्छी तरह जानता है कि एहलेबैत के लिए अज़ादारी और सोगवारी उनके बारे में हमारी बड़ी बड़ी ज़िम्मेदारियों में से एक छोटी सी ज़िम्मेदारी है और बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि हम करबला में दिये गये सबक़ को अच्छी तरह समझें और उस पर पाबन्द रहें। अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना उस सबक़ में से है जो एक सच्चे अज़ादार ने आशूरा से सीखा है वह अपने आपको इमामे ज़माना (अ.स.) के बारे में ज़िम्मेदार और जवाब दे जानता है। जिस तरह कुराने मजीद में है कि हर किसी को उसके इमामे ज़माना(अ.स.) के साथ बुलाया जायेगा।

सच्चा अज़ादार अच्छी तरह जानता है कि वह अकेला भी ख़ुदा के सामने इमामे ज़माना (अ.स.) के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियों के लिए जवाबदे है। इसीलिए वह अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में किसी का इन्तेज़ार नही देखता वह किसी अन्जुमन, मस्जिद, इमामबारगाह या आलिमों का इन्तेज़ार भी नहीं करता। वह अकेला ही इमामे ज़माना (अ.स.) को ग़ैबत, अकेलापन और बेचैनी से निकालने के

लिए कोशिश करता है वह करबला के शहीदों की तरह कोशिश करता है कि जिन्होंने अपने कम होने पर ध्यान नहीं दिया बल्कि इमाम के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को हर एक अलग अलग पूरा कर रहा था यानी उसे दूसरों की ताईद और नतीजे की कोई ज़रूरत नहीं थी जेसे अब्दुल्ला इब्ने हसन जिन्होंने देखा कि चचा बिल्कुल अकेले रह गये हैं और ज़मीन पर इस तरह जख़्मी पड़े हैं कि दुश्मनों ने चारों ओर से आपको घेर रखा है तो वह जल्दी से अपने चचा के पास पहुँचे और जब अबज़र इब्ने काब मलून ने इमाम को शहीद करने के लिए तलवार चलाई तो उन्होंने अपने दोनों हाथो से तलवार को पकड़ लिया ताकि चचा बच जायें जिससे उनके दोनों हाथ कट गये और वह इमाम की गोद में गिर गये यहां तक कि हुरमला ने तीर मार कर उनको शहीद कर दिया।

सच्चा अज़ादार या ''सच्चा इन्तेज़ार करने वाला'' इस मरतबे में अच्छी तरह जानता है कि अगर वह ख़ुदा को ख़ुश रखना चाहता है और अपने पैदा होने के मक़सद की सबसे बड़ी कामयाबी चाहता है तो फिर वह ख़ुदा की सिर्फ़ इस नसीहत पर चले कि जिसे वह कुरान में इस तरह फ़रमाता है–''ए रसूल (स.अ.) आप बता दीजिए कि मैं तुमको सिर्फ़ एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम ख़ुदा के लिए एक–एक दो–दो करके उठो।''

ख़ुमैनी साहब ने ख़ुदा की इस नसीहत के बारे में यह फ़रमाया है कि–''ख़ुदा इस आयत में अन्धेरी दुनिया की शुरूआत से लेकर इन्सानियत के सफ़र की आख़री हद तक को बयान करता है और यह ऐसी नसीहत है कि जिसे ख़ुदा ने सारी नसीहतों में से चुना है और

इसी एक बात की इन्सानों को राय दी और यह बात दुनिया व आख़रत के सुधार का एक रास्ता है। ख़ुदा के लिए उठ खड़े होना ही है कि जिसने जनाबे इब्राहीम को (ख़ुल्लत) ख़ुदा दोस्ती तक पहुंचाया और दुनिया के दूसरे जलवों से आज़ाद कर दिया। जनाबे इब्राहीम की तरह इल्मों यक़ीन हासिल करो और कहो कि मैं डूबने वालों से मौहब्बत नहीं रखता हूँ।

वह ख़ुदा के लिए ही तो उठना है कि जिसने जनाबे मूसा को एक असा के ज़रिये फ़िरऔनियों पर हावी कर दिया था और उनके ताज और तख़्त को ख़त्म कर दिया था और उनको महबूब की हद तक पहुँचा दिया। ख़ुदा के लिए उठना ही है जिसने आख़री नबी को जाहिलीयत की सारी आदतों रस्मों और अक़ीदों पर हावी बनाया, बुतों को ख़ुदा के घर से निकाल कर उसकी जगह तौहीद और तक़वा को रख दिया फिर आपको क़ाबा क़ौसैन ओ अदना की मंज़िल तक पहुँचा दिया।

निजी फ़ायदों को चाहना और ख़ुदा के लिए उठ खड़े होने को छोड़ना ही हमें इस अन्धेरे और परेशानियों में घिरने की वजह बना है। जिससे पूरी दुनिया हम पर हावी है और इस्लामी हुकूमतों पर दूसरों का क़ब्ज़ा है ख़ुदा की नसीहत को पढ़ो और उसने जो एक रास्ता तुम्हारे सामने रखा है उसे मानों और निजी फ़ायदों को छोड़ो ताकि दोजहान की नेकियों को पा सको और उसकी कामयाबी तक पहुँच सको।

जी हाँ यह हमारे निजी फ़ायदे और ख़ुदा के लिए खड़े न होना ही है जिसकी वजह से हम इमामे ज़माना (अ.स.) की ग़ैबत के

ज़माने से गुज़र रहे हैं और ख़ुद इमाम को भी अकेले अपने वतन से दूरी का सामना करना पड़ रहा है और ज़ालिम लोग इस्लामी मुल्कों पर राज कर रहे हैं। जैसा कि ख़ुद इमाम ने फ़रमाया कि अगर हमारे शिया हमारे वफ़ादार और एक साथ होते तो हमारे ज़हूर में देरी न होती।

इसके लिए सिर्फ़ एक वही रास्ता है जो ख़ुमैनी साहब ने बताया कि ख़ुदा की नसीहत को पढ़ें और उसने सुधार का जो सिर्फ़ एक रास्ता बताया है उसपर चलें निजी फ़ायदों को छोड़कर इमाम हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेने वाले (इमामे ज़माना) से नाता जोड़े और उनके ज़ुहूर में रूकावटों को दूर करके अपनी वफ़ादारी को साबित करें और उनके दुश्मनों से जिहाद के लिए ख़ुदा की ख़ुशी में उठ खड़े हों और दुनियादारी से बाहर निकलें अपने निजी फ़ायदों और दुनिया यानी सड़ी हुई लाश को छोड़कर आपके ज़हूर के लिए बाक़ायदा काम शुरू करें।

ख़ुमैनी साहब ने दूसरी जगह यह फ़रमाया है कि –''ख़ुदा फ़रमाता है ऐ रसूल उनसे कह दीजिए कि मैं तुमको एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम एक–एक दो–दो करके उठ खड़े हुओ।'' यह मत कहो कि हम अकेले हैं अकेले भी उठ खड़े होना ज़रुरी है और एक साथ मिलकर भी। मिलजुलकर भी उठ खड़े होना जरूरी है हम सबकी ज़िम्मेदारी है कि ख़ुदा के लिए उठ खड़े हों।''

इसी तरह फ़रमातें है –''ख़ुदा की नसीहत को याद दिलाता हूँ (ख़ुदा के लिए एक–एक दो–दो करके उठ खड़े हो और अकेले होने या सफ़र करने से न घबराओ) ज़ियारते आशूरा में जहां एहलेबैत पर

जुल्म की बुनियाद रखने वालों और उन नूरानी लोगों को उनके ओहदे से अलग करने वालों और उनके लिए जुल्म में मदद करने वालों से दूरी और लानत की गई है वहीं उनके रास्ते पर चलने वालों और उनके दोस्तों से भी दूरी व लानत का ऐलान किया गया है यानी वह सब लोग जो इमामे ज़माना (अ.स.) की ग़ैबत जैसी मुसीबते आज़म के लिए मदद करने वाले साबित हुए और उनके काम किसी तरह भी दुनिया को निजात दिलाने वाले के आने में किसी भी तरह रूकावट साबित हुए।

इसीलिए हम इसके फ़ौरन बाद इमाम हुसैन (अ.स.) से यह कहते हैं ''या इमामे हुसैन (अ.स.) उन लोगों से मेरी क़यामत तक सुलह रहेगी जिनकी आपसे सुलह है और उनसे जंग रहेगी जिनकी आपसे जंग है''। इसी तरह इमामे हुसैन (अ.स.) के सच्चे अज़ादार की दोस्ती व दुश्मनी का मेयार बिल्कुल रौशन है यानी जो लोग एहलेबैत के चाहने वाले हैं उनसे उसकी दोस्ती है और जो लोग एहलेबैत ख़ासकर इमामे ज़माना(अ.स.) के दुश्मन हैं उनसे उसकी जंग है। और यह दोस्ती व दुश्मनी क़यामत तक के लिए है अगर इमामे ज़माना (अ. स.) के दुश्मन क़यामत तक आपकी दुश्मनी पर बाक़ी रहेंगे तो सच्चा अज़ादार उनके ख़िलाफ़ जंग व जिहाद से नही उक्ताएगा। इसीलिए हम एहलेबैत के दुश्मनों से जंग का ऐलान करने के बाद सबसे पहले उनपर जुल्म की शुरूआत करने वालों पर लानत करते हैं और फिर इमामे ज़माना(अ.स.) के बग़ैर दुश्मनाने एहलेबैत से मुक़ाबले का कोई फ़ायदा नहीं है और आपके बग़ैर उनसे बदला लिया ही नहीं जा सकता इसलिए जंगो जिहाद की भावना सच्चे अज़ादार की ज़िन्दगी

से अलग नहीं हो सकती वह उस वक़्त तक आराम और चैन से नहीं बैठ सकता जब तक कि इमामे ज़माना (अ.स.) की मुसीबते आज़म उसकी निगाहों में है और वह भी उनकी बेहद मज़लूमियत और अकेलेपन के साथ। वह इमाम के ज़ुहूर तक इस मुसीबते आज़म को दूर करने के लिए अपने ज़माने के दज्जालों और दूसरी रूकावटों से मुक़ाबला करता रहेगा और ज़ुहूर के बाद भी इमाम के साथ इमामे हुसैन (अ.स.) और सारे मासूमीन के ख़ून का बदला लेने के लिए जिहाद करता रहेगा और इस जंगो जिहाद के बाक़ी रहने का राज़ यह है कि कुराने करीम ने सारे मुसलमानों को हुक्म दिया है कि पूरी दुनिया से फ़साद के ख़त्म होने और ख़ुदाई हुकूमत के लागू होने तक अपने पाकीज़ा जिहाद को जारी रखो। और तुम लोग उन काफ़िरों से जिहाद करो यहाँ तक कि फ़ित्ना ''फ़साद'' मिट न जाये और सारा दीन सिर्फ़ ख़ुदा के लिए रह जाये।

इन्सानी समाज के लिए इमामे ज़माना (अ.स.) की ग़ैबत से बड़ी मुसीबत और उससे बड़ा फ़ित्ना ''फ़साद'' और क्या होगा कि पूरी दुनिया मासूम और ख़ुदा के रहबर की ज़ाहिरी बरकतों और फ़ायदों से मायूस है।

सच्चा अज़ादार ऐसे एहसास वाले वक़्त में जब जिहाद जैसी ख़ुदाई ज़िम्मेदारी को ज़रूरी समझता है तो उसके लिए एक सिकिन्ड की भी देरी नहीं करता और सबसे बड़े फित्ने को ख़त्म करने के लिए और अपने इमाम तक पहुँचने के लिए और उनके साथ जिहाद करने के लिए कोशिश शुरू कर देता है।

वह अच्छी तरह जानता है कि इमामे ज़माना (अ.स.) से क़रीब होने के लिए यही वक़्त सबसे अच्छा है न कि ज़ुहूर के बाद, क्यूँकि वह तो आपकी पैरवी और साथ देने का वक़्त होगा। जैसा कि कुरान करीम में है –''और तुम में से मक्के की जीत से पहले ख़ुदा के लिए ख़र्च करने और जिहाद करने वाले जैसा वह नहीं हो सकता है जो जीतने के बाद ख़ुदा के लिए ख़र्च करे और जिहाद करे पहले जिहाद करने वाले का दर्जा बहुत बल्कि बहुत ज़्यादा है चाहे ख़ुदा ने सबसे नेकी का वादा किया है और वह तुम्हारे सारे कामों की जानकारी रखता है।'' ज़हूर से पहले ज़हूर की रूकावटों को दूर करने के लिए उठ खड़े होना और जिहाद करना उससे कहीं ज़्यादा बेहतर है कि जो इमाम के साथ रहकर जिहाद किया जायेगा इसीलिए कुरान ने कामयाबी से पहले इमाम का साथ देने को ज़्यादा अहमीयत दी है।

पाँचवे मरतबे में अज़ादार के लिए सबसे बड़ा गुनाह यह है कि वह अपने इमामें ज़माना (अ.स.) को अकेला छोड़ दे। इस मरतबे में अज़ादार करबला के सबक़ और बातों को अच्छी तरह जानता है इसीलिए वह अपने ज़माने के इमाम से वफ़ादारी और उनकी तरफ़ तवज्जो रखने के लिए ख़ास तैय्यारी करता है उसने अपने इमाम से वफ़ादारी का सबक़ करबला वालों से अच्छी तरह सीखा है। वफ़ादारी यानी हमने जो वादा किया है उसे पूरा करें इमामे मासूम के वादे को पूरा करना सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है और उसे तोड़ना सबसे बड़ा गुनाह। कुराने करीम और हदीसों में वादे को पूरा करने और वादा ख़िलाफ़ी से दूर रहने को बड़ी सख़्ती से कहा गया है।

इमामे हुसैन (अ.स.)ने आशूर के दिन अपने दोस्तों और दुश्मनों यानी दोनो के लिए फ़रमाया था जिसमें वफ़ादारी की वजह से अपने चाहने वालों की तारीफ़ और बेवफ़ाई की वजह से अपने दुश्मनों को बुरा कहा है अपने चाहने वालों के लिए फ़रमाया ''मैं अपने साथियों से ज़्यादा वफ़ादार और बेहतर साथी किसी के भी नहीं जानता।''

जब आप आशूर के दिन जनाबे मुस्लिम इब्ने औसजा के सरहाने पहुँचे तो आपने इस आयत की तिलावत फ़रमाई ''मौमेनीन में ऐसे भी मर्दे मैदान है जिन्होंने ख़ुदा से किये वादे को सच कर दिखाया है उनमें से कुछ अपना वक़्त पूर कर चुके हैं और कुछ अपने वक़्त का इन्तेज़ार कर रहे हैं और उन लोगों ने अपनी बात में कोई फेर बदल पैद नहीं किया है।''

और दुश्मनों के लिए भी इस तरह फ़रमाया ''तुम वादा पूरा न करने वाले बेवफ़ा लोगों ने मेरी बैअत को तोड़ डाला मेरी जान की क़सम इसी तरह तुमने मेरे बाबा, भाई और चचा के बेटे मुस्लिम इब्ने अक़ील के साथ भी किया है।''

हम ज़ियारते अरबईन में आपसे इस तरह कहते हैं ''मैं गवाही देता हूँ कि आपने ख़ुदा के वादे को पूरा कर दिया और यक़ीन (व शहादत) के लिए उसकी राह में जिहाद किया।''

इन्तेज़ार करने वाले और सच्चे अज़ादार की सबसे बड़ी तमन्ना

एक अज़ादार में बदला लेने की जो रूह पाई जाती है बल्कि जंगो जिहाद की ज़बरदस्त तमन्ना, वह उसकी सही जानकारी और ख़ास मौहब्बत की वजह है।

जनकारी का मतलब है कि उसे पता हो कि कहाँ से आया है, कहाँ है, कहाँ जायेगा और उसका एहलेबैत से क्या नाता है? एहलेबैत की फ़ज़ीलत का सही ढंग से जानना, इन्सानियत की अहमीयत, इन्सानी ज़िन्दगी इसी तरह एहलेबैत से मौहब्बत इन सब बातों की वजह से अज़ादार ख़ुदा से चाहता है कि उसे इमामे ज़माना(अ.स.) के साथ इमामे हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेना नसीब हो। लेकिन सिर्फ़ यह चाहना और तमन्ना करना ही इन्तेज़ार करने वाले और सच्चे अज़ादार का काम नहीं है बल्कि उसकी सबसे बड़ी तमन्ना यह है कि ख़ुदा उसे दुनिया और आख़रत दोनों जगह मौहम्मदो आले मौहम्मद के साथ रखे और एक पल के लिए भी उनसे अलग न करे।

इस मरतबे में उसकी दुआ यह होती है –''मैं सवाल करता हूँ उस ख़ुदा से जिसने मुझे आपकी और आपके दोस्तों की पहचान की वजह से इज़्ज़त दी और मुझे आपके दुश्मनों से दूरी की तौफ़ीक़ दी और यह कि वह मुझे दुनिया और आख़रत में आपके साथ रखे।''

इसीलिए वह चीज़ जो इन्सान को यहाँ तक पहुँचाती है कि इस तरह की तमन्ना और कोशिश पैदा होती है वह सिर्फ़ एहलेबैत और उनके साथियों से दोस्ती और उनके दुश्मनों से दुश्मनी व दूरी रखना है।

दुनिया व आख़रत में इमामे ज़माना (अ.स.) से किस तरह क़रीब रह सकते हैं

हम बता चुके हैं कि एक सच्चा अज़ादार और इन्तेज़ार करने वाला अगर अपनी सबसे बड़ी तमन्ना जो कि दुनिया व आख़रत में

मौहम्मदो आले मौहम्मद के साथ रहना है उसे पूरा करना चाहता है तो अपने अन्दर कुछ बातें पैदा करे जो इस तरह हैं :–

– मौहम्मदो आले मौहम्मद और उनके साथियों की पहचान (जानकारी)

– उनसे और उनके दोस्तों से मौहब्बत व दोस्ती

– उनके दुश्मनों से दुश्मनी व दूरी

पहली शर्त में इस पर ध्यान रहे कि पहचान (जानकारी) ऐसी हो जो इन्सान के दिल दिमाग (सोच) से जुड़ी होती है।

दूसरी दो शर्तों यानी मौहब्बत और दुश्मनों में जितना इन्सान के दिल में आ सके करे।

जबकि इसके कुबूल होने के लिए भी यह शर्त है कि इन बातों को इस तरह किया जाए कि जिनका सबको पता चले इसी बात को तो पहले भी कहा जा चुका है कि मौहब्बत उसे कहा जाता है जो छिपी न रहे बल्कि उसके आओ भाव से पता चले। इसी तरह उनके दुश्मनों से दुश्मनी और दूरी भी है कि जो ज़िन्दगी के कामों से मालूम हो और उसका सबको अंदाज़ा हो। अब यहां पर एक ज़रूरी और ख़ास सवाल यह है कि मौहब्बत व दुश्मनी रखने और उसको ज़ाहिर करने का मेयार क्या है? क्या यही काफ़ी है कि इमामे हुसैन (अ.स.) की मुसीबतों पर रोयें और बड़ी बड़ी मजलिसें करें या उनके दुश्मनों पर लानत करें। इसका जवाब इमामे ज़माना (अ.स) से ही लेना सबसे अच्छा होगा आपने ज़ियारते आले यासीन में फ़रमाया है 'जब भी तुम चाहो कि हमारे पास आओ और ख़ुदा व हमारी तरफ़ ध्यान दो, तो

इस तरह कहो मेरी मदद आपके लिए तैय्यार है और आपके लिए मौहब्बत भी सच्ची व पाक साफ़ है।''

इसीलिए इमामे ज़माना (अ.स.) की नज़र में एक सच्चे शिया और इन्तेज़ार करने वाले को उनकी ज़ियारत या मुलाक़ात के लिए जानकारी के अलावा दो बातों पर ध्यान रखना चाहिए – 1. पूरी तरह मदद के लिए तैयार 2. सच्ची मौहब्बत पूरी तरह तैयारी यानी एक सच्चा इन्तेज़ार देखने वाले में जो बातें होनी चाहिए वह हों कि ख़ुद को हक़ीक़त मे एहलेबैत के लिए वक़्फ़ कर दे सबसे पहले तो उन बातों को ख़त्म करे जो इमामे ज़माना (अ.स.) से लगाव में रुकावट और अड़चन बन रही है फिर जितना भी हो सकता हो उन बातों का मुकाबला करे कि जो इमामे ज़माना (अ.स.) के ज़हूर में रूकावट बनी हुई है।

इमामे ज़माना (अ.स.) का सिपाही उसे कहा जाता है कि जिसमें एक सिपाही की बातें पाई जायें यानी इमाम के हुक्म को सुने और उनके हुक्म पर अपना सर कटाने के लिए तैयार रहे मंगल के दिन की दुआ में हम अपने ख़ुदा से इस तरह सवाल करते हैं ''ए ख़ुदा! मुझे अपनी फ़ौज का सिपाही बना ले क्यूँकि तेरी फ़ौज ही हावी रहने वाली है मुझे अपने गिरोह में रख क्यूँकि तेरा ही गिरोह कामयाब होने वाला है और मुझे अपने दोस्तों में शामिल कर ले क्यूँकि तेरे दोस्तों को कुछ भी दुख और डर न होगा।''

जानना चाहिये कि ख़ुदा का सिपाही और ख़ुदा व इमामे ज़माना का चाहने वाला तैयारी और सच्ची मौहब्बत के बग़ैर नहीं बना जा सकता।

पूरी तरह तैयार रहना यानी जनाबे फ़ातेमा ज़हरा (स.अ.) की तरह अपने ज़माने के इमाम के लिए अकेले ही मदद को तैयार रहना और वह भी इस तरह तैयार रहना कि कोई चीज़ भी मुसीबते अज़ीम या मुसीबते आज़म खड़ी करने वालों और इमामे ज़माना के दुश्मनों से जिहाद करने और शहीद होने से न रोके चाहे औरत होना हो या उसका हामला होना, अकेली होना या बच्चे वाली होना हो। जनाबे फ़ातेमा के सच्चे मानने वाले वही लोग हैं कि जो उनको जो कि सारे शियों की हक़ीक़ी मादर हैं उन्हें अपनी ज़िन्दगी, अपने ज़माने के इमाम से नाता जोड़ने और उनकी हिफ़ाज़त करने में अपना आइडियल बनायें। इमामे ज़माना (अ.स.) की हिफ़ाज़त के लिए अपने जीवन की समस्याओं में सुधार लायें और दुनिया व उसकी रंगीनियों को दिल से निकालें ताकि इमामे ज़माना (अ.स.) के सिपाही बन सकें। काश जनाबे फ़ातेमा की शहादत के दिनों में ही अज़ादार उनके दिये हुए सबक़ और उस उम्मीद पर ध्यान दें कि जो आपको उन अज़ादारों से इमामे ज़माना(अ.स.) के इन्तेज़ार के लिए है।

सच्ची मौहब्बत यानी जो उनकी ख़िदमत के लिए तुम्हे हर क़ैदो बन्द से आज़ाद रखे वह भी ऐसे कि दिल की गहराई और सच्चाई से इमामे ज़माना (अ.स.) और उनके बुज़ुर्गों से इस तरह कह सको ''मेरे माँ बाप, बीवी बच्चे, माल, ख़ानदान सब आप पर कुर्बान हैं''

सच्ची मौहब्ब्त का मतलब यह भी है कि इमाम और उनके पाकीज़ा मिशन को हर चीज़ से अफ़ज़ल रखें और कोई चीज़ भी

उनकी सच्ची ख़िदमत से न रोके और तुम्हारा कोई काम भी दुश्मनों के साथ न हो।

सच्ची मौहब्बत यह भी है कि इमामे ज़माना (अ.स.) की ख़िदमत और उनके ज़हूर की रुकावटें दूर करने में तुम्हें किसी की ताईद या मदद का इन्तेज़ार नहीं होना चाहिए और दूसरों की मदद के बग़ैर अकेले ही मज़लूमियत, सफ़र और परेशानियों को सहते हुए तैय्यार रहना चाहिए चाहे उन लोगों की तरफ़ से झिड़क दिये जाओ कि जिनसे तुमको मदद व मौहब्बत का इन्तेज़ार रहता हो। या वह कि जो इमानदारी और दीनदारी के साथ इमामे ज़माना (अ.स.) से मौहब्बत के बड़े बड़े दावे करते हों फिर भी तुम इमाम के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करो और हर तरह की परेशानी, तोहमत और सख़्तियों को अपनी जान की क़ीमत देकर इस तरह बरदाश्त करो कि न उसका कोई शिकवा हो न शिकायत।

सच्ची मौहब्बत यह भी है कि जो ख़िदमतें उसने की हैं या जो परेशानियाँ उठाईं हैं और चोटें खाईं हैं हरगिज़ उसका किसी से बदला या सिला न ले बल्कि इमाम से भी मुतालबा न करे और किसी से भी घमंडी बनकर न मिले छोटे लोगों से भी मिले तो अच्छे व्यवहार से कि वह भी ख़ुदा के बन्दे हैं और अपने आपको उनसे ज़्यादा अच्छा न समझे कि जो अभी अज़ादारी व ईमान के शुरूआती दर्जों या कामों में हों न उनको हिक़ारत से देखे बल्कि उनको दिल की गहराई से दोस्त रखे क्यूँकि वह अपनी बिसात भर इमामे ज़माना (अ.स.) से मौहब्बत करते हैं और अपनी उसी थोड़ी बहुत अज़ादारी और मौहब्बत से आपके महबूब (इमाम) के नाम और याद को ज़िन्दा रखते हैं।

सच्ची मौहब्बत यह भी है कि इमाम की ख़िदमत और उनके लिए सख़्ती व परेशानी को उठाकर यह न सोचें कि अब तो इमाम हमसे सिर्फ़ हंसी ख़ुशी बातें करें या हमसे राज़ी रहें बल्कि दुनिया व आख़रत में उनके साथ रहने के सिवा और किसी चीज़ की उनसे चाहत न रखें।

क्यूँकि जो ख़िदमत भी की जाये या परेशानी उठायी जाये और अपनी ज़िन्दगी या माल से जो कुछ भी उनके लिए ख़र्च किया जाये वह सब ख़ुदा और इमामे ज़माना (अ.स.) की दी हुई तौफ़ीक़ और एहसान है अगर उनका एहसान न हो तो यह काम कभी भी नहीं किये जा सकते इसीलिए कुछ मांगने चाहने या उम्मीद करने के बजाये शुक्रिया अदा करना चाहिए और एहसान मानना चाहिए और ख़ुदा के बन्दों से घमन्डी होकर मिलने के बदले बड़ी सादगी और छोटा बनकर मिलें अकड़ने और घमन्ड करने जो कि इन बातों के बाद कभी कभी पैदा हो जाता है उनके बदले अपनी कमियों, लापरवाहियों, ख़िदमत में कोताहियों, आराम करने की चाहत और फ़ुरसत के पल व नेमतों को बर्बाद करने की वजह शर्मिन्दा रहना चाहिए।

इसी वजह से अज़ादारी ही वह कामयाब और सच्चा इन्तेज़ार करने वाला बनाती है कि जो शुरू में ही अपने अन्दर सुधार लाने में कामयाब कर देती है क्यूँकि जिसने भी आशूर के पैग़ाम को समझ लिया तो वह अच्छी तरह जान जाता है कि इमामे हुसैन(अ.स.) से वही सबसे ज़्यादा क़रीब है जो इमाम हुसैन(अ.स.) के रास्ते पर चलने की कोशिश करता हो। इसके अलावा अपने को सुधारना खुद एक तरह से इमाम हुसैन(अ.स.) के दुश्मनों से बदला लेना ही है। इन्सानी समाज में

जितने भी ज़्यादा से ज़्यादा लोग इमामे हुसैन (अ.स.) के मिशन पर चलेंगे इतना ही इमामे हुसैन(अ.स.) और इमामे ज़माना (अ.स.) के दुश्मनों को परेशानी, कमज़ोरी और नाकामी होगी और इमामे ज़माना (अ.स.) के ज़हूर का रास्ता साफ़ होगा। फिर उसके बाद यही अज़ादारी इतनी कामयाब और ऐसा इन्तेज़ार करने वाला बना देती है कि जो इमामे ज़माना (अ.स.) के पाकीज़ा मक़सद के लिए फ़ायदा और मज़बूती की वजह बनती है।

सच्चे अज़ादार की ज़िन्दगी से इमामे हुसैन (अ.स.) और उनके ख़ून का बदला लेने वाले (इमाम ज़माना(अ.स.)) के दुश्मनों से नफ़रत का पता चलता है और अज़ादार में दुश्मनों से जितनी ज़्यादा नफ़रत होगी इतना ही वह अपने अन्दर सुधार लायेगा और बदला लेने की भावना को तेज़ करेगा और इमाम के ज़हूर में आने वाली रूकावटों से मुक़ाबला करने में कोशिश करता रहेगा। दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जाये कि एक सच्चा अज़ादार होना उसके कामों से ही साबित होता है।

इमामे ज़माना (अ.स.) के वह दुश्मन कि जिनकी वजह से ज़हूर में रूकावट हो रही है उनसे नफ़रत और दूरी सच्चे अज़ादार के लिए बहुत ज़रूरी है। ख़ुमैनी साहब कि जिनकी नज़र में इमामे ज़माना (अ.स.) और दुनिया पर उनकी हुकूमत क़ायम होने की ओर ध्यान न देना एक बड़ा ख़तरा और ख़्यानत है वह इसी बारे में फ़रमाते हैं।

''जम्हूरिया इस्लामिये ईरान को किसी क़ीमत पर भी दीनी उसूल को नहीं छोड़ना चाहिए इन्शा अल्लाह ईरानी नेक लोग इन्क़ेलाब की भावना को अपने दिलो में रखेंगे और उसके शोलों से अमरीका के ज़ालिमों और उनके पिटठुओं को सबक़ सिखाऐंगे ताकि

ख़ुदा के करम से दीने मौहम्मदी का सर पूरी दुनिया में सबसे ऊँचा हो जाये और नेक व कमज़ोर लोग ज़मीन के वारिस बन जाऐं।''

एक अज़ादार के लिए इमामे ज़माना (अ.स.) के लिए जितनी भी ज़िम्मेदारियां हैं उनको ज़्यादा से ज़्यादा सच्चाई और इमानदारी से पूरा करे तो वह उनसे करीब हो जाएगा क्यूँ कि उसकी अ़ज़ादारी और कमज़ोरी इमाम का बदला लेने से बहुत ज़यादा जुड़ी हुई है वरना इन बातों के सिवा उसकी अज़ादारी कमज़ोरी व तैहीन है यक़ीनन इमामे हुसैन (अ.स.) व इमामे ज़माना (अ.स) अपने अज़ादारो और अपने चाहने वालों के कामो में बहादुरी, मज़बूती और ताक़त को देखकर ख़ुश और उनकी बुज़दिली, कमज़ोरी, ज़िल्लत डर और बे ध्यानी को देखकर दुखी होते हैं सच्चे अज़ादार ने करबला वालों से बहादुरी, दुशमन को चोट पहुचाने और उसके लिए ख़तरनाक बनने का अच्छी तरह सबक सीखा है लिहाज़ा जिस अज़ादार से दुनिया के ज़ालिमो और इमामे ज़माना (अ.स.) के दुशमनो को कोई ख़तरा न हो या जिसमे इमाम के ज़हूर की रूकावटो से जंग करने की ताक़त और उनके दुशमनो को चोट पहुचाने की ताक़त न हो और उसका सिरे से ऐसा कोई मक़सद भी न हो तो उसे इमाम से अपनी मौहब्बत मे शक करना चाहिये इस मरतबे मे सच्चा अज़ादार इस हक़ीक़त को बड़े ध्यान से समझता है कि एहलेबैत से मौहबबत उस वक़्त तक नही हो सकती जब तक कि उनके दुशमनो से दुशमनी और उनको चोट न पहुचाई जाए जी हॉ मौहम्मद व आले मैाहम्मद के साथ रहने के लिए उनकी तरह हर चीज़ को ख़ुदा के लिए छोड़ देना चाहिये बल्कि इस रास्ते मे तो जान दे देना भी बड़ा आसान काम है अपने माल, इज्जत,

शोहरत और ओहदे बल्कि दुनिया की सारी चीज़ो को छोड़ देना चाहिए इसी वजह से सच्चा अज़ादार मौहम्मदो आले मोहम्मद के साथ रहने की विनती के बाद खुदा से फ़ौरन कहता है ''कि मुझे अपने सामने सच्चाई के साथ साबित क़दम रखे दुनिया और आख़रत में'' इन्ही शर्तो से सच्ची मौहबबत हम तक पहुॅची है जिसकी वजह से हम इमामे ज़माना (अ.स.) के क़रीबी, पसन्दीदा और हाज़रीन बनने के क़ाबिल होंगे।

अज़ादार और बदला लेने के कामो में मज़बूती

इमामे ज़माना(अ.स.) से वफ़ादारी करने मे अज़ादार इतना मज़बूत और पक्का है कि अपने आप को हर बला और सख़्ती से निपटने के लिये तैयार रखता है उसने इमामे हुसैन (अ.स.) और उनके साथियो से मुसीबत या शहादत को गले लगाने का सबक़ अच्छी तरह सीख लिया होता है और इमामे हुसैन(अ.स.) के इस फ़रमान को यक़ीन और मिठास के साथ कुबूल करता है जो कि आप ने अपने किसी दोस्त से फ़रमाया था खुदा की क़सम, हमारे चाहने वालो की तरफ़ मुसीबत ,फ़क़ीरी और क़त्ल इतनी तेज़ी से आती है जैसे तेज़ रफ़्तार घोड़ा या अपने सिम्र मे सैलाब, मैने कहा सिम्र क्या है फ़रमाया उसकी आख़री जगह (रूकने की जगह) और अगर ऐसा न हो तो हम कभी भी तुम्हे अपनो मे से नही समझ सकते।

जी हॉ अगर हम इमामे हुसैन(अ.स.) की तरह जिहादो शहादत वाले और दीन के लिए मुसीबतो दुश्मनियों और तकलीफ़ो पर सब्र करने वाले न हों तो इमाम हमें अपनो में से नहीं समझेंगे। क्या हम ख़ुदा से दुनिया व आख़रत मे मौहम्मदो आले मौहम्मद के साथ की

दुआ कर सकते है। जब कि हम अपने अन्दर उनकी कोई नेकी और अच्छी बात पैदा नहीं करते। मौहम्मदो आले मौहम्मद के साथ दुनिया व आख़रत में रहने की कसौटी यह है कि हम ख़ुदा से इश्क़ करें उसके दीन के पाबन्द हो जायें और दीनों एहलेबैत के मिशन के लिए कुर्बान होने को हर वक़्त तैयार रहें। अज़ादार के नज़दीक इमामे ज़माना (अ.स.) की ख़िदमत के लिए हर सख़्ती, परेशानी और दुख को बरदाश्त करना बहुत आसान काम है इसलिए कि सबसे बड़ी परेशानी और दुख तो इमाम का दूर रहना है।

''नाज़ नख़रों में पलने वाले, दोस्ती की सही मंज़िल तक नहीं पहुँच सकते क्यूँकि आशिक़ी तो क़ैद की मुसीबतों को सहने के बराबर है जो भी मेरी माशूका की गली से गुज़रे वह होशियार रहे कि उसकी दीवार सर तोड़ देती है ऐ दिल उसकी जुल्फ़ो मे मत उलझ कि वह ऐसा फन्दा है कि वहा तू बे गुनाह व बे ख़ता सर को कटा हुआ देखेगा'' उसका रास्ता उन लोगो से बिल्कुल अलग है कि जिनकी इमामे हुसैन (अ.स.) ने इस तरह मज़म्मत की है बेशक लोग दुनिया के गुलाम हैं और उनकी ज़बानो पर बे जान व कमज़ोर दीन है और वह भी उस हद तक कि जहां तक दुनिया उनके साथ है और अगर कोई मुसीबत आ जाती है तो दीनदारी कम हो जाती है

अज़ादारी का पांचवा दर्जा

पांचवे दर्जे मे इमामे हुसैन (अ.स.) के लिए अज़ादारी ख़ूने हुसैनी का बदला लेने की भावना और इमामे ज़माना (अ.स.) जो वारिसे ख़ूने हुसैनी हैं उनसे नाता व सम्बन्ध रखे बग़ैर एक जुर्म से कम नही

है इमामे ज़माना (अ.स.) के जुहूर की कोशिश और उनके जुहूर मे आने वाली रूकावटो को दूर करके उनकी ख़िदमत किये बग़ैर एहलेबैत के लिए मजलिसे अज़ा करना एक बहुत बड़ा धोखा, एक बेजा घमन्ड और सारे अइम्माए मासूमीन ख़ासकर इमामे ज़माना(अ.स.) के हक़ में बहुत बड़ा जुल्म और दुनिया के सभी मज़लूम लोगो के हक़ मे ख़यानत है

खुमैनी साहब आले रसूल और इमामे हुसैन(अ.स.) उनके सच्चे जानशीन इमामे ज़माना (अ.स.) को ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब का सबसे बड़ा रहबर और बानी मानते हुए ईरान को इमामे ज़माना (अ.स.) के मुल्क होने का एलान करते है और इमाम के ज़हूर ताकि अपने मुल्क का सुधार और सारी दुनिया पर उनकी सच्ची हुकूमत हो उसके लिए कोशिश न करने वाले ज़िम्मेदारों को बहुत बड़ी ग़लती करने वाला और ख़तरा मोल लेने वाला बताते हुए इस तरह कहते है '' ज़िम्मेदार लोगो को जानना चाहिये कि हमारा इन्क़ेलाब सिर्फ़ ईरान तक ही सीमित नही है ईरानी लोगो का इन्क़ेलाब दुनियाए इस्लाम के उस बड़े इन्क़ेलाब की शुरूआत है जो इमामे ज़माना (अ.स.) के अलम साय में होगा कि ख़ुदा ने जिनके ज़हूर को मुसलमानों और पूरी दुनिया के लिए इसी ज़माने मे रखा है हुकूमत के ज़िममेदारों को अगर दुनियावी या आर्थिक समस्याऐ एक पल के लिए भी अपनी ज़िम्मेदारी जिसके औहदे पर वह है उससे भटकाऐं तो उसके पीछे बहुत बड़ा ख़तरा और नुक़सान व ख़यानत है ईरानी हुकूमत अपनी पूरी ताक़त और कोशिश से लोगो की बेहतर और अच्छी ख़िदमत करे, लेकिन इसके यह माने नही है की उन्हे इन्क़ेलाब के अहम मक़सद जो कि

दुनिया पर इस्लामी हुकूमत की शुरूआत है उस से भटका दें इमामे ज़माना(अ.स.) की तमन्ना व इन्तेज़ार के बग़ैर और उनके दुशमनो व ज़हूर में रूकावटें बनने वालों से जंगो जिहाद किए बिना एक शिया के लिए अज़ादारी अपना मज़ाक उड़ाना या एक बडा झूठ बल्कि एक तरह से मुनाफ़ेक़ाना और दोग़ली चाल है।

हज़रत अली (अ.स.) इमामे ज़माना (अ.स.) के लिए इस तरह फ़रमाते है'' इस दीन के ज़िममेदार (इमामे ज़माना) बे वतन, परेशान और अकेले है '' यह उसी मुसीबते आज़म का हाल है कि दुनिया जिहालत और गुमराही मे डूबी हुई है और एक सच्चे दीन व ख़ुदा के रहबर से दूर है और वह रहबर वतन से दूर परेशान और मज़लूम है। एक सच्चे और दर्द मन्द अज़ादार के दिमाग मे बड़ी हैरत से यह सवाल उठते है कि इमामे ज़माना(अ.स.) किन लोगो की वजह से बे वतन और परेशान है ,और कौन लोग है कि जिनकी वजह से ज़हूर मे देरी हो रही है ,वह जाहिल और बेवकूफ़ शिया कौन हैं कि मच्छर का पर जिनके दीन से ज़्यादा मज़बूत है और इमाम ने उनसे पहुचने वाली तकलीफ़ों और दुखो की शिकायत की है? क्या सिर्फ कूफ़े वाले ही मलून और ख़बीस हैं कि जिन्होने मौला अली व इमामे हुसैन(अ.स.) को अकेला छोड़ दिया था ? क्या इमामे ज़माना (अ.स.) भी ग्यारह सौ पिछत्तर साल से भी ज़्यादा वक़्त से अपने दादा की तरह अकेले ,जिला वतन व परेशान नही हैं? उनके अकेले और मज़लूम होने का दोषी कौन है? ,इमामे ज़माना(अ.स.) इस अकेले और मज़लूम रखने का ज़िम्मेदार किसे ठहराते हैं? ,दुशमनो को या बेवकूफ़ व नादान चाहने वालों को? ऐसे मे एक सच्चा अज़ादार इस नतीजे पर पहुचॅता है कि

इमामे ज़माना(अ.स.) मजलिसे अज़ा से कही ज़्यादा मज़लूम है , यानि वह मजलिसे कि जिनमे इमामे हुसैन और उनकी मज़लूमियत पर रोने के साथ इमामे ज़माना (अ.स.) की मुसीबतो और इस वक़्त के यज़ीदो के जुल्म को भुलाया जा रहा हो वह मजलिसें कि जिनमे अगर कोई इमाम के दुशमन ,दुनिया के ज़ालिमो से जिहाद करने के लिए उभारता है तो उसको सख़्ती से मना कर दिया जाता है कि यह मजलिसे हुसैन(अ.स.) है इसे सियासी मत बनाओ '' वह मजलिसें जिनके बानी और शरीक होने वाले घन्टो इमाम हुसैन (अ.स.) जनाबे ज़ैनब ,अली अकबर अली असग़र और रूक़ैय्या वग़ैरा के बारे मे तो ख़ूब पढ़ते है लेकिन जो इमामे हुसैन(अ.स.) के ख़ून का असली बदला लेने वाले (इमामे ज़माना(अ.स.)) हैं या वह यज़ीदी जो इनके ज़हूर मे रूकावट बने हुए है उनके बारे मे न कुछ पढ़ा जाता है और न कुछ सुना जाता है क्यूँकि उनके बारे में सुनने से जिहाद और जी जान से जंग करने की ज़िम्मेदारी निभानी होगी लेकिन 61 हिजरी के हुसैन के बारे में पढ़ने और सुनने से ऐसी कोई ज़िम्मेदारी नही निभानी होती इन मजलिसों को बरपा करने वाले कुछ ऐसे भी हैं जो लाखो रूपया ख़र्च करते है तर्बरूक वग़ैरा मे 'लेकिन उनका दिल अमरीका से नाता रखने और सबसे बड़े शैतान कि जो इमामे ज़माना (अ.स.) का सबसे बड़ा दुश्मन है ज़हूर मे रूकावट व ज़माने का दजजाल है उसके जाल मे फंसा रहता है यह ज़ाहिरी तौर पर तो हुसैनियत का दम भरते हैं लेकिन उनमे यज़ीदी रूहें मौजें मार रही होती हैं अफ़सोस कि अज़ादारों के बीच ऐसे लोग कम नही कि ख़ास अज़ादारी और मजलिसे ऐहलेबैत के लिए अपना वक़्त और माल ख़र्च करते हैं मगर

वह ऐसे हैं कि जो इमामे ज़माना (अ.स.) के दुश्मनों से मौहब्बत करते हैं और दीनो इस्लाम के मुख़ालिफ़ कलचर के दिलदादा व दिल सुपुर्द करने वालों में से हैं ग़ैरों के कल्चर की तक़लीद और उसको चलन देने वाले है ख़ासकर इन्सानियत के ख़िलाफ़ मग़रबी कल्चर बल्कि दीने मौहम्मदी के ख़िलाफ़ हर ताक़त और कल्चर को राईज करने वाले हैं मौला अली (अ.स.) ऐसे लोगों के लिए फ़रमाते हैं।

जो भी हमारे दुश्मनों को दोस्त बनाएगा वह कभी भी हमारा चाहने वाला नहीं हो सकता क्यूँकि हमारी मौहब्बत और हमारे दुश्मनों से दोस्ती एक साथ एक ही दिल में जमा नहीं हो सकती। (ख़ुदा ने एक इन्सान में दो दिल नहीं बनाये हैं) कि एक दिल से वह कुछ लोगों को दोस्त रखे और दूसरे दिल से उनके दुश्मनों को दोस्त रखे जो भी हमें दोस्त रखता हो वह अपनी दोस्ती को सच्चा और साफ़ सुथरा करे जिस तरह खरा सोना साफ़ सुथरा होता है।

इमामे हुसैन (अ.स.) की अज़ादारी और मजलिसे इमामे ज़माना (अ.स.) के दुश्मनों के कल्चर उनकी सोच और सियासत से मेल नहीं खाती इस जगह अज़ादार के दिमाग़ में एक सवाल घूमता है कि शियों ने इमामे हुसैन(अ.स.) की शहादत के बाद आशूरा से ज़रूरी सबक़ और इबरत क्यूँ नहीं हासिल की और उनके दुश्मनों से बदले की भावना वफ़ादारी के रूप में क्यूँ नहीं रखते यहाँ तक कि उनके बाद के इमाम भी एक एक करके बड़ी मुसीबत और मज़लूमियत से शहीद हुए और आख़री इमाम ग़ैबत के लिए मजबूर हैं। ग़ैबत से लेकर अब तक यह सारी अज़ादारी व सोगवारी इमामे हुसैन (अ.स.) और सारे आइम्मा के ख़ून का बदला लेने वाले (इमाम ज़माना(अ.स.)) के ज़हूर को

आसान क्यूँ नहीं कर पायीं इतनी अज़ादारी और ज़ियारते आशूरा पढ़ने के बाद भी इमामे ज़माना (अ.स.) अभी तक ग़ैबत में क्यूँ परेशान और अकेले हैं और हम उनकी रहबरी के मोहताज हैं क्या अब भी हमें अपनी अज़ादारी और मजलिसों पर ग़ौर नहीं करना चाहिए? ताकि हम अपनी सच्ची वफ़ादारी से उनके ज़हूर को आसान बनाने में मदद कर सकें आख़िर कब तक सन 61 हिजरी के इमाम हुसैन(अ.स.) शहीद की मुसीबत और मज़लूमियत पर रोते रहेंगे और हुसैने ज़माना (अ.स.) की मुसीबत, मज़लूमियत और अकेलेपन को भूले रहेंगे? कब तक सन 61 हिजरी के इमाम हुसैन की आवाज़ हल मिन नासिरिन यनसुरुना पर रोते व सर पटकते रहेंगे और कहेंगे कि ऐ काश मैं भी आपके साथ होता, और हुसैने ज़माना (अ.स.) की आवाज़ हलमिन नासिरिन यनसुरुना पर कोई ध्यान नहीं देंगे? क्या यह एक खोखला नारा या एक बड़ा झूठ और दोग़लापन नहीं है कि इमामे हुसैन (अ.स.) से तो कहा जाये कि अगर मैं आपके साथ होता तो एक बड़ी कामयाबी को पा लेता लेकिन इमामे ज़माना (अ.स.) को अकेला छोड़कर न तो उनकी मदद करें ना ही उनके लिए उन ज़िम्मेदारियों को पूरा करें कि जो हम पर वाजिब हैं?

इस मरतबे में रोना सिर्फ़ मौहब्बत की ही वजह से नहीं होता बल्कि (मारेफ़त) उनकी अज़मत की जानकारी की वजह से भी होता है और इस तरह का रोना शुरू में तो रोने वाले के दिल में मौहब्बत पैदा करता है और फिर उसके रोने के साथ रोने वाले की तौफ़ीक में भी बढ़ोतरी करता है और वह अपने आपको कन्ट्रोल में रखने लगता है इमामे हुसैन (अ.स.) की पैरवी का रास्ता उसके लिए खुल जाता है

और वह उसी पैरवी के सहारे ''मिन्ना अहललबैत'' तक पहुँच जाता है। इसी वजह से इमामे हुसैन(अ.स.) ने फ़रमाया ''मैं आँसुओं से शहीद किया गया हूँ'' लिहाज़ा अगर मुसीबते अज़ीम न होती तो रोना न होता, और अगर रोना न होता तो मौहब्बत व पैरवी न होती, और अगर मौहब्बतो पैरवी न होती तो इमाम हुसैन (अ.स.) की पैरवी में ज़माने के यज़ीदों से जिहाद न होता और अगर ऐसा होता, तो मुसीबते आज़म यानी इमामे ज़माना (अ.स.) की ग़ैबत बढ़ती ही चली जाती और लोग बरबादी, जुल्म और तबाही में ही फंसे रहते।

इस मरतबे में ऐसे लफ़्ज़ जैसे प्यासा, क़ैद, रोना, ग़म के बदले बहुत ज़्यादा लानत, बदला, इमामे ज़माना(अ.स.) , जंगो जिहाद के लफ़्ज़ों पर तकया करना चाहिये और अगर पहले के लफ़्ज़ों में से कोई नाम आता भी है तो वह दूसरे वाले लफ़्ज़ों तक पहुँचाने के लिए ही है दूसरे तरीक़े से यूँ कहा जाये कि मौहब्बत व एहसास को मारेफ़त तक पहुँचाने के लिए जिहाद और कोशिश की ज़रूरत होती है और इस मरतबे में अज़ादारी की जड़ और बुनियाद जंगो जिहाद है।

अज़ादारी की कमज़ोरियों और मुसीबतों से अज़ादार का जंग करना

इस मरतबे में अज़ादार एहलेबैत के आदेशानुसार इमामे हुसैन (अ.स.) के मिशन और उनकी अज़ादारी की हिफ़ाज़त करने वाला होता है इसी तरह वह अपने आपको इस बात का भी ज़िम्मेदार समझता है कि मजलिसों की झूठ, गलत रिवायतें, बेकार बातें या हराम की हद तक पहुँचने वाली चीज़ों से हिफ़ाज़त करे इसके लिए वह एक अहम ज़िम्मेदारी तलाश करता है।

सबसे पहले वह लोगों को ख़ासकर जवानों को इमाम हुसैन (अ.स.) की जंग का मक़सद और उनके लिए अज़ादारी के ढंग की जानकारी देने की तरफ़ ध्यान देता है।

असल में पाँचवे मरतबे में अज़ादार की जंगा का एक अहम हिस्सा कल्चर से मुक़ाबला करना है और इस अहम कल्चर से मुक़ाबला करने में भी एक अहम हिस्सा अज़ादारी के लिए मुसीबतों और अज़ादारी को कमज़ोर बनाने वालों से जंग करना है। सच्चा अज़ादार अच्छी तरह से अज़ादारी की मुसीबतों और उन ख़तरों को जानता है कि जो इन मुसीबतों को पैदा करते हैं वह यह भी ख़ूब जानता है कि अगर अज़ादारी एक आदत मे सिर्फ़ एक मौहब्बतो अहसास पर निर्भर हो गई और मारफ़त (उनकी अज़मत की जानकारी) सिरे से ख़त्म हो गई तो यह अज़ादारी सिर्फ जागरुक और उभारने वाली ही नही रहेगी बल्कि बेहोशी और नींद मे रखने वाली बन जाएगी।

वह कभी भी इज़ाजत नही देता कि इस तरह की मुकद्दस और अहम रसमे कुछ जाहिल व मतलब परस्त लोगों की कोशिश, ताक़त या उनके ग़लत तरीक़ो से मुसीबतो से दो चार हों जिसकी वजह से उसकी रूहानियत, अच्छा असर और नेकिया दूर हो जाय वह सारे अज़ादारो के एहतराम के साथ, हर मस्जिदो इमामबाड़े और हर उस जगह कि जहाँ अज़ादारी होती है और वह उनमें जा सकता है वहाँ वह अज़ादारी की मुसीबतों से मुक़ाबला और हक़ीक़ी अज़ादारी के लिए हिदायत और उसके तरीक़े बताता है ताकि ख़ुद भी इमामे हुसैन(अ.स.) के मक़सद को बाक़ी रखने वाला और अपनी ज़िम्मेदारी

को पूरा करने वाला बन सके और वह इस्लाम की जिन मोतबर और बुनियादी चीज़ों के साय में मारेफ़त के सबसे ऊँचे दर्जे पर पहुँचा है इसलिए अपने आपको रसूले ख़ुदा (स.अ.) के इस फ़रमान के सामने जवाबदेह समझता है कि आपने फ़रमाया।

''जब भी मेरी उम्मत में बिदअतें होने लगें तो फिर आलिम को अपने इल्म का ज़ाहिर करना वाजिब है (बिदअतों से मुक़ाबला करें) वरना उसपर ख़ुदा, फ़रिश्ते और सारे लोग लानत करेंगे।''

जब तालेबानियों ने बौद्ध की मूर्ती को तोड़ा था तो उसपर जापान और ईरान दोनों ही ने एतराज़ किया था जापानियों ने तो इस लिए एतराज़ किया था कि वह बुतों और मूर्तियों की पूजा करते हैं और उनको पवित्र मानते हैं लेकिन ईरानियों का एतराज़ सिर्फ़ इसलिए था कि मूर्तियां ऐसे कल्चर की मीरासं है कि जो ज़मीन में दब चुकी उनको बाक़ी रखना चाहिए जैसे पुराने प्याले या बर्तन या पुराने मिटट्ी के प्याले कि जिनको कला या पुरानी यादों के लिए बाक़ी रखते हैं उन्हें ख़त्म नहीं करना चाहिए।

पहले के लोग अपने घर के दरवाज़े या दुकान व बाथरूम के ऊपर घोड़े की नाल लटकाते थे और यह काम अक़ीदे में शामिल था वह भी इस बात पर ध्यान दिये बग़ैर की इस अक़ीदे को पहले से ही ग़लत ढंग से जाना गया है उसकी मन्हूस जड़ यह थी कि इमाम हुसैन(अ.स.) की शहादत के बाद उमर इब्ने साद मलऊन के हुक्म से एक गिरोह ने अपने घोड़ों के सुमों पर फ़ख़्रिया नाल लगवाए और उनसे शहीदों के पाको पाकीज़ा बदन को रौंदा। इस तरह आसानी से सीना और पीठ या जो कुछ भी सुम के नीचे आया वह पामाल हो

गया। जब यह जंग के घोड़े कूफ़ा पहुँचे तो कुछ लोगों ने उनकी नाल को चूमा और उनका बड़ा एहतराम किया और बरकत के लिए अपने घरों के दरवाज़ों पर लटका लिया।

उसके बाद कुछ बुज़ुर्गों जैसे ''अबू रैहाने बेरूनी'' ने इस बेवकूफ़ी के काम के राज़ का पर्दा फ़ाश किया और लोगो को बताया अफ़सोस कि पचास साल पहले तक यह काम होता था जो चीज़ मन्हूस और ग़लत थी उसी को बरकत और नेकी की बुनियाद समझा जाता था यहाँ तक कि आलिमों ने कोशिश करके इस बेहूदा रस्म को ख़त्म कर दिया।

इमामबाड़ों और मिमबरों की रौनक़ के साथ एहलेबैते नबी के आलिमों की वजह से इस तरह की जिहालत और बेहूदा बातें ख़त्म हो गईं वरना बेहूदा बातें और ग़लत अक़ीदे पुरानी रस्मों के नाम पर बड़ी ज़रूरी और अच्छी समझी जातीं जैसे यह अक़ीदा कि तेरह की संख्या ही मन्हूस है या छींक आ जाये तो रूक जाना कि इस एतक़ाद पर न कोई सनद है न दलील।

आज भी कुछ ग़लत रसमें इमामे हुसैन(अ.स.) की अज़ादारी में शामिल हैं और बेवजह व बग़ैर ख़ासियत के राइज हैं यह न तो अक़लमन्दी के ही काम है न ही क़ुरानों हदीस ने इनके लिए हुक्म दिया है। इमाम हुसैन (अ.स.) के ग़म में आँसू बहाना, रोना पीटना, जानबूझकर सरो सीना पीटना इन्सान की बुलन्दी और नेकी है लेकिन ढंडे व भारी फौलाद से कोई सरोकार नहीं है।

दीनी मदरसों व यूनिवर्सिटीयों के अच्छी सोच रखने वाले रहबरो और नेक सीरत लोगों के लिए ज़रूरी है कि इमामे हुसैन (अ.

स.) की अज़ादारी के लिए बेहतर और मुकम्मल रसमों को इस तरह बाक़ी रखें कि मर्द अज़ादारी के ख़र्चे संभाले औरतें ग़में हुसैन में रोऐं क्यूँकि उनका ख़र्च करना कुबूल होगा और इनका रोना तड़पना।

इस मरतबे में मजलिसे अज़ादारों को उनके पैदा होने के मक़सद और ज़िम्मेदारी को समझने की सबसे आख़री मंज़िल तक पहुँचाने का ज़रिया हैं कि जिस ज़िम्मेदारी को पूरा करना उनका मक़सद है उनमें से इमामे हुसैन (अ.स.) के ख़ून का बदला लेने वाले (इमामे ज़माना(अ.स.)) से सम्बन्ध भी एक ज़िम्मेदारी है।

इस मरतबे में अज़ादारी की रूह यह है कि इमामे ज़माना(अ. स.) की मज़लूमियत और अकेले होने की तरफ़ ध्यान दें और उनके लिए हर हर अज़ादार पर ज़िम्मेदारियां हैं उनको पूरा करें।

इस मरतबे में अज़ादार के लिए मौहब्बतो एहसासात, बदला लेने के लिए ग़ैरत के साथ उठ खड़े होने, जंग के लिए तैयार रहने और जान देने के लिए सिर्फ़ एक ज़रिया है और वह भी इमामे ज़माना (अ.स.) के साथ।

एहलेबैत के साथ एक सच्चे शिया की रूह का नाता इस तरह है कि जब अबू बसीर ने इमामे सादिक़ (अ.स.) से सवाल किया कि मैं किसी वजह के बग़ैर ही कभी दुखी कभी ख़ुश क्यूँ रहता हूँ। आपने जवाब दिया कि यह दुखी होना और ख़ुश होना असल में तो हमारी तरफ़ से ही तुम तक पहुँचता है इसलिए कि जब भी हम ख़ुश या दुखी होते हैं तुम भी ख़ुश या दुखी होते हो क्यूँकि हम और तुम ख़ुदा के नूर से ही है। पक्का शिया वह है कि जो एहलेबैत की ख़ुशी में ख़ुश और उनके दुख में दुखी रहता है क्या एक शिया के लिए इमामे

ज़माना (अ.स.) की मज़लूमियत और अकेले रहने से बड़ा कोई और दुख हो सकता है जिस तरह एहलेबैत का मुसीबतों में घिरना बड़े दुख की बात है इसी तरह इमामे ज़माना (अ.स.) की ग़ैबत भी बड़े दुख की बात हैं क्यूँकि आप एहलेबैत के ख़ून का बदला लेने वाले हैं जब हम इमामे हुसैन(अ.स.) बल्कि चौदह मासूमीन की अज़ादारी में रोते और मातम करते हैं तो फिर इमाम की ग़ैबत जो मुसीबते आज़म (सबसे बड़ी मुसीबत) है उसके लिए हमारी क्या ज़िम्मेदारी है? एक शिया का दिल एहलेबैत के ग़म से दुखी हो जाता है लेकिन हमें देखना होगा कि एहलेबैत को सबसे ज़्यादा किस चीज़ से तकलीफ़ पहुँचती है मुसीबते अज़ीम या मुसीबते आज़म?

अगर मुसीबते अज़ीम के लिए इस क़दर हमदर्दी, जमा होना, वक़्त और पेसौं का ख़र्च करना ज़रूरी है तो क्या मुसीबते आज़म को दूर करने के लिए हमदर्दी, जमा होना वक़्त और पैसों के ख़र्च करने के साथ इस तरह की बाते करना ज़रूरी नहीं हैं? वह अकेले अपने बल पर निर्भर नहीं रहेंगे बल्कि वह ख़ुदा की ताक़त, एहलेबैत के सहारे, नेक मोमेनीन को दुश्मनों और अपने ज़हूर की रूकावटों से मुक़ाबले के लिए उभारेंगे ताकि उनके ज़हूर के लिए वह हमदर्दी और एकता ज़ाहिर हो कि जिसकी सख़्त ज़रूरत है और इमाम को भी उसके न होने की बहुत ज़्यादा शिकायत है।

मजालिस व महाफ़िल में बढ़ावा

सच्चा अज़ादार ख़ूब जानता है कि अगर शिया आशूरा से सही सबक़ लेते और उसे ही अपना आइडियल बनाते तो आज इमामे ज़माना (अ.स.) अकेले और मज़लूम न रहते अफ़सोस है कि शियो ने

आशूरा को सिर्फ़ रोने और अज़ादारी करने का ज़रिया समझा और उससे कम को ही अपना आइडियल बनाया आशूर के वाक़्ये ने इन्सानी समाज़ मुसीबते आज़म के दूर करने, जुहूर और मासूमीन की हुकूमत क़ायम करने के लिये बेहतरीन सबक़ और बहुत ज़्यादा हिम्मत दी है सोगवारी और मुसीबत ही को असल समझकर जंग और कार्य को भुला देना ही इमामे ज़माना (अ.स.) के इस्लामी समाज से दूर रहने की वजह बनी कि वह परदेस व अकेलेपन में वह अज़ादार कि जिसने आशूरा से ख़ुद बेहतरीन सबक़ लिया और अपने को पांचवे मरतबे (इन्तेज़ार देखने वाले) के दरजे तक पहुँचाया वह औरो से कही ज़्यादा बेहतर मजलिसो मातमो मे रोने और उनके अच्छे असर व नतीजो को जानता है और अपने कल्चर से जिहाद करते हुए एहलेबैत के प्रोगाम ख़ास कर मजलिसे अज़ा व अज़ादारी को बढ़ावा देने की बेहद कोशिश करता है और इसी तरह की मजलिसे जिन मे रूहे हुसैनी हो उन्हे बरपा करके अज़ादारों मे मक़सदे हुसैनी को झंझोड़ता है और अज़ादार इमामे ज़माना(अ.स.) के लिये एक बहादुर सिपाही व बदला लेने वाला बनाता है ताकि वह इमाम की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत कर सके और उनके दुशमनो या जुहूर मे आने वाली रूकावटो से डरकर मुक़ाबला कर सके अज़ादार मे इस तरह की मजलिसो से बहुत ज़्यादा रूही व बदनी सुधार पैदा होता है और उसके व एहलेबैत के बीच नज़दीकी बढ़ जाती है क्यूँकि यह मजलिसें कुरानो हदीस की रौशनी मे एहलबैत की अज़मत और दीन की सही जानकारी का मरकज़ होती हैं यानि वही मज़लिसे की जिनके बारे मे इमाम हुसैन (अ.स.) ने फ़रमाया था और वह उनके इन्तेज़ार मे भी

रहते हैं अज़ादार इस मरतबे मे मजलिसे अज़ा को इमामे ज़माना (अ. स.)की मदद वाली मजलिसो मे बदल देता है इस मरतबे मे अज़ादारी का मक़सद एक साथ मिल जुलकर जुहूर मे आने वाली रूकावटो को दूर करके हुसैने ज़माना की मदद करना है जो मज़लूम और अकेले है इन मजलिसों में अगर सरो सीने को हाथो से पीटा (मातम किया) जाता है तो उससे कही ज़्यादा दुशमन के सरो मुह को पीटा जाएगा अगर रोने व अज़ादारी मे एक घन्टा ख़र्च होता है तो हुसैने ज़माना के दुशमनो से बदला लेने और उनका गला घोटने मे इससे कही ज़्यादा वक़्त ख़र्च होना चाहिये।

यह मजलिसे इमामे ज़माना (अ.स.) ही के ख़ास करम से बरपा होती हैं क्यूँकि आपने बेहद परेशानी और बे वतनी की हालत मे इन मजलिसो और ऐसे लोगो के लिए यूँ फ़रमाया है कि मैं हर मोमिन के लिए दुआ करता हूँ कि वह मेरे दादा की मुसीबत को याद करे और फिर मेरे जुहूर मे जल्दी की दुआ करे ''इन मजलिसो से इमामे हुसैन (अ.स.) उनके करबला वाले असहाब, उनके ख़ून का बदला लेने वाले (इमामे ज़माना(अ.स.)) और जनाबे फ़ातेमा बल्कि सब एहलेबैत के दिलो को ख़ुश होती है और सच्चे अज़ादारो के लिए उन सब हज़रात की दुआ का ज़रिया भी बनती हैं यह सच है कि इस तरह की मजलिसो से अज़ादार मे मौहब्बत और ग़ैरत का जोश इतना हो जाता है कि जब भी इमामे हुसैन(अ.स.) का नाम आता है तो वह अपने दुखी व उनकी मौहब्बत से भरे दिल और आँसुओ से भरी आँखों के साथ इमाम के ख़ून का बदला लेने वालो की सोच मे पड़ जाता है और इस तरह कहता है कि ''उस ख़ुदा से दुआ करता हूँ की जिसने आपको बुलन्द

मरतबा रखा और आपकी वजह से हमे भी इज़्ज़त दी कि हमे अपने ख़ून का बदला लेने वाले के साथ होना नसीब कर कि जो एहलेबैत मौहम्मद के इमाम है मंसूर हैं।

और दूसरे जुम्ले मे इमाम से इस तरह से कहता है कि ''ख़ुदा मुझे आपके ख़ून का बदला लेना आप मे से उस इमाम के साथ नसीब करे कि जो मददगार रहबर और हक़ बात ज़बान पर लाने वाले हैं जी हाँ उनकी अज़मत को जानते हुए हक़ीक़त मे रोना, ग़ैरतमंद बनाता है जलने वाला नहीं, मनमानी को ख़त्म करता है और इन्सानियत को बढ़ावा देता है हैवानियत को मिटाकर आदमीयत को जगाता है, बेहोशी को भगाकर इमामे ज़माना (अ.स.) का साथी बनाता है, इमामे ज़माना (अ.स.) का साथी और उनका इन्तेज़ार करने वाला।

रोना ज़िन्दाबाद, हुसैनियत ज़िन्दाबाद हक़ीक़त में रोने, और इन्सानियत सुधार मजलिसे ज़िन्दाबाद।